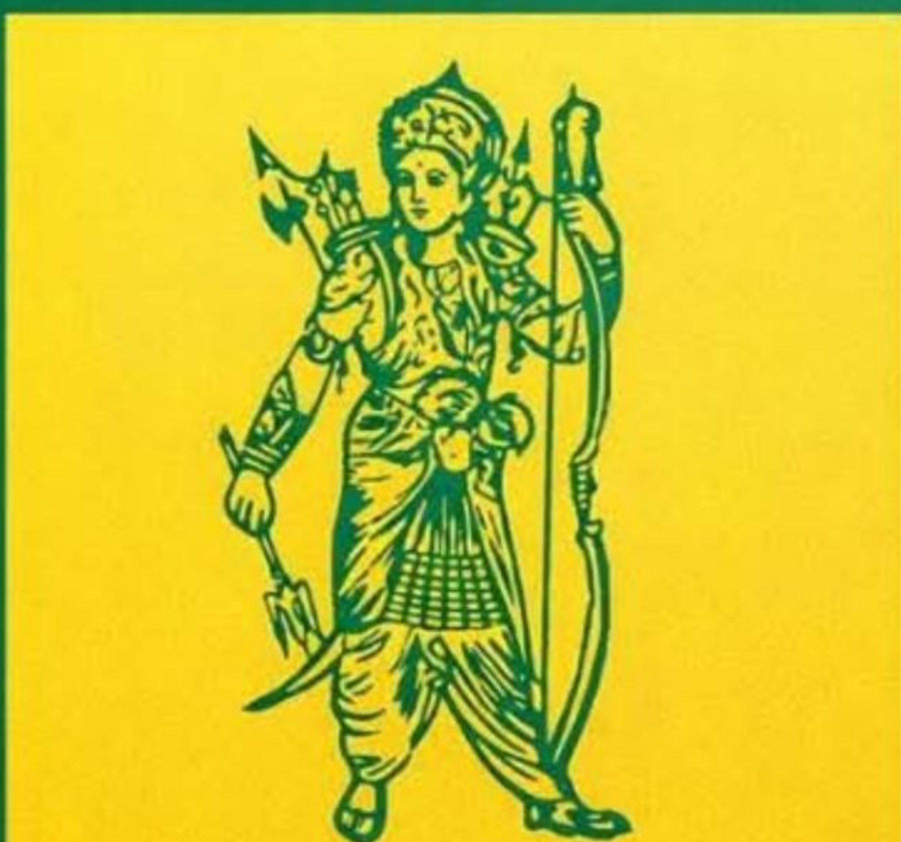
कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय का प्राचीन, मध्य एवं वर्तमान काल



जय महर्षि कश्यप जी

विषय-सूची

भारतीय कश्यप राजपूत समुदाय के प्रान्तीय प्रचलित नाम।

१. हरियाणा :

धीमर, झीमर, महार, बुड़ना आदि।

२. पंजाब :

धीमर, झीमर, झवर, जुहुर, महरा, केवट, धुरिया इत्यादि।

३. हिमाचल :

धीवर, झंवर, मेदा इत्यादि।

४. देहली प्रांत :

धीमर, धीवंर, झीमर, कहार, महार, बुड़ना, मल्हा, निषाद, तुराहे इत्यादि।

५. उत्तर प्रदेश :

धीवर, झीमर, कहार, महार, बुड़ना, मल्हा, खेवट, काँछी, कछवाहा इत्यादि।

६. राजस्थान :

धीमर, धुरिया, कहार, महार, बुड़ना, खेवट इत्यादि।

७. महाराष्ट्र :

धीमरा, धीमहार, कहार, मांछी, मछवाहा, कछप, कछवाहा, भोई, बसतर, हार, कंतरा, मांगर, कुवालीगर, स्ड़ील, सोंगर इत्यादि।

८. मध्य प्रदेश :

धीमर, खेवट, कहार, तुराहा, मांछी, मछवाहा, भोई इत्यादि।

९. गुजरात :

भोई, ब्याघर इत्यादि।

१०. बिहार :

धीमर, मल्हा, कुराटा इत्यादि।

११. असम :

धीमर, मल्हा, मांझी, वथवा, बाथम, केवट, निशाद, खलवात, महेसी, दारु, विन्द, गोरिया, बनकार, कुराटा इत्यादि ।

१२. पश्चिम बंगाल :

धीवरा, कहार, खेवट, निषाद, वथवाहा, बनाफर, मल्हा, माछू, खरैवार, तुराहा, झावा, महरा, मांझी इत्यादि ।

१३. आंध्र प्रदेश :

कश्यप, कापु, बानी, विद्यमान, विदूजन, रेडी, पाल, कुराचा, जालारी, विस्था आदि ।

१४. कर्नाटक :

कहार, मेदा, गोला, गंगा आदि ।

१५. उड़ीसा :

कोट, खातिया, मछवाये, महेशी, गिरी, गरया, पाली इत्यादि ।

१६. केरला :

विदूकांत, कोदन्वी, अलवार, चावल, कारना, विलान, बलोथवान इत्यादि ।

१७. तामिल नाडू :

अग्नी कोल, क्षत्रिया, पाली, वर्था, सुर इत्यादि ।

१८. त्रिपुरा :

कहार, विन्द, बावरी इत्यादि ।

१९. मणिपुर :

गंगा, कोल, कहार, प्रीवार आदि ।

अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा

जब पंजाब के जलियांवाला बाग में हुए गोलीकांड के विरुद्ध जनता ने रोष प्रकट करने के लिए जलसे जुलूस एवं हड़तालों का सिलसिला जारी किया तब कश्यपों (झीमरों आदि) ने भी सभी सरकारी कार्यालयों, थाने, तहसीलों में पानी की हड़ताल की थी। इस रंजिश में इन लोगों को परेशान करने के लिए इनके विरुद्ध तरह-तरह के मुकदमे, गिरफ्तारियां, मारपीट के अलावा सम्पूर्ण जाति को शिरकी बन्द घोषित करने की संभावना बढ़ी। अंग्रेजों को इस प्रकार की घटिया सलाह देने में कई एक प्रांतीय सरकार समर्थक सर सलाहकारों का हाथ था। उधर महिलाओं से बद्सलूकी, बेगार तथा हर घर गली मोहल्ले में फेरी के कामों से सामाजिक तौहीन भी एक जातीय समस्या थी। इन सब जातीय समस्याओं का समाधान कैसे हो, इस बात को लेकर चन्द जातिय बुद्धिजीवि लोगों की एक विचार गोष्ठी अर्थात मीटिंग दिनांक २१ अक्तूबर सन् १९२३ को कसबा नहटोर जिला बिजनौर (उ० प्र०) में हुई। क्योंकि उन दिनों पंजाब में धारा १४४ के तहत पांच आदमी भी एकत्रित होना कानूनी जुर्म था।

इस विचार गोष्ठी में एक जातीय संगठन (सभा) बनाने का निर्णय लिया गया। जिसके द्वारा सभी जातीय समस्याओं के समाधान हेतु संघर्ष किया जा सके। फैसला हुआ कि इस जातीय संगठन (सभा) एवं समुदाय के नाम का फैसला एक महासम्मेलन से लिया जाए। ताकि सभी लोग अपने विचार प्रकट कर सकें। जिसके लिए निश्चित हुआ कि यह महासम्मेलन दिनांक १३,१४,१५ नवम्बर सन् १९२३ को नज़ीबाबाद(उप्र) में होगा। यह सम्मेलन निश्चित तिथि एवं समयानुसार धूम-धाम से हुआ। इस महासम्मेलन में अन्य जातीय समस्याओं के साथ-सा सभा के नाम की चर्चा अधिक रही। कुछ लोगों का सुझाव था कि सभा का नाम राजपूत सभा रखा जाए और हमें अपने नाम के साथ अन्य राजपूतों की भांति ठाकुर शब्द लगाना चाहिए। इस प्रकार राजपूत नाम के विषय में बोलते हुए कुछ वक्ताओं नें अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि अकेला राजपूत नाम रखने या कहने से हमारा सामाजिक उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। इसलिए राजपूत नाम के साथ किसी प्राचीन प्रवर्तक का नाम जोडा जाए ताकि हमारा प्राचीन राजवंशीय होना प्रतीत होता रहे। इसके बाद पंजाब (जो कि उन दिनों उत्तर प्रदेश से हिमाचल प्रदेश, वतर्मान पाकिस्तान, हरियाणा सहित दिल्ली तक महाप्रदेश था।) के लोगों ने सुझाव रखा कि क्यों न इस सभा का नाम मेहरा या महार

रखा जाए, जो कि क्षत्रि राजपूत परिचायक नाम है। परन्तु इस पर भी महारों के सिवाय कुड़ना इत्यादि अन्य शाखाओं के लोग सहमत नहीं हुए। तब यह प्रस्ताव अगली सभा (मीटिंग), सम्मेलन में प्रस्तुत करने के लिए छोड़ दिया, ताकि तब तक कोई नया नाम प्रमाण सहित प्राप्त हो सके। यह अगला सम्मेलन दिनांक २९,३०,३१ दिसम्बर १९२३ को सांवल दास धर्मशाला बिजनौर में हुआ था। जिसमें यही सभा के नाम की चर्चा होते-होते एक नया सुझाव प्राचीन क्षत्रि राजपूतों के मूल प्रवर्तक कश्यप जी का नाम जो लिया गया, तब चारों ओर से हर्ष उल्लास, जय-जयकार होने लगी और कश्यप राजपूत नाम का प्रस्ताव पास हुआ, तथा सभाका नाम अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा रखा गया। जिसका मुख्य कार्यालय पंजाब की राजधानी लाहौर स्थापित किया गया। इस सम्मेलन में भाग लेने आए पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के लोग तो सक्रिय थे ही तथा जम्मू, कश्मीर, राजस्थान, देहली के साथ-साथ दक्षिण भारत के अनेक लोग भी उपस्थित थे। जैसे दुर्गादत्त कुशल, श्रीमती मिश्री देवी, मलखान सिंह, लखनपाल, उत्तर प्रदेश, श्री नरबहादुर, झांगर सिंह खेवट, श्री सज्जन सिंह कुड़ना सोनीपत, श्री लख्मेराम टंडन करनाल, श्रीमान रईस अमरनाथ चौहान कोहमरी तथा बाबू मूलचंद जंजवा अमृतसरी बाबू रत्न सिंह एडवोकेट, भगत् किशन सिंह राठौर, श्री विशम्भर नाथ चालोकिया लाहौरी एवं महाशय गैंदाराम व सरदार कनासिंह देहलवी आदि नेताओं ने बढ़-चढ़ कर काम किया। इन जातीय समाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा अनेक जातीय राजवंश प्रमाण प्रस्तुत करने तथा सरकार से पूर्ण जद्दोजहद के बाद दिनांक १ अगस्त सन् १९२७ को शिमला में भारत सरकार से अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा (संगठन) का पंजीकरण हुआ था। क्योंकि उन दिनों भारत सरकार के सभी बड़े-बड़े कार्यलय गरमी की वजह से शिमला में कार्य किया करते थे। तद्पश्चात सभा का प्रचार प्रसार सम्पूर्ण भारत में होता गया। अनेक छुके छिपे सर्व सम्पन्न सामाजिक बुद्धिजीवी कार्यकर्ता उभर कर सामने आने लगे। अनेक प्रान्तों में इसकी शाखाओं का संचालन हु तथा अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकलने लगीं जैसे :

अखलाकी गजट, महरा राजपूत	अमृतसर
राजपूत प्रकाश	लाहौर
अमर पत्र	कानपुर
महरा सुधार	लाहौर
कश्यप पत्र	मेरठ
कश्यप राजपूत	गुजरांवाला
सेवक समाचार	लखनऊ
कश्यप संदेश	बम्बई

वीर बंधु	देहली
नया संदेश	नई दिल्ली
कर्ण धार	भोपाल
कश्यप निर्माण	इलाहाबाद
कश्यप दूत	इलाहाबाद

इत्यादि सम्पादित हुए, जिनमें से कुछ बन्द तथा कुछ चालू हैं। इस संगठन से समाजिक उत्थान तो हुआ ही एवं समाज में राजनैतिकं चेतना भी आई।

सन् १९४७ तक सभा का कार्यालय लाहौर रहा उसके बाद देहली स्थापित हुआ। क्योंकि पाकिस्तान के लिए पंजाब का बंटवारा होने से वहां के लोग बिखर गए कोई कहीं गया व कोई कही पलायन कर गया। तब लाहौर से बाबू विशम्बर नाथ चालोकिया, श्री रत्नसिंह एड्वोकेट आदि महानुभाव देहली आ गए। तब उन्होंने यहां के कार्यकर्ताओं की मीटिंग में बताया कि अब सभा का कार्यालय देहली रहेगा। इस बात की जानकारी जनता को देने के लिए एक सम्मेलन बुलाया जाए, और इस सभा का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए आप लोग आगे आने का कष्ट करें। यह सम्मेलन दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने फव्वारे की ओर कम्पनी बाग में हुआ था, जिसमें बाबू रत्न सिंह व श्री विशम्बर नाथ जी संरक्षक तथा श्री गेंदाराम, श्री पूर्ण सिंह मांडल, सरदार बन्तासिंह, धनीराम कटारिया आदि संचालक पदाधिकारी नियुक्त किए गए और कार्यालय का कार्यभार श्री लज्जेराम टंडन को सौंपा गया। इस सभा ने पंजीकृत होने के बाद जो सामाजिक उत्थान हेतु कार्य किए उनमें बहुनामांकन जातीय एकता, समाज के लोगों का शिक्षा में रूझान, महिलाओं से घर-घर फेरी के काम कराए जाने की रोक थाम तथा राजनैतिक चेतना भी सभा का मुख्य कार्य था। राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप सन् १९५२ में जब भारतीय संविधान के तहत सर्वप्रथम देशव्यापी चुनाव हुए तब इस सभा ने भी पंजाब से जिला रोहतक के गोहाना विधान सभा क्षेत्र से मुझ नाचीज़ व्यक्ति के नाम से चुनाव लड़ा था। सभा एवं समाज की ओर से मैं उम्मीदवार तो रहा किन्तु चुनाव का सब काम समाज के लोगों ने किया। चुनाव बारे आमदनी खर्च लेन देन के लिए बकायदा कमेटी नियुक्त थी। इस कमेटी के सर्व श्री राम स्वरूप मकड़ोली, डा. नेकी राम व हरिकिशन रोहतकवासी तथा चौ. सिबाराम व श्री नन्दूराम गोहाना वाले कर्मठ कार्यकारी सदस्य थे, जिनमें खज़ानची का काम चौ. सिबाराम के जिम्मे था। इस चुनाव में समाज के लोगों ने तन मन धन से पूर्ण सहयोग दिया। इस प्रकार समाज का संगठन और इनकी चुनावी कार्य शैली को देख वह लोग भी चकित रह गए जो इस समाज को चुनाव के काबिल नहीं कहते थे।

इसी महासभा के प्रचार प्रभाव से देश में अनेक सभा एवं समितियां तथा गणमान्य व्यक्ति उभर कर सामने आए जिनसे समाज का अत्यधिक उत्थान हुआ। जैसे श्री जयपाल सिंह कश्यप एम.पी. जिसने कश्यप समुदाय का नाम विदेशों तक विख्यात किया। श्री मनोहर लाल एम.पी. श्री सीताराम विधायक(उ.प्र.), श्री दीनानाथ एड्वोकेट हरियाणा चंडीगढ़ जो कि सन् १९७८ में पंजीकृत हुई। हरियाणा कशयप राजपूत सभा के लगभग १२ वर्ष प्रधान रहे। जिन्होंने इस सभा एवं समाज का भविष्य उज्जवल करने के लिए बढ़-चढ़ कर काम किया। कुरुक्षेत्र कश्यप राजपूत धर्मशाला की स्थापना तथा निर्माण कार्य का सर्वाधिक श्रेय इन्ही को जाता है। इन्हीं के कार्यकाल में चौ. पीरुराम कश्यप हरियाणा विधान सभा के लिए विधायक तथा जिसने अपनी स्वच्छ राजनैतिक छवि के कारण विधान सभा का संसदीय सचिव उच्च पद प्राप्त किया। उधर समाज के लोगों की 'ओर से सभा का प्रधान पद भी इन्हीं को दिया गया। परन्तु इनके पास समय का अभाव होने के कारण वे सभा के कार्यों में इतना अधिक समय नहीं दे पाए जितना लोग आशा करते थे। मास्टर रणसिंह जी कश्यप भैंसवाल कलां (सोनीपत) महामंत्री हरियाणा कश्यप राजपूत सभा जोकि इस सभा के गठन से पूर्व ही समाज सुधार के कार्यों में भाग लेने लगे थे। सभा एवं समाज के कार्यों में जितना समय और काम इन्होंने दिया शायद ही किसी अन्य कार्यकर्त्ता ने दिया होगा। इनकी भाग-दौड़, जोड़-तोड़, जन सम्पर्क का प्रमाण गोहाने में बाबा कालू का मंदिर, धर्मशाला का निर्माण है। इन्हीं के समकालीन चौ. श्री चन्द गोहाना वाले भी समाज के नाम से सामाजिक एवं राजनैतिक जद्दो-जहद् करते-करते स्वर्ग सिधार गए। इसी प्रकार चौ. रत्न सिंह मतोरिया रोहतक वाले का नाम भी सर्वसम्पन्न समाज सेवी महानुभावों में आता है। जिन्होंने समाज के सामूहिक शिक्षा संस्थान मंदिर धर्मशालाओं में दिल खोल कर आर्थिक सहायता की और करते जा रहे हैं।

इसी प्रकार अन्य प्रान्तों में भी अनेक सभा एवं समितियां, गणमान्य व्यक्ति अपने-अपने स्थानीय हालात अनुसार बढ़-चढ़ कर कार्य कर रहे हैं। यह सब अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा की देन है। जिसके वर्तमान प्रधान श्री धनीराम कटारिया दिल्ली-६ हैं। एवं महामंत्री पद पर महामान्य मास्टर करतार सिंह चौहान नया बांस दिल्ली निवासी कार्यरत हैं। जो कि समाज के सामूहिक तथा व्यक्तिगत कार्यों में पूर्ण सहयोग देते हैं। इनकी निःस्वार्थ समाजिक सेवाओं के फलस्वरूप इनका तथा इस सभा का नाम उज्जवल है।

कश्यप समुदाय के महापूज्य प्रवर्तक एवं महान् आत्माऐं

प्राचीन सांस्कृतिक धर्म ग्रंथों के अनुसार सृष्टि के आदि प्रवर्तक का नाम ब्रह्मा कहा जाता है, जिनके द्वारा उत्पन्न हुए मरिचि दक्ष अत्रि, अंगिरा भृगु वशिष्ठ पुल्ह, पुलसत्य इत्यादि प्रजापतियों द्वारा इस संसार का प्रारम्भिक विस्तार जब होने लगा तब दक्ष प्रजापति ने अपनी सभी कन्याएं अन्य प्रजापतियों को दे दी थी। इन सब में सब से अधिक तेरह कन्या मरिचि के पुत्र कश्यप को ब्याही थी। जिन से चर, अचर जी- जन्तु देवी, देवता, दैत्य, दानव, मनु आदि की उत्पत्ति के साथ-साथ यह सृष्टि भरपुर हुई। इसलिए प्राचीन सत्यपथ ब्राह्मणा में लिखा है कि "तस्मात् कश्यप श्मां प्रजा" महऋषि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारवें समुलाश में लिखा है कि

"कश्यप कस्मात् पष्यको भवतिति"

अर्थात सृष्टि का कर्ता परमेश्वर है जिसका नाम कश्यप है। जो सब जीव, जन्तु, चर, अचर पशु, पक्षी संसार को यथावत् देखता है। वही पष्यक् एवं कश्यप कहा जाता है। इसीलिए आप और हम ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शुद्र कुछ भी कहते रहें। अपितु हम सब कश्यप गोत्रिय पौत्र, पौत्री, भाई बहिन हैं। जिसकी सत्यता का प्रमाण हमारे सभी प्रचीन धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। यहाँ तक ही नहीं किसी महापुरुष ने कहा है कि यदि किसी कारणवश अपना गोत्र याद नहीं रहता तो उसका कश्यप गोत्र कहा जा सकता है।

कच्छप अवतार :

अर्थात् जल जन्तु तथा पानी में काम करने वाले को कच्छप (कश्यप) अवतार कहा गया है। जिसका वृतान्त पुराणों आदि में समुद्र मंथन प्रकरण में हुआ है।

कश्यप राज्य :

कश्यप जी स्वयं बुद्धिमान ऋषि तो थे ही परन्तु राजशिरोमणि सम्राट क्षेत्रपति (क्षत्रिय) अर्थात् क्षत्रिय नाम के निर्माता भी कहे जाते हैं, जिनकी अधिकार सीमा में भारत ही नहीं बल्कि सृष्टि के अधिकांश द्वीप तथा कश्यप सागर का नाम विख्यात हुआ है। जिसे आजकल कैस्पियन सी कहा जाता है। यहीं पर समुद्र मंथन देवासुर संग्राम हुआ प्रतीत होता है। जहाँ

महर्षि कण्व

इनका जन्म चन्द्रवंशीय क्षत्रिय कुल में हुआ और जन्म स्थान प्रयागराज। जिनके पिता का नाम अप्रतीर्थ जिन्होंने क्षत्रिय कुल से ब्राह्म ऋषि पद पाया। पुरुर्वा कुलीन महाराज दुष्यंत कण्व का भतीजा था। इन्हीं के आश्रम पर दुष्यंत शकुन्तला का विवाह सम्पन्न हुआ था। कण्व का पुत्र मेघतिथि जिसके वंशधर कण्वायण ब्राह्मण हुए।

निषादराज

इनके बारे में रामायण में लिखा है कि जब महाराज रामचन्द्र जी को चौदह वर्ष का वनवास मिला और वे लक्ष्मण सीता जी सहित वनवास को जा रहे थे तब उनका निषादों से सम्पर्क हुआ था। जहाँ निषादों के राजा निषादराज ने इन्हें दरिया पार कराया था। तब राम ने उनकी सेवा का बदला चुकाने के लिए अगूँठी पेश की थी। उसे निषादराज ने लौटाते हुए कहा था कि हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम, मुझे कुछ नहीं चाहिए। जहाँ तक हम आपको पार करा सकते थे करा दिया। जब आपका समय अनुकूल हो तब आप मुझे नहीं मेरे समाज को पार करा देना, यही मेरे लिए काफी है।

भाई हिम्मत सिंह

जिस समय सिक्खों के दसवें गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज हिन्दू धर्म की आन-बान और मर्यादा के लिए मुसलमान मुगल आक्रमणकारियों से लड़ रहे थे तब सन् १७५६ ई. की बैसाखी के दिन आनन्दपुर साहब में पाँच प्यारों का बलिदान मांगा था तब इस अमर शहीद भाई हिम्मत सिंह ने अपना शीश भेंट किया था और ये पाँच प्यारों में सुशोभित हुए थे। इन्होंने हिन्दू धर्म के लिए लड़ते-लड़ते चकमोर साहब की रणभूमि में मुगल फौज के जरनैल सदीकखान को मार कर स्वयं शहीद हुए थे।

मोती मेहरा

जिस समय गुरु गोबिन्द सिंह के पुत्रों को दीवार में चिनवाने के लिए बन्दी बनाया था उन बच्चों को जेल में चोरी-चोरी दूध आदि पिलाने के आरोप में कश्यप समुदाय के मोती मेहरा नामक व्यक्ति को तत्कालीन शासकों ने कठोरत्तम दण्ड दिया था। सारांश यह है कि कश्यप समुदाय [illegible] हैं ही तथा प्रत्येक युग में देश, धर्म, सांस्कृतिक कार्यों में भी इनका पूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान युगी स्वतंत्रता संग्राम में समाज के जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया जिनमें अत्यधिक गुजर चुके तथा जीवित हैं। हम उनका हार्दिक [redacted] करते हैं।

लक्ष्मी इत्यादि चौदह रत्न प्राप्त हुए थे। कल्हणा कृत राजतिरगंनी अनुसार सप्तम् मनुवांतर के समय सतीसर ताल में जलवैभव असुर का वध करके कश्मीर की स्थापना कश्यपों ने की थी। कश्मीर को उन्नत व्यवस्था में लाने का श्रेय कश्यपों को ही मिलता है। कश्मीर में कश्यपागार (गुफा) आज भी कश्यपों की कीर्ति कथा कह रही है।

कश्यप पुत्र सूर्य के मनु महाराज द्वारा वर्ण व्यवस्था (ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र) प्रचलित हुई थी। इसलिए कहा जाता है कि क्षत्रिय (राजपूत) वर्ण के मूल प्रवर्तक महऋषि कश्यप थे। भारत की हर सभ्यता संस्कृति के दौर में कश्यपों का नाम अवश्य ही आता रहा है।

दैत्यराज हरिण्य कश्यप :

हरिण्य कश्यप के पुत्र प्रहलाद भगत हुए। हरिण्य कश्यप की बहन का नाम होलिका था। होली का त्यौहार उसी के नाम पर मनाया जाता है। इसी कुल में दानवीर महाराज बली हुए जिन्होंने इन्द्र देवता को पराजित करके बन्दी बनाया था।

महात्मा बुद्ध एवं कश्यप :

महात्मा बुद्ध के गुरु कश्यप पुत्र अलार तथा बुद्ध के प्रधान शिष्य महाकश्यप थे जिन्होंने दीर्घकालीन हिन्दू धर्म के कट्टर पंथियों द्वारा लगाए गए धार्मिक कठोर बंधनों में जकड़ी हुई भारतीय जनता को स्वतन्त् कराने का कार्यक्रम किया था। जिससे दलित दास दरिद्र घोषित की हुई जातियों को भी अपने-अपने स्वतन्त्र क्षेत्रीय राज्य स्थापित करने तथा घोर दरिद्र दासता से मुक्त होने का रास्ता मिला और अनेक छोटी-बड़ी जातिय नामांकन राज्यों की स्थापना होने लगी, जैसे चन्द्र गुप्त मौर्य, अशोक, नन्द, हर्ष, विक्रमादित्य इत्यादि तदोपरान्त अनेक राज्यों रजवाड़ों के संगठन से राजस्थान तथा क्षत्रियों की जगह राजपूत राजपुत्र समुदाय का नाम प्रचलित हुआ। जिसका उल्लेख "हिस्टरी ऑफ इंडिया" के राजपूत उदय प्रकरण में हुआ है। इस प्रकार कहा जाता है कि कश्यप सर्वव्यापी चतुवर्णीय, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य तथा आदि छोटी-बड़ी जातियों का कर्णधार है।

सिद्ध श्री बाबा कालू जी महाराज



प्रिय पाठको, बाबा कालू का मौखिक वृतांत अस्मरणीय काल से कश्यप समुदाय में ही नहीं बल्कि दूसरे लोगों में भी प्रचलित है। कहते हैं कि बाबा कालू नारद के गुरु थे। वे जंगल में रहते तथा प्रतिदिन किसी सरोवर में मछली, फल-फूल आदि तोड़ कर लाया करते। कहते हैं जब ब्रह्मा आदि देवताओं ने नारद को बेगुरा अस्वच्छ कहकर अपने यहां से निकल जाने को कहा तब लज्जित हुए नारद ने रोते-राते देवताओं से पूछा कि हे प्रम पूज्य महान आत्माओं, मुझे ये बताइए कि मैं अब कहां जाऊं और किसे गुरु बनाऊं ताकि मैं आपके निकट रह सकूं। तब उन्होंने बताया कि अब तेरा जंगल में जाने के सिवाय कोई ठिकाना नहीं है। वहां प्रातःकाल सर्वप्रथम जो व्यक्ति मिले उसी को गुरु बना लेना, उसी से तेरा कल्याण होगा। उसी के बताए रास्ते से हमारे निकट आ सकते हो अन्यथा नहीं। इतना सुन नारद वहां से चल पड़ा। भटकते-भटकते कई दिन के पश्चात् प्रातः कालू का मिलन हुआ। तब नारद ने चरण स्पर्श कर कालू जी से वंदना की कि हे महाराज मैं आपको गुरु बनाना चाहता हूं। आप मुझे शिषय कह आशीर्वाद देने की कृपा करें। इतनी बात सुन कालू ने नारद को पुचकारते हुए कहा कि पुत्र घाबराने की आवश्यकता नहीं। शांतिपूर्वक अपना परिचय दो। आपका इस उम्र में इस तरह जंगल में भटकने का क्या कारण है ? तब नारद ने रोते हुए बताया कि मैं ब्रह्मा आदि देवताओं की दासी का पुत्र हूं। जब तक मेरी मां जीवित रही तब तक मुझे किसी ने बेगुरा अस्वच्छ नहीं कहा परन्तु अब मेरी मां का निधन होने के पश्चात उन देवताओं ने मुझे अपने यहां से निकाल दिया। इसलिए मुझे यहां आने और गुरु बनाने की आवश्यकता पड़ी। यह सुन कालू ने कहा कि यदि मुझे गुरु मानने से तेरा कल्याण होता है तो जा कह दे कि मुझे मेरा गुरु मिल गया है। जब नारद लौट कर गया तो देवताओं ने पूछा कि तुझे गुरु मिला ? तब नारद ने जवाब दिया कि मिला तो परन्तु ना के बराबर। ये सुनकर देवता बोले कि जा निकल जा यहाँ से। तूने गुरु का अपमान किया है। अब तू लख चौरासी योनियाँ भोग और पुनः जन्म ले तब गुरु के बताए रास्ते से हमारे निकट आ सकता है अन्यथा नहीं। इतना सुन नारद वहीं लौट गया और कालू जी से क्षमा मांगते हुए सब हाल बताया। कालू जी ने फिर उसे नादान समझ कर क्षमा किया और लख चौरासी योनियाँ भोगने के लिए योगाभ्यास, ध्यान और धारणा के साथ समाधि में शरीर का त्याग तथ पुनः जीवित होने की शिक्षा दी और कहा कि जा अब तू लख चौरासी बार नहीं कई लख चौरासी योनियों में जाके पुनः जीवित हो सकता है। और उनसे पूछते जाना, वह जिस योनि में कहें जाकर लौटते रहना। तब नारद ने ऐसा ही किया। इस प्रकार कालू द्वारा नारद को बताई विधि का देवताओं पर महाप्रभाव पड़ा और कहने लगे, हे नारद आपका गुरु कोई जन साधारण प्रतीत नहीं होता। किसी दैविक शक्ति का प्रतीक है। लोग कहते हैं कि उनमें

पाँच पीरों अर्थात् देवताओं की करामात थी। वह गंगा, जमुना, सरस्वती, शिव और परमपिता भगवान कश्यप की आराधना करते थे। इसके अतिरिक्त कहते हैं कि एक दिन जब सरोवर से वह फल-फूल तोड़ रहे थे तब क्षमात् किसी राजा की सवारी उधर आ निकली और घोड़ों की घुड़दौड़ सुन कालू जी घबरा गए। ऐसा न हो कि ये मुझे यहां से फलफूल तोड़ने का दोषी समझ दण्ड देने आए हों। इस प्रकार भयभीत हुए कालू जी भीगे तन भभूत रमा साधुओं की भांति दमघोट समाधि लगाकर बैठ गए। जब राजा निकट आए तब उन्होंने देखा कि ये तो कोई संत महात्मा समाधि लगाए बैठा है। तब राजा ने घोड़े से उतर कालू जी को चरणस्पर्श नमस्कार किया परन्तु भयभीत कालू जी ने आँख तक न झपकीं। इसी प्रकार राजा के सिपहसालार साथी भी चरण छूते चले गए। तत्पश्चात कालू जी को आत्मज्ञान हुआ कि भक्ति में ही अटल शक्ति है। और कहा,

"बाणा बड़ा दयाल का तिलक छाप और माल।
यम डर पै कालू कहै भय मानै भोपाल।।"

इस प्रकार उन्होंने अटूट भक्ति की और जगत विखयात् संत हुए. कहते हैं कि गुड़ खांडसारी और समुद्रपार विदेशों में जाने के लिए सर्वप्रथम नांव का प्रचलन उन्होंने किया, इस प्रकार कालू जी भगत ही नहीं वैज्ञानिक भी थे। इनके अनेक शिष्य और कई जगह पूजा स्थल एवं मुख्य स्थान होने की संभावना व्यक्त करते हैं जैसे प्रयागराज, ऋषिकेस, हरिद्वार, कुल्लू, कश्मीर इत्यादि।

इस प्रकार इस वृतांत को सुन आज हमारे ही कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि इतना कुछ होते हुए भी ऐसे महापुरुष का जिक्र पौराणिक व आधुनिक ग्रन्थों में क्यों नहीं ?

इसका उत्तर यह है कि बहुत पुरानी बात होने से हमारे लोगों में शिक्षा का अभाव व दरिद्रता के कारण इनका वास्तविक नाम भूल उपभ्रंश नाम कालू कहने लगे हों या इनका घरेलू नाम कालू हो और संन्यास लेने के बाद कुछ और नाम रखा गया हो। जैसा कि पुरानी प्रथा प्रचलित है कि जब कोई व्यक्ति घरबार छोड़ सन्यास लेता है तब उसके गुरुजन उसका नाम बदलते हैं। इस प्रकार के उदाहरण बहुत हैं। इसलिए हम भी यथासंभव अधय्यन तथा पूछताछ के बाद जो निपकर्ष निकाल सके वो ये हैं कि सम्भवत् लोग कण्व को ही कालू कहते हैं। जिनका वृतांत इनसे कुछ ना कुछ मिलता है तथा इनका पैतृक सम्बन्ध और वंशावली भी इस समुदाय के लोगों से मिलती है। इसलिए कण्व वृंतात भी इसी पुस्तक में आगे दिया है। निम्न प्रकार किसी ने सत्य कहा है –

जिन ढूंढा उन पाइया गहरे पानी पैठ।
मैं बवुरा बुढ़न डरा रहा किनारे बैठ।।

धींवर एवं झीमर जातिगत नामांकण अन्तर तथा इनका मूल स्थान

बुजुर्गों के कथनानुसार जब परम् पूज्य बाबा कालू जी महाराज ने नारद को गुरु ज्ञान दिया था और उसे लख चौरासी योनियां भोग ब्रम्ह पद प्राप्त करने की विधि बताई थी। तब नारद की यह करतूत देख सभी देवता चकित रह गये और नारद को अपनाना पड़ा, अन्यथा उसे कोई निकट बैठने नहीं देता था। नारद द्वारा जब उनके गुरु का नाम सुना तब देवताओं ने उनकी सूझ-बूझ और अकलमन्दी के आधार पर कालू जी की धींवर (अत्यन्त बुद्धिमान) कहके सराहना की और उनको कालू की जगह कण्व नामांकण ऋषि पद दिया था। इस प्रकार धींवर नाम प्रचलित हुआ बताते है। परन्तु आधुनिक विचारधारा के अध्ययन कर्त्ताओं का यह अनुमान सत्य प्रतीत होता है कि प्राचीन चन्द्र वंशीय महाराजा के नाम से बिगड़ते-बिगड़ते झीमर जातिगत उपनाम प्रचलित हुआ।

हस्थनापुर व अजयमीढ़ का ज़िक्र प्राचीन राजा, महाराजाओं के वृतान्त में हो चुका। अजय मीढ़ का जन्म स्थान हस्थनापुर था तथा जितनी लम्बी वंश बैल अजय मीढ़ की चली इतनी किसी अन्य क्षत्री वंश की नहीं चल पाई, कहते हैं कभी सारा उत्तर भारत इनकी छत्र-छाया में रहा है। प्राचीन काल से लेकर महाभारत के बाद भी राजपूतों तक किसी न किसी राजवंश के नाम से उभर कर सामने आते रहे हैं। जिनके शाखा-कुल गौत्रों आदि का कोई अनुमान नहीं इसलिये कह सकते हैं कि हस्थनापुर के मूल अधिकारी झींवर थे। लगता है इस कारण देश के अन्य भागों से उत्तर प्रदेश, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और दिल्ली के आस-पास अब भी इनकी आबादी अधिक है। इनके गुड़-खांडसारी, फल-फ्रूट, सब्जी उत्पादन, नाव संचालन, टोकरे आदि बनाने के कार्यों को देख इन्हीं जैसे पिछड़े हुए अन्य देशी, विदेशी, क्षत्री, वैश्य, ब्राम्हण आदि भी इनमें मिलते रहे। तथा यह लोग भी दूसरी कार्यरूपी जातियों में जाते रहे। इसीलिये एक-एक जाति के गौत्र कई कई जातियों में पाये जाते है। सनैः-सनैः सभी जातियों में ऊंच-नीच अलगाव वादी भावनाओं के फलस्वरूप उप जातियां बनने लगी, जैसे हम अपने समुदाय में कहार, महार, बाथम, बथवाहा, बुड़ना, मल्लाह, निषाद आदि उपजातियां देखते हैं।

समय-समय पर महापुरुषों, महान आत्माओं ने इस अलगाववादी जातिवाद को खत्म करके पुनः वर्ण व्यवस्था की भांति सार्वजनिक संगठन एवं संघ बनाने का प्रयत्न किया था। जैसे महा ऋषि कण्व, महाबीर भगवान, महात्मा बुद्ध इत्यादि-इत्यादि का नाम लिया जाता है।

आज के दौर में जिस प्रकार झींवर, धींवर आदि समुदाय संगठित करने का प्रयत्न जारी है इसी प्रकार पहले भी महापुरुषों द्वारा कश्यप नाम से इन्हें संगठित करने का प्रयत्न किया प्रतीत होता है। इस विषय में कहते हैं कि किसी समय महाऋषि कण्व मिश्र देश गये थे जहां बहुत से प्राचीन क्षत्री, वैश्य क्रिया विहीन हुए शूद्रों से भी निम्न मलेच्छ आदि हुए बैठे थे। वहां उन्होंने भारतीय प्राचीन धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जिसके फलस्वरूप उनके साथ दस सहंस्त्र शिष्य भारतीय शिक्षा प्राप्त करने भारत आये थे और वह धींवर, झींवर आदि भारतीय जातियों में मिलके कश्यप वंशी काश्यपूत कहल्लाये थे। जिसका कुछ वृतान्त भविष्य पुराण (भाग एक) में मिलता है, इस विषय का किसी महानुभाव द्वारा भेजा गया श्लोक :

कश्यप, कण्व विप्र ऋषि मिश्र देश : गतो पुरा।
कठं कुरुवन्तु कारुका झींवर बाढ़ी तक्षका।।
दशः साहन्स्त्र आन दित्या च भारतीय भाषा शिक्षयेन।
धींवरे मेल दित्या च तस्मात कश्यप स्मृतयान।।

राजपूतों का उदय और उनकी शाखा कुल जातियाँ

इतिहासकारों के अनुसार राजपूत युग ६५० ई. से आरम्भ होकर १२वीं शताब्दी तक रहा है। किसी एक जाति विशेष वर्ग या वंश का नाम राजपूत नहीं है अर्थात् अनेक राजवंश तथा जातियों का समुह सूचक नाम राजपूत है। राजा का पुत्र राजपूत कहा जाता है। कर्नल जेम्स टाड द्वारा लिखित राजस्थान इतिहास में राजपूतों की छत्तीस जातियाँ कंहीं हैं। जोइस प्रकार हैं- गहलोत,राठौर,यादव,कश्यंप,कछवाहा,पुवार,प्रभार,प्रतिहार,परिहार,कतिये,बल, चालोक्य, चौहान, शोर, तक्षक, जित, जेतवा, झाला, सेंगर, हुण, गोहिल, दाबी, गर, गौर, दाहिर, दर, दोदा, सिलार, वाइस, बेस, घरोवाल, सिकरवाल, देहिया, जोहेया, माहिर, राजपाली, अग्निकुल आदि नामांकन जातियाँ तथा इनकी अनेक शाखाओं के लोग राजपूतों की गणना में आते हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्न है-

गहलोत, ग्रहलोट, गहलावत

ये लोग अपने को सूर्दवंशी बताते हैं। अपनी पुरानी राजधानी अयोध्या तथा दूसरी विराट बताई है, जहाँ पांडवों ने अज्ञातवास किया था। राजपूतों में इनकी शाखा बालक राय के नाम से प्रचलित हुई जिसने अपनी राजधानी अनहिवाड़ा बनाई। इन्हीं की शाखाएँ सिसोधिया, संधाया, संधानिया, सोंधिया, सींधिया, अनहल, अहलावत, गहलान, गहलावत आदि विख्यात हैं।

राठौर

राजपूत भाठों के अनुसार यह लोग कश्यप के वंशज बताएँ हैं। ५०० ई. में ये लोग कन्नौज में बसते थे। इसी कुल में राजा जयचन्द हुए हैं। इन्हीं की शाखाएँ धाडुल, भदेल, चाकित, राघुकुश, रामदेव, मालवत, दुहरिया, गंगदेव, गाधे, धगे, जयसिंध, श्राधिया, जोरा, संधु, कुटेजा इत्यादि हुई हैं।

कश्यप, कछप, कछवाहा

ये लोग अपने को कश्यपबंशी तथा कछ्प अवतार को अपना प्रवर्तक मानते हैं। इस वंश में शिवाजी मराठा हुए। इनकी प्रतिष्ठा महाराष्ट्र, गुजरात तथा कच्छ में हुई। इन्होंने मीनों को उनके राज्य से निकालकर आमेर नगर बसाया था। मुसलमान बादशाह अकबर के समय

हर्षवर्धन इसी कुल में हुए थे जिनकी राजधानी थानेश्वर तथा कन्नौज थी। ये हिन्दू काल का अन्तिम सम्राट माना जाता है। इसके वंशज वर्धना, बुड़ना आदि हुए। जिन्होंने अपना प्राचीन प्रवर्तक महर्षि कश्यप को बताया है।

हुण

जिन वीर वंशों ने राजस्थान की ३६ जातियों में आसन पाया है, उनमें एक जाति हुण भी है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार विश्वामित्र और वशिष्ठ के युद्ध में हुणों ने वशिष्ठ की सहायता की थी। महाराजा रघु ने दिगविजय के समय हुणों को पराजित किया था। हर्षवर्धन ने भी एक बार हुणों को बुरी तरह पराजित करके भारत से निकाला था। फिर भी इन्होंने भारत से नजर नहीं हटाई और भारत के अनेक स्थानों पर अपना दायित्व जमा लिया तथा भारतीयों में घुल मिल गए। एक बार ये लोग एशिया योरुप आदि सभी देशों में प्रचण्ड हुए हैं। हर्षवर्धन के समय इनके नेता का नाम तोरमाणा था। इनके वंशज महेरकुल ने पंजाब स्यालकोट तथा काश्मीर में राज किया।

कत्तिये, काथी, खती, खतरी, कायस्थ

ये लोग कभी काठियावाड़ में राज करते थे। इनके वंशज प्राचीन क्षत्रीय कहलाए परन्तु धीरे-धीरे इनके नाम उपभ्रंश होते गए– क्षत्रि से खतरी, काठी, कतिया, कायस्थ आदि जातियाँ कही जाने लगी।

बल्ल

भठ ग्रंथों में इनको ठढ अर्थात् मुलतान के राव पुकारा है। ये लोग अपने को सूर्यवंशी कहते हैं। महाराजा रामचन्द्र के वंशज लव के शाखाकुल में महाराजा बल्ल अथवा बपा को अपना पूर्वज बताते हैं। कुछ लोग स्वयं को कश्यप वंशिय हरण्य कश्यप कुलीन महाराजा बली की संतान बताते हैं।

झाला (झाले, झौंके)

इनका कोई प्राचीन विशेप वृतांत नहीं मिलता। हॉं महाराणा प्रताप को जब अकबर ने घेर लिया था उस समय इन लोगों ने अपनी जान झौंक कर हल्दी घाटी के मैदान में महाराणा प्रताप की जान बचाई थी।

कोमरी, वानर

ये लोग अपने को हनुमान के वंशज बताते हैं। सूरत देश में गुमरी नामक नगरी में इनके राजाओं ने राज किया। पोरबन्दर टापू में समुद्र पार जाने से इनका नाम वानर विख्यात हुआ। दक्षिण में इनकी जाति का नाम कपू है। गुमरी में रहने वालों को कमरी कहते हैं।

पट्टन, तंवरों को दिल्ली, चौहानों को आमेर, कामध्वजों को कन्नौज, प्रीहारों को मरु प्रदेश मारवाड़ यदु वंशियों को सूरत, ज्वालों, झालों को दक्षिण, कछप कुशवाहों को कच्छ, कहारों को काठियावाड़, रायपुवारों को सिंध का देश देकर करदाता सामंत बनाया था। पुवारों के शासन काल में कई विख्यात नगर थे जैसे मेहश्वर (महेशमति) धारा, माण्डू, उज्जैन, चन्द्रावती, महवा, मदान, पुवारवती, अमरकोट, लोहदोई तथा पट्टन आदि नगरों में से किसी को इन्होंने बसाया था तथा किसी को जीतकर अपना लिया था। चन्द्रगुप्त मौर्य इसी कुल की एक शाखा से हुआ तथा एक शाखा का नाम सौदा था। इस गौत्र के अमर-समर नामक दो राजा हुए। इन दोनों ने अमरकोट, अमरसर नामक नगर बसाए। इस कुल की ३५ शाखाएँ बताई जाती हैं।

चौहान

चौहानों को अग्निकुल राजपूत कहते हैं जिन्होंने राजपूतों में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त की। ये लोग अपने को चन्द्रवंशिय राजा अजयमीढ़ के प्राचीन वंशधर बताते हैं। इस कुल की अनेक शाखाओं में माहिर, महार, खींचीं, देवरे, धीमरे, शनिगुरु, अनहिल, अन्तल, अष्टम आदि विख्यात हैं। महाराजा अनहिल से लेकर पृथ्वीराज तक इस वंश के उनतीस राजा हुए। इस कुल के अजयपाल राजा ने अजमेर नगर बसाया था।

चालोक्य, सोलंकी

ये राजपूत कुल भी चौहानों के साथ उदय हुआ था। यह लोग प्राचीन काल में मालावार कल्याण नगर में बसा करते थे। इनकी राजधानी पट्टन थी। इस कुल का पूर्ण समय मुसलमानों के विध्वंशों में व्यतीत हुआ। इस कुल को शोरकुल भी कहते हैं। महाराजा सिद्धराय के पुत्र भाग्यराय के नाम पर भागिला, वधेला, शाखाओं की उत्पत्ति हुई। जिस समय राठौरों ने कन्नौज को लिया था तब सोलंकी प्रतिष्ठान हुए थे। इस कुल से भागिला, वघेल, शोर, चौल, चाहिल्लान, चालंग, कालम कल्याण आदि शाखा प्रतिष्ठित हुई।

प्रीहार, प्रतिहार

यह वंश अग्नि कुल राजपूतो में सब से नीचे आसन पर आता है। प्रीहार कुल के लोग सदा दिल्ली के तोमरों अथवा अजमेर के चौहानों के आधीन रहे। इनकी राजधानी मंडवार (मंदाद्री) थी। इस कुल के विख्यात राजा नाहर राव अपनी प्रतिष्ठा में अपना नाम छोड़ गए। जब राठौर कन्नौज से भगाए गए तब उन्होंने मंडवार में शरण ली थी। राठौरों ने अपने आश्रय दाता प्रतिहारों के साथ विश्वाघात करके विनाश करवाया था। उस व्यक्ति का नाम चंद था। पहले प्रीहार लोग राणा नाम से विख्यात थे। इनकी ये उपाधि गहलोतों ने छीन ली। आजकल प्रीहार वंश भारत के चारों ओर फैल रहा है। सिंध तथा चम्बल नदी के संगम भी इनके अधिकार

पट्टन, तंवरों को दिल्ली, चौहानों को आमेर, कामध्वजों को कन्नौज, प्रीहारों को मरु प्रदेश मारवाड़ यदु वंशियों को सूरत, ज्वालों, झालों को दक्षिण, कछप कुशवाहों को कच्छ, कहारों को काठियावाड़, रायपुवारों को सिंध का देश देकर करदाता सामंत बनाया था। पुवारों के शासन काल में कई विख्यात नगर थे जैसे मेहश्वर (महेशमति) धारा, माण्डू, उज्जैन, चन्द्रावती, महवा, मदान, पुवारवती, अमरकोट, लोहदोई तथा पट्टन आदि नगरों में से किसी को इन्होंने बसाया था तथा किसी को जीतकर अपना लिया था। चन्द्रगुप्त मौर्य इसी कुल की एक शाखा से हुआ तथा एक शाखा का नाम सौदा था। इस गौत्र के अमर-समर नामक दो राजा हुए। इन दोनों ने अमरकोट, अमरसर नामक नगर बसाए। इस कुल की ३५ शाखाएँ बताई जाती हैं।

चौहान

चौहानों को अग्निकुल राजपूत कहते हैं जिन्होंने राजपूतों में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त की। ये लोग अपने को चन्द्रवंशिय राजा अजयमीढ़ के प्राचीन वंशधर बताते हैं। इस कुल की अनेक शाखाओं में माहिर, महार, खींचीं, देवरे, धीमरे, शनिगुरु, अनहिल, अन्तल, अष्टम आदि विख्यात हैं। महाराजा अनहिल से लेकर पृथ्वीराज तक इस वंश के उनतीस राजा हुए। इस कुल के अजयपाल राजा ने अजमेर नगर बसाया था।

चालोक्य, सोलंकी

ये राजपूत कुल भी चौहानों के साथ उदय हुआ था। यह लोग प्राचीन काल में मालावार कल्याण नगर में बसा करते थे। इनकी राजधानी पट्टन थी। इस कुल का पूर्ण समय मुसलमानों के विध्वंशों में व्यतीत हुआ। इस कुल को शोरकुल भी कहते हैं। महाराजा सिद्धराय के पुत्र भाग्यराय के नाम पर भागिला, वधेला, शाखाओं की उत्पत्ति हुई। जिस समय राठौरों ने कन्नौज को लिया था तब सोलंकी प्रतिष्ठान हुए थे। इस कुल से भागिला, वघेल, शोर, चौल, चाहिल्लान, चालंग, कालम कल्याण आदि शाखा प्रतिष्ठित हुई।

प्रीहार, प्रतिहार

यह वंश अग्नि कुल राजपूतो में सब से नीचे आसन पर आता है। प्रीहार कुल के लोग सदा दिल्ली के तोमरों अथवा अजमेर के चौहानों के आधीन रहे। इनकी राजधानी मंडवार (मंदाद्री) थी। इस कुल के विख्यात राजा नाहर राव अपनी प्रतिष्ठा में अपना नाम छोड़ गए। जब राठौर कन्नौज से भगाए गए तब उन्होंने मंडवार में शरण ली थी। राठौरों ने अपने आश्रय दाता प्रतिहारों के साथ विश्वाघात करके विनाश करवाया था। उस व्यक्ति का नाम चंद था। पहले प्रीहार लोग राणा नाम से विख्यात थे। इनकी ये उपाधि गहलोतों ने छीन ली। आजकल प्रीहार वंश भारत के चारों ओर फैल रहा है। सिंध तथा चम्बल नदी के संगम भी इनके अधिकार

सिलार, सिलहार

ये सिलार जाति के लोग भी सौराष्ट्र में हुए हैं तथा बड़ी प्रतिष्ठित जाति कहलाई और राजपूतों की गणना में आती है।

दाबी, देबी

भट्ठ कवियों के अनुसार इन्हें यदु वंशिय बताया जाता है। ये राजपूतों में गिने जाते हैं।

दर, दोदा

इनका महाराज पृथ्वीराज से संघर्ष हुआ था। पृथ्वीराज ने इन्हें जीत कर स्वयं को धन्य माना था।

घरवाल, घरोवाल, गढ़वाल

वैसे तो ये लोग वीर बहादुर थे परन्तु राजपूतों में इनके विवाह सम्बन्ध नहीं मिलते। ये लोग काशी में रहते थे। इनकी एक शाखा बुन्देल राय नाम से पुकारी जाती थी। बुन्देल खण्ड में इन्होंने निवास किया था।

सेंगर

इस राजपूत जाति का कोई विशेष वृतान्त नहीं मिलता।

सिकरवाल

चम्बल नदी के किनारे यदुमति के समीप इन्होंने सिकरपुर नगर बसाया था।

वाइस, बेस

ये कुल भी राजपूतों की गणना में तो आता है परन्तु कोई विशेष वृतान्त नहीं मिलता।

देहिया, देहिवर (धीमर)

ये कुल प्राचीन क्षत्रीय कुल है। जैसलमेर के भट्ठ ग्रंथों में इनका वर्णन मिलता है। ये लोग स्वंय को चन्द्रवंशिय राजा द्वीमीढ़ को अपना प्रवर्तक बताते हैं।

जोहिया, जोहर, जुहूर, झीमर

ये लोग भी हैहयों के साथ-साथ लिखे गए हैं। इनको जांगल देशपति कहा गया है। ये क्षेत्र प्राचीन काल में कुरु नाम से महाभारत आदि पुराणों में लिखित हैं।

में रहे हैं। इस कुल की बारह शाखाएँ बताई हैं। जिनमें इन्द्रों, इन्द्रखेव, सांधल, पुरिया, गुर्जर आदि विख्यात हुई।

शोर

शोर जाति भी भारत में विख्यात हुई है। ये जाति सौराष्ट्र में थी। इन्हीं के नाम पर सौराष्ट्र नाम विख्यात हुआ है। विदेशियों ने इन्हें चोल, चोर नाम से पुकारा है। सौराष्ट्र की सीमा पर एक छोटा सा टापू था। वहाँ पर विदेशी व्यापारी मालभरे जहाज लाया करते और यह उस माल को लूट लिया करते थे। इसलिए अरब आदि देशों के लोगों ने इन्हें चोर बताया। जब विदेशियों ने इन्हें हमला करके सौराष्ट्र से निकाला था तो इन्होंने मेवाड़ के राजाओं की शरण ली थी। इस कुल के विख्यात राजा बाण हुए हैं। बलभी इनकी राजधानी थी। १४४ वर्ष बाण के वंशजों ने अनलह वाड़ा पट्टन में राज किया। आठ पीढ़ी राज करके यह वंश एक दम लुप्त हो गया।

तक्षक (धवचक) , शक

अति प्राचीन काल में जो वीर गण दूर देश शक द्वीप से भारत में आए थे। उनमें तक्षक ही प्रधान थे। इस वंश वृक्ष की विभिन्न नामों से शाखाएँ निकलकर चहुं ओर फैल गई। कहते है कि नागवंशी तक्षक ने छिपकर महाराजा परिक्षित की हत्या की थी। जनमेज्ये ने अपने पिता का बदला लेने के लिए नागवंशियों को भस्म किया था। पुराणों में इनको सर्प कहा है। परन्तु आधुनिक लेखाकारों के अनुसार तक्षक नाग (सर्प) नहीं था। वास्तव में ये तक्षक कुलीन नागों की शाखा का प्रधान पुरुप था। जिस समय सिकन्दर ने भारत पर चढ़ाई की थी तब पर्वतों के निकट शक, तक्षक जाति रहती थी। जिन्होंने भारतीय राजा पोरस का साथ छोड़कर सिकन्दर का साथ दिया था। इनका निवास स्थान सिंध क्षेत्र था। शालीवाहन नगर इनके अधीन था जो भट्टियों ने इनसे छीन लिया। पृथ्वीराज के कविचन्द्र भट्ट ने एक तक्षक वंशिय (चित तक्षक) को पृथ्वीराज का ध्वजारोहक बताया है। जिसके नाम पर उनके वंशज काम ध्वजक (धाँचक) कहलाये। भविष्य पुराण के अनुसार इस वंश से जिन जादुव कुल शाखा की उत्पत्ति हुई है। इस जित (जाट) वंश के अनेक महावीरों के वीर दरप से सारे भूमण्डल को एक बार कंपा दिया था।

जित, जेतव, जाटव

राजपूतों में जितों का नाम भी आया है। परन्तु कहीं भी राजपूत लोग इनको राजपूत नहीं मानते। न ही राजपूतों के साथ इनका विवाह सम्बन्ध हुआ है। ये लोग स्वयं को यदु वंशिय

माहिल, माहिर, महार

ये लोग कभी बीकानेर के शासक रहे ।

राजपाली

ये राजपाली, राजपालिक, शुद्ध पाल पुकारे गए हैं ।

दाहिर

ये लोग देवल के राजा दाहिर के कुल से बताए जाते हैं । कभी सिंध देश इनके अधिकार में रहा है ।

दाहिया

इस कुल के तीन भाई पृथ्वीराज के यहाँ मंत्री रहे हैं व सेनापति के पद पर भी रहे हैं ।

कश्यप राजपूत क्षत्रि समुदाय के पर्याप्त गोत्र एवं शाखाकुल नाम

हस्तियान	देरन	महादेशी	बोबी	सिसोधिया
हाड़े	दारन	मच्छन्दर	बोट	सिंधिया
हिरण	देव	माहिल	बिन्द	राठौर
हातड़	चोई	पुवार	कादर	रोहल
धौंचक	चालिग	प्रमार	कोहली	रिठाण
धानाणा	चौहान	प्रतिहार	खण्डीर	रतड़ा
धड़ंगे	चालौक्य	पतवाहक	बनाफर	रायपुवार
धारागड़ी	लामसर	अन्तल	भठी	कवार
धोरिया	लुहले	अनतर	भारद्वाज	रामजनीय
धनिक	मालड़े	अमिद	भुज	रोहेला
धनोनिया	मतोरिया	प्रवारिया	भोंझान	रोहजे
धूलिया	मलहोत्रा	पावेद	भैरवत	ठोहरे
धालुर	मोरा	पपराया	सिलान	डेरू
दारुक	मोरिया	पारी	सलखलान	अस्टाम
धुत	मलिया	फुलमाली	सरोंहे	आशियान
बवानिया	सोगरा	बराहिये	सलोत्रे	कल्याण
बोर	संधानिया	बासान	सोच	किराड़े
बोरिया	संतरी	बीड़राम	सुखजग	मुरकन
महरा	मुण्डीफोर	बीहड़े	सांझल पुरिया	कनोड़िया
मांझी	मालवीया	बालान	सिकरवाल	कटारिया
कछवाहा	मालवा	बजलोतरे	संधाया	कांगर
माछी	मम्बर	बमोई	सोंधिया	कश्यप
काशान	गेडे	टकेरड़ा	कपूर	मनियारिया
केले	गेण्डे	नोहरा	बड़गुज्जर	
कड़ात	गग्गा	निवाड़ी	रघुवंशिय	
कलवार	गरवाल	नरुद	ककालिया	

केशरिया
काली
कुवात
कारक
खैरवार
खेवोड़
तनवर
तूर
तोमर
तुराहे
तितरिया
तिड़ानिया
तैंहलान
तेली
थावक
छौंकर
छाजान
गहलावत
गहलान
गादड़े

गाधी
गौड़
गराया
कोरिया
गुजराती
जागलान
जैसवाल
जालू
झकदा
झिकट
झाले
झावा
जजेटा
योग
जलिया
झौंके
टणडन
टुण्डवान
टांक
टोर

निउरिया
नेक
नियक
नागनपुरिया
निवाड़
अड़ियान
इन्द्र वे
इन्दोरिया
क्षत्रिया
हुई
हुईयर
खंनान
खींची
भोड़
धानियान
पंत
भरत
कौशिक
नीले
रांघड़

डोगरे
सैंगरवाल
चतुरवुज
गुड़िया
हरदिया
द्वीताया
बेनीवाल
खोखर
आदि-आदि

प्राचीन क्षत्रि राजे महाराजाओं द्वारा बसाए गए नगर एवं प्रचलित वंश

भारतीय क्षत्रि सूर्य एवं चन्द्र आदि राज वंशों से प्राचीन कोई अन्य क्षत्रि राजवंश होने का प्रमाण संसार के किसी इतिहास में नहीं पाया जाता। भारत के अतिरिक्त चीन, सीरिया, मिश्र आदि देशों में जो राज वंशों का होना पाया जाता है, वह सब भारतीय क्षत्रि वंशों की पुष्टि के बहुत काल बाद प्रतिष्ठावान हुए हैं। इसलिए यह दो क्षत्री वंश संसार के सब प्राचीन वंशों से पुरातन हैं।

भगवान सूर्य के पुत्र मनु से सूर्य तथा चन्द्रमा के पुत्र बुध द्वारा चन्द्र वंश की प्रतिष्ठा हुई थी। सूर्य तथा चन्द्र वंश का बीज एक ही काल में बोया गया था। परन्तु इन दोनों की पुष्टि एक साथ नहीं हुई। क० जैम्स टाड़ साहेब अनुसार सूर्य वंश की अपेक्षा चन्द्र वंश धीरे-धीरे पुष्ठ एवं प्रतिषठावान हुआ,था, और इसका अधिक और अनेक भूखंड व शाखाओं मे विभाजित होने के अनेक प्रमाण प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मिलते हैं। उपरोक्त दोनों वंशों में राजनैतिक टकराव,उतार चढाव व वैवाहिक सम्बन्ध भी होते रहे।

सर्व प्रथम सूर्य पुत्र मनु के नौ पुत्र तथा एक पुत्री थी,जिनमें सारा संसार विभाजित हुआ था। बड़े पुत्र इक्ष्वाकु ने अयोध्या की स्थापना की थी। इक्ष्वाकु के पुत्र निमि तथा निमि के पुत्र मिथि द्वारा बसाई गई नगरी का नाम मिथिला था जहां के राजा विदेह हुए जिनके वंशज जनक नाम से पुकारे जाते हैं। सीलध्वज तथा सीता जी इसी कुल में हुई थीं।

मनु की पुत्री इला द्वारा बुध के संयोग से पुरूर्वा नामक पुत्र हुआ जिन्हें इलाहाबाद प्रयाग राज मिला था। इनकी राजधानी का नाम महेशमती था। जो नर्मदा के तट पर स्थित है। भगवान् बुध का लगाया हुआ चन्द्र वंश वृक्ष बड़े विस्तार वाला हुआ और इसकी अनेक शाखाओं से बड़े-बड़े पराक्रमी राजा उत्पन्न हुए थे। इला का पुत्र पुरुर्वा तथा पुरुर्वा का प्रपोत्र नहुष और नहुष का पुत्र ययाती एक महान् विजेता हुआ जिसने अपने राज्य का विस्तार किया था। इसका विवाह शुक्राचार्य ब्रह्मण की कन्या देवयानी तथा क्षत्रि वंशीय वृषपूर्वा की कन्या शर्निष्ठा से हुआ था। इनके पांच पुत्र दुर्हव्यू, अनु, पुरू, तुर्वसु व यदू हुए थे। बड़े होकर प्रत्येक ने एक-एक लम्बे वंश की स्थापना की थी जिनमें यदू और पुरू द्वारा चन्द्र वंश की विशेष प्रतिष्ठा हुई।

महाराजा ययाती ने अपना राज अपने पुत्रों में बांट दिया जिनमें सब से छोटे पुत्र पुरु को पैतृक प्रयाग राज्य मिला था। एवं यदू को चंबल, केतवा, कैन आदि नदियों के प्रदेश मिले थे।

उधर सूर्य वंशी इक्ष्वाकु के भतीजे अनर्त द्वारा अलग राज्य तथा कुशथली नामक राजधानी की स्थापना हो गई। इसी प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी राज्य से राज्य तथा वंश से वंश वृद्धि होकर पूर्वोक्त वंशों का विस्तार होते होते आगे चल कर चन्द्र वंशीय यदू वंशज दो शाखाओं में बंट गए जिनके नाम यादव तथा हैहय प्रचलित हुए। यादवों ने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करके अपने राज्य का विस्तार कर लिया तथा सूर्य वंशी राजाओं द्वारा बसाये हुए कुशथली नगर को भी अपनी राजधानी बनाया था। यहीं तक ही नहीं पुरुर्वा वंशी राजाओं का अधिकांश क्षेत्र भी दबा लिया।

दूसरी ओर सूर्य वंशी इक्ष्वाकु से लेकर मानधाता तक अनेक राजाओं के समय में अयोध्या के राज्य की इतनी वृद्धि नहीं हो पाई जितनी मानधाता के समय में हुई। इसने पुरुव एवं दुर्हय चन्द्रवंशी राज्यों को कुचल कर अपने राज्य का विस्तार किया एवं महा शक्तिशाली सम्राट कहलाया था। कान्यकुंज (कनौज) के दुर्हयू नरेश तो काबुल की ओर जा निकले जहां उन्होंने गंधार नगर एवं राज्य की स्थापना की थी। जिनके राजा का नाम गाधी तथा गाधी का पुत्र विश्वामित्र हुआ। विश्वामित्र ने अपने पैतृक राज्य को प्राप्त करने का प्रयत्न किया तब वशिष्ठ आदि ने सूर्य वंशी राजाओं का साथ दिया उस संघर्ष में विश्वामित्र की हार हुई एवं वह शर्म का मारा वापिस नहीं गया व जंगल में त्रिशंखु के पास रहा तथा भक्ति की। त्रिशंकु को किसी ब्राह्मण आदि द्वारा राज्य से बहिष्कृत कर रखा था। इसको राज्य से पदच्युत करके हरिचन्द्र को राजा बनाया था। विश्वामित्र के तपोबल से त्रिशंकु शापमुक्त होकर स्वर्ग गया था। इसके अतिरिक्त हरिचन्द्र ने वशिष्ठ द्वारा पुत्र प्राप्ती हेतु नर बलि देकर यज्ञ में एक कौशिक वंशी देवरात नामक बालक की बलि देते-देते विश्वामित्र ने उसे बचाया था। इस प्रकार विश्वामित्र की वशिष्ठ तथा सूर्य वंशीयों से नहीं बनती थी।

दूसरी ओर चन्द्र वंशीय हैहय लोगों की शक्ति को जब प्रधानता मिली तब अयोध्या की प्रभुत्ता कम होती गई। हैहय वंशी कीर्तवियार्जुन जिसको सहंसर वाहु भी कहते हैं ने हैहय शाखा को दीर्घ काल में उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया नर्मदा से लेकर हिमालय तक विजय प्राप्त की। नर्मदा के निचले भाग में रहने वाले भृगु वंशीय ब्राह्मणों के साथ इसका संघर्ष हुआ। जमदगनी के पुत्र परशुराम के हाथों वह मारा गया। अपने पिता का बदला लेने हेतु इसके पुत्रों ने जमदगनी को मार दिया। तब परशुराम ने समस्त क्षत्रि वंश को समाप्त करने का निश्चय किया जिसमें हैहय वंशी अर्जन ही नहीं अपितु अनेक-अनेक समर्थकों का बध भी हुआ।

सिंध आदि नदियों से ऊपर तक बड़े विस्तार वाला बताते हैं। इनका बसाया हुआ हस्तिनापुर नगर किसी समय संसार के महानगरों में विख्यात नगर था। आज कल वह भारत के मानचित्रों से दूर तथा गंगा जी की तीव्र तरंगों के प्रभाव से महाराजा हस्ति की यह कृति संसार से लुप्त होती जा रही है। हरिद्वार से बीस कोस दूर दक्षिण दिशा में महाराजा हस्तियान की हस्तिनापुर के दीन हीन चिन्ह दिखाई दे रहे हैं। गंगा के तीव्र प्रवाह एवं प्रकोप से इनके भी बचने की संभावना नहीं।

हस्तियान के अजयमीढ़, दुईमीढ़ तथा पुरुमीढ़ आदि पुत्रों की शाखाओं से जितने वंशों का विस्तार हुआ इतना किसी अन्य क्षत्रिय वंश से नहीं हुआ।

सूर्य वंशी महाराजा दलीप के बाद इस वंश में रघु अज दशरथ तथा दशरथ के पुत्र राम तक अयोध्या का राज्य उन्नत शिखर पर रहा। लंकापति रावण का वध श्रीराम चन्द्र जी के हाथों हुआ था। लंका की लड़ाई में जटायू वानर आदि ने राम का साथ दिया महावीर हनुमान वानर थे जिन्हें कपी भी कहा जाता है। महाराजा रामचन्द्र के बाद सूर्य वंशी राजाओं का सूर्य ढ़लता एवं चन्द्र वंशीयों का चढ़ता गया।

दुई मीढ़

दुई मीढ़ चन्द्र वंशीय भरत कुलीन महाराज हस्तियान के पुत्र हुए। जिनके वंश में अनेक शक्तिशाली महापुरुष राजे महाराजे हुए हैं जैसे महाराजा यवनीर, कृति, नीप, उग्रायुद्ध, शेम, सुबीर, निपुंज्य, वृहदर्थ आदि राजाओं के नाम सोम वंश वर्णन श्रीमद् भगवत् नूतन सुख सागर अध्याय नौ (९) स्कंध बीस (२०) में तथा विष्णु पुराण आदि में भी मिलते हैं। शान्तनु की मृत्यु के पश्चात उग्रायुद्ध ने सत्यवती को लेने हेतू हस्तिनापुर पर चढ़ाई की थी तब भीष्म के हाथों उग्रायुद्ध मारा गया था।

अजय मीढ़

महाराज हस्तियान के पुत्र अजयमीढ़ की नीलनी नामक स्त्री से नील तथा नील का शान्ति-शान्ति का सुशान्ति-सुशान्ति का पुरंज्य, पुरंज्य का अक, अक का हर्यक्ष हुआ जिसने अपने पुत्र मुद्गल, यवनीर, बृहदशु, काम्पील, संजय आदि पांचों पुत्रों को अलग-अलग पंचनद (पांचाल) पंजाब का राज्य दिया था। आगे चलकर इनके वंशज अलग-अलग होते गए तथा अपने अलग राज्य तथा राजधानियाँ स्थापित करते गए। इनमें मुद्गल के वंशज कुछ ब्राह्मण हुए और काम्पील ने अपने नाम पर काम्पील नगर तथा राजधानी की स्थापना की। बृहदशु के नाम पर वृहदशु वंश प्रचलित हुआ। मुद्गल के पुत्र देवदास तथा देवदास के वंशज प्रीष्यंत हुए जिनके पुत्र द्रोपद् तथा द्रोपद् का धृष्टदमन एवं पुत्री द्रोपदी का जन्म हुआ। जो पाण्डवों

भूमि पर महायुद्ध हुआ जिसे महाभारत युद्ध की संज्ञा दी जाती है। इस महाभारत के युद्ध में कौरवों का ही नहीं अपितु संसार के अनेक क्षत्रि राज वंशों का पतन हो गया, कईयों का समूल विनाश हो गया। इस महाभारत के युद्ध में मरुत चेदी, कारुष, कांशी दक्षण पांचाल, मगध, गुजरात तथा यदु वंशी कृष्ण ने पाण्डवों का साथ दिया था। एवं कौरवों की ओर से उत्तर भारत के सभी राज्यों ने भाग लिया था। पांडवों की विजय के बाद युद्धिष्ठिर को हस्तिनापुर का राजतिलक हुआ परन्तु कुछ दिन बाद अपने प्रपोत्र को राजसिंहासन देकर पांचों भाईयों सहित हिमालय चले गए और कभी वापिस नहीं आए। परीक्षत के बाद इसके वंशज जनमेज्य की चौथी पीढ़ी में चचक्षु के समय गंगा की बाढ़ से हस्तिनापुर कटने लगी तब राजधानी कुशथली ले जाई गई, कुरुक्षेत्र भी इनकी राजधानी रही।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् भारत में एक नए युग (काला युग) अर्थात कलियुग का आरम्भ हुआ। प्राचीन विख्यात सूर्य एवं चन्द्रवंशीय क्षत्रि राज वंश कुछ तो समाप्त हो गए कुछ दीन-हीन दिशा में अपना जीवन निर्वाह करने हेतु अनेक कार्यरुपी जातियों में मिल गए तथा उन्हीं वर्गों और जातियों के कहे जाने लगे। कुछ बचे-खुचे राज्य रहे थे जैसे कांशी, विदेह, पांचाल, हैहय, कलिंग सुरसैन आदि उल्लेखनीय हैं यह छोटे मोटे राज्य तथा जातियों के लोग जैन, बौद्ध इत्यादि मतों में जा मिले अनेक ब्राह्मण भी ब्राह्मण वाद को छोड़ बौद्ध धर्म अनुयायी हो गए। विदेशी जातियाँ भारत में आने लगी व भारतीय छोटी बड़ी जातियों में प्रवेश करती गई इस प्रकार भारतीय निम्न व दबी कुचली जातियां उच्च वर्गों की बराबरी करने लगी। जैसे हुण, प्रतिहार, कुशान, शक, पार्थव, गुरजर आदि जातियों ने वैसे या आक्रमणों द्वारा अपने राज्य स्थापित किए। भारतीयों में विलय हो गए। अन्तर्देशीय नए-नए राज्यों का उत्थान हुआ जैसे क्षत्रय, महाक्षत्रय, नहपान, पुलुमाई, योद्धा, आभीर, शुंग, नाग, धाकाटक, भारशिव, मालव, कलिंग, आंध्र, खैरवाल, सातबाहन, चेर, पोंड्रू, कलवार, नन्द मौरिया (मेहरे) महार, कच्छवाहा, मतस्य, आदि तथा अनेक अंतरजातियों की स्थापना हुई।

मौरिया वंशीय राज्य का निर्माता चन्द्रगुप्त मौरिय था। इसको निम्न वर्गीय मौरिय, मेहर, महरा जाति से उत्पन्न हुआ बताते हैं। जिसने नन्दों के आखरी राजा धनानन्द से उनका राज्य छीना था। इसी वंश में महाराजा अशोक हुए जिसने चक्रवर्ती राज किया।

हर्ष वर्धन

गुप्तों के बाद भारत में हर्षवर्धन शासक हुआ। भारतीय इतिहास में हर्ष का नाम उल्लेखनीय है, जिसे हिन्दू काल का अंतिम सम्राट कहा जाता है। जिसका राज थानेश्वर तथा कन्नौज में हुआ है। इनका सारा जीवन संघर्ष में बीता। यह बुध धर्म अनुयायी ही नहीं अपितु

को ब्याही थी। यह पांचाल देश के राजा हुए। अजयमीढ़ की दूसरी पत्नी से इनके पुत्र कौरव हुए जो अपने पिता के साथ हस्तिनापुर में विराजमान रहे जिसने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुरुक्षेत्र जंगल का क्षेत्र भी अपने राज्य में मिला लिया। इसीलिए इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा था। महाराज कौरुव के तीन पुत्र परिक्षत,जन्हु तथा संघनु हुए। संघनु के वंश में जोरासंध कंश तथा जन्हु के वंशज महाराज शान्तनु हुए,जिनकी पहली स्त्री से महान् दृढ़नेमी पुत्र भीष्म हुए थे। महाराज शान्तनु का दूसरा विवाह दास राज की पुत्री सत्यवती से हुआ था। जबकि सत्यवती की कोख से एक पुत्र पहले पारासुर द्वारा हो चुका था। यह पुत्र महऋषि वेद व्यास के नाम से सुविख्यात हुआ। जिसने वेदों का विभाजन महाभारत,पुराण आदि ग्रंथों की रचना की थी। कुछ लोग इसे धींवरी का पुत्र भी कहते हैं। पारासुर को धींवर या बलातकारी असुर क्यों नहीं कहते। यह सामाजिक अन्याय नहीं तो क्या है ? पारासुर ने सत्यवती से सम्पर्क एवं विवाह करके उसका परित्याग किया था। तब यह पुनः भीष्म आदि के प्रयत्नोपरान्त शान्तनु से ब्याही थी। सत्यवती से शान्तनु के दो पुत्र विचित्रवीर्य एवं चित्रागंद हुए थे। इनका विवाह कांशी नरेश की पुत्रियों अम्ब तथा अंबिका से हुआ था। शान्तनु की मृत्यु के बाद यह दोनों पुत्र निसंतान क्षय आदि घातक रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गए। वंश समाप्त होते देख सत्यवती ने भीष्म से वंश चलाने का आग्रह किया। जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने से इन्कार कर दिया तब भीष्म जी की सहमति से सत्यवती ने अपने पूर्व पुत्र वेद व्यास को बुलाया तथा उसके तपोबल व वियोग सम्पर्क से दोनों रानी व दासी गर्भवती हुई थी। जिनसे धृतराष्ट्र, पांडू तथा दासी से विदूर उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र के दुर्योधन, दुशासन आदि पुत्र उत्पन्न हुए तथा पांडू से पांच पुत्र युद्धिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल एवं सहदेव हुए।

उधर यदू वंश में सुरसैन के पुत्र महाराज कृष्ण जी हुए। जिन्होंने जोरासंध के भाई कंस को मारा था। इस शत्रुता के कारण कृष्ण का जोरासंघ से कई बार संग्राम हुआ। पांडवों ने कृष्ण का साथ दिया था। जोरासंघ के बार-बार शत्रुता पूर्ण आक्रमणों के कारण कृष्ण ने मथुरा से हट कर द्वारका पुरी बसाई थी। भीम के हाथों जोरासंघ का वध हुआ। जोरासंघ मगध के राजा तथा राजधानी का नाम राजगृह था। यह कौरव के कुल में सुधनवा के वंशधर थे। हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र और पांडू दोनों भ्राताओं में से पांडू का स्वर्गवास हो गया था। भीष्म की देख रेख में धृतराष्ट्र को गद्दी पर बैठाया गया एवं विदूर महामंत्री नियुक्त हुए थे। धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन आदि को पांचों पाण्डव फूटी आंख नहीं भाते थे। इनको मिटाने हेतु अनेक षड्यन्त्र रचे गए। जैसे लाक्षागृह में जलाना, द्रोपदी चीर हरण, बारह वर्ष का वनवास व अज्ञातवास। यह सब कुछ देखते, सुनते भी धृतराष्ट्र अपने पुत्र मोह वंश अमूक बने बैठे रहे भीष्म, विदूर, कृष्ण सरीखें भी जब समझाते-समझाते वाध्य हो गए। अंततः कुरुक्षेत्र की समर

महर्षि कण्व

चन्द्रवंशियों की प्राचीन राजधानी प्रतिष्ठानपुर प्रयाग राज्य में महाराज पुरु के पौत्र मतिनार हुए जिन्होंने सरस्वती के तट पर बारह वर्ष दीर्घ सत्र तप किया। मतिनार के तीन पुत्र तंसुसुमती, अप्रतिरथ, ध्रुव तथा एक गौरी नामक पुत्री हुई। गौरी का विवाह सूर्यवंशी यवन आसव से हुआ जिसका पुत्र मानधाता हुआ उधर पुरु वंशिय तंसु (सुमती) का पुत्र रंभ तथा अप्रतिरथ का कण्व हुआ। अपने समय का महाराजा रंभ प्रजा प्रिय सर्व हितैषी धैर्यवान राजा था। महाराजा रंभ और कण्व दोनों भाई प्रेमपूर्वक शान्तिमय जीवन व्यतीत करते रहे। इस प्रकार रंभ से दुष्यंत तथा कण्व से मेधातिथि पुत्र हुए। जिनकी खुशी मनाने हेतु संपर्ण राज्य में अनेक यज्ञ, हवन, पुण्य दान समारोह आयोजित किए गए। कण्व की महाराजा रंभ अपने पिता समान इज्जत करता था। कहते हैं समय बड़ा बलवान है, समय के बदलते देर नहीं लगती। किसी समय महाराजा रंभ के समकालीन अयोध्या नरेश सूर्य वंशी मानधाता ने अपने राज्य की बढ़ोतरी तथा चक्रवर्ती पद प्राप्त करने के लिए पड़ौसी राज्यों पर चढ़ाई की थी। समय के परिवर्तन क्रम चक्कर से प्रयाग राज्य भी नहीं बच सका। महाराजा रंभ से सूर्यवंशियों का महाघोर संग्राम हुआ। इस महाघोर युद्ध में महाराजा रंभ तथा इनके अनुयाई परिवारजन सभी मारे गए तथा प्रजा ने अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार कुटुम्ब का सर्वनाश होता देख कण्व ने दुष्यंत और मेघातिथि बच्चों सहित सरस्वती की ओर जंगल में भागकर जान बचाई थी।

महाभारत आदि (६४/१८-२५) में मंदाकिनी नदी चैत्तरथ बन लिखा है। सम्भव है कि चित्रकूट का नाम कभी चैत्तरथ बन हो। उन्हें वहां दुश्मनों के अतिरिक्त खूंखार जंगली जानवरों से सुरक्षा तथा खानपान की अति कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। इस प्रकार रहते सहते कुछ कालान्तर पश्चात एक दिन जब वह किसी सरोवर से खाद्यान पदार्थ एकत्रित करने गया हुआ था तो अकस्मात् किसी राजा का अपने अंग रक्षकों तथा धुड़सवारों सहित उधर आगमन हुआ। उनकी भागदौड़ गड़गड़ाहट सुनकर कण्व का भयभीत ह्दय कांपने लगा। तथा उसे भागकर जाने तथा छिपने का कोई स्थान नजर नहीं आया। ऐसी चिंताजनक हालत में बचने का कोई उपाय न देख अपने को अदल पहचान करने हेतु सरोवर की गीली गारा मिट्टी अपने तन बदन पर लगाकर महात्माओं की भांति समाधि सी लगा मूक होकर बैठ गए और मन ही मन मां सरस्वती की अराधना करने लगे। कहते हैं उसे ऐसा दिखाई दिया जैसे सरस्वती माता उसे कहती है कि पुत्र भयभीत न हो। इस मेरे परिसंर में तेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता लेकिन

हिन्दू धर्म में भी पूर्ण आस्था रखते थे। कहते हैं कि हर्ष बौद्ध भिक्षुओं तथा ब्राह्मणों को दान देते समय पूर्ण खजाना (कोष) खाली करा देते थे।

अंततः इस संक्षिप्त वर्तांत के यहां लिखने का अभिप्राय यह था कि हमारे समुदाय के लोगों को यह जानकारी हो सके कि हमारे पूर्वज कैसे थे और आज हम क्या हैं ? जो यह भी नहीं जानते कि हम झीमर एवम् धीमर प्राचीन महाराजा अजयमीढ़ और दूईमीढ़ के वंशधर है। जिनके पूर्व पूर्वज दादा बाबा महऋषि कण्व हुए। बहुत लोग इन्हीं को बाबा कालू के नाम से जानते हैं। चाहे इनका यह उपनाम हो या अनपढ़ लोगों द्वारा बिगाड़ा हुआ नाम विख्यात हुआ हो। इस प्रकार हुई फेर बदल और सामाजिक दरिद्रता का मुख्य कारण हिन्दू धर्म की धार्मिक कठोरता एवं शिक्षा का अभाव हो सकता है। किसी ने सत्य कहा है कि अशिक्षित व्यक्ति हो, या समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता।

Certificate

Certificate of Registration of Societies-Act xxi of 1860.

I hereby certify that the all India Kasyap Rajput Maha Sabha Lahore, has this day been registered under the provision of the societies. Registration Act. xxi of १८६० given under my hand at Simla this ९th day of August १९२७ (One thousand nine hundred twenty seven)

Fee Rs - 50/-

Sd-
R.C. Rawlley
Registrar of joint stoch
Altester Companies.

Certificate

Certificate of Registration of Societies-Act xxi of 1860.

I hereby certify that the all India Kasyap Rajput Maha Sabha Lahore, has this day been registered under the provision of the societies. Registration Act. xxi of १८६० given under my hand at Simla this ९th day of August १९२७ (One thousand nine hundred twenty seven)

Fee Rs - 50/-

Sd-
R.C. Rawlley
Registrar of joint stoch
Altester Companies.

कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय का प्राचीन, मध्य एवं वर्तमान काल



लेखक :

सामन सिंह हस्तियान (स्वतन्त्रता सेनानी, बुटाना)

म. न. २६४, ३० श्याम नगर, महलाना रोड, सोनीपत-१३१००१ (हरियाणा)

कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय
का
प्राचीन, मध्य एवं वर्तमान काल

"महाऋषि कश्यप, बाबा कालू , महाऋषि कण्व
तथा प्राचीन क्षत्री राजे, महाराजाओं
द्वारा प्रचलित वंश, गौत्र प्रणाली,
राजपूतों की विभिन्न जातियाँ
और जातिगत, ऐतिहासिक
सामाजिक संक्षिप्त
सार संग्रह"

लेखक

विषय-सूची

भूमिका

मेरा इस "कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय का प्राचीन, मध्य एवं वर्तमान काल" नामक पुस्तक के लिखने का अभिप्राय इसके नाम से ही जाना जा सकता है जिसमें कश्यप राजपूत समुदाय के ही नहीं अपितु अनेक वर्तमान जातीय बन्धुओं, प्राचीन उच्च मान्यता प्राप्त वर्ग वंश गोत्रों के संस्थापक महापुरुषों राजा महाराजाओं के शुभ स्थान जिनका एकागीन एवं पैतृक लगाव वर्तमान कश्यप समुदाय के पूर्वजों से था या है। प्राचीन वर्ण व्यवस्था के बाद अनेक धार्मिक विडम्बना, ऊँच-नीच, वाद-विवाद एवं संघर्षों के फलस्वरुप उच्च मान्यता प्राप्त वर्ग तथा वंशों के लोग किस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थानान्तरित जातियों में फंस कर अपनों से इतने दूर हो गए कि जितना एक ध्रुव से दूसरा ध्रुव। इसके अतिरिक्त अन्य समाज सुधार सम्बन्धित सुझाव जो किसी भी प्रगतिशील समाज व जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। इस पुस्तक में लिए गए हैं। ये सभी तथ्य अनेक सुप्रसिद्ध धार्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों के अध्ययनोपरान्त अपनी यथा योग्य बुद्धि अनुसार एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया है। इसकी प्रशंसा करना मेरा काम नहीं बल्कि यह तो पाठकों की समझ व मन की भावना का विषय है। इसलिए मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रिय पाठक गण मेरी इस छोटी सी पुस्तक को अन्य ग्रंथों की भाँति अपना स्वजातीय ग्रंथ समझकर पढ़ने-पढ़ाने का कष्ट करेंगे और बहुजातीय कश्यप समुदाय का भविष्य उज्जवल करने, कराने में सहायक सिद्ध होंगे। इस पुस्तक में रह गई भूल एवं त्रुटियों को दूर करने, कराने की नीति से जो कोई मुझे अवगत कराने का कष्ट करेगा मैं उनका हार्दिक आभारी हूँगा।

लेखक

भावार्थ

प्रिय पाठको, मुझे समाज सुधार, जातीय ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ते और कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय का प्राचीन मध्य एवं वर्तमान काल नामक पुस्तक लिखने की कामना प्रकट करते देख विभिन्न जातियों के स्नेहशील मित्र ही नहीं अपितु स्वजातीय बन्धु भी पूछने की कोशिश करने लगे कि इस युग में ज़बकि जात पात को समूल नष्ट करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। क्या आपका यह प्रयास विफल नहीं जाएगा ? उन मित्रों का यह प्रश्न सुन कर महसूस तो हुआ और कहना पड़ा कि मित्रों किसी जाति विशेष का नाम लेने या जातीय विषयक पुस्तक लिखने, पढ़ने से कोई व्यक्ति जातिवादी नहीं हो जाता। यह केवल आपके सोचने और समझने का विषय है। आपको सुचित हो कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु जाति-पाति के कट्टर विरोधी व्यक्ति को ाी अपनी हस्तलिखित पुस्तक 'माई हिस्टरी' में अपनी जाति का नाम कश्मीरी ब्राह्मण लिखना ही पड़ा। बाबू हरिश्चन्द्र भारतेन्दु को अपनी जाति विषेयक पुस्तक "अग्रवाल उत्पत्ति" लिखते समय जातिवाद ध्यान क्यों नहीं आया। यद्यपि साधु महात्माओं की कोई जानि नहीं होती फिर भी जगत विख्यात स्वामी विवेकानन्द जैसी महान आत्माओं को भी अपनी जाति की ्ष्ठता घोषित करने के लिए बिवश होना पड़ा जिसका उल्लेख उनकी अपनी पुस्तक 'मेरी स्मृति' नामक पुस्तक में मिलता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्होंने अछूतोद्धार कार्यों हेतु अनेक विभिन्न नामांकन जातियों को सूचिबद्ध कराके हरिजन वर्ग की स्थापना की थी। इस प्रकार मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी जाति का नाम लेने या जाति विषयक पुस्तक आदि लिखने पढ़ने, अध्ययन आदि करने से कोई व्यक्ति जातिवादी नहीं हो सकता। ऐसा तो मनुष्य अपनी हीन भावनात्मक बुद्धि से बनता है।

लेखक

वर्ण व्यवस्था से जातिवाद

कहते हैं कि सृष्टि के आदि उन्नत काल में मनुष्य मात्र की कोई विशेष जाति नहीं थी। केवल स्त्री पुरूष एवं वंशों की परमपरा प्रचलित हुई थी। सनैः सनैः मानव में बुद्धि का विकास हुआ धर्म अनुयायी देव तथा धर्म विरोधी असुर नाम के दो वर्ग बने, जिनका आपसी मतभेद होने के कारण कई बार देव-असुर संग्राम हुए। इस युग को सतयुग अर्थात् वैदिक काल कहा जाता है। कई एक कार्यरुपी वर्गों का उल्लेख यजुर्वेद अध्याय ३० मंत्र न. १५ से २२ तक पाया जाता है। जैसे

सर्वेषांतू स नामानी कर्माणि च पृथक पृथक।
वेद शब्दे भय एवादि पृथक संस्याश्य निर्ममे।।

तद्पश्चात वेंसवस्त मनु ने विभिन्न कार्यों के आधार पर वर्ण व्यवस्था की स्थापना की थी। जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण बनाए थे।

(i) ब्राह्मण का कार्य पढ़ना, पढ़ाना यज्ञ हवन करना-कराना दान दक्षिणा लेना इत्यादि था, इन को सर्वहितकारी पुरोहित कहा जाता था।

(ii) क्षत्रियों के लिए राज्य संचालन देश की रक्षा सुरक्षा हेतु लड़ना लड़ाना मुख्य कार्य था, इन्हे राजा कहा जाता था।

(iii) वैश्य के लिए वाणिज्य व्यापार, खेतीबाड़ी, पशुपालन जैसे कार्य निर्धारित थे।

(iv) शुद्रों के लिए सेवा का कार्य था और उन्हें सेवक (दास) का दर्जा दिया जाता था।

विवाह शादी के बारे में किसी भी वर्ग की स्त्री किसी भी वर्ग में विवाह कर सकती थी और उसकी सन्तान का पिता की सम्पत्ति में पूर्ण अधिकार होता था। इन सब वर्णों को समाज में अनुशासित ढंग से चलाने के लिए एक नियमावली बनी थी जिस का नाम था "मनुस्मृति"। इस में समाज के लिए विभिन्न सुझाव निर्देश आदि निर्धारित थे। उस समय के हालात को देखते हुए यह नियमावली सब को सहायक प्रतीत हुई थी। मनुस्मृति अध्याय न.१० में लिखा है।

शुद्रों ब्रह्मण तामेती ब्रह्मणाश्चैति शद्रताम ।
क्षत्रि जातः मेवन्तू विद्या दृश्यात तथैवच ।। स. ३५

अर्थात विद्या विहिन ब्रह्मण शुद्र होता है । अध्ययन से शुद्र ब्रह्मण पद प्राप्त कर सकता है । वैश्य क्षत्रि और क्षत्रि वैश्य आदि वर्णों को ग्रहण कर सकते हैं । कण्वायन कौशिक मुद्गल आदि ब्रह्मण क्षत्रियों से निकले हैं, अनेक क्षत्रि ब्रह्मण वैश्य शुद्र दास चडांल हुए हैं । इस लिए वेदों के सभी मंत्र वक्ता ब्रह्मण नहीं थे । जैसे गाधी पुत्र विश्वामित्र क्षत्रि कुल से ब्राह्मण ऋषि हुए हैं । अजयमीढ़ पुरुमीढ़ क्षत्रिय थे और सूत जी के पिता क्षत्रिय तथा माता ब्राह्मणी थी जिस के यहां बड़े-बड़े ऋषि मुनी ब्रह्मण आदि कथा सुनने आया करते थे । यहां ऋषि बल्मीकी जिन्होंने निम्न वर्ण से उच्च पद प्राप्त किया और महान् ग्रंथ बाल्मीक रामायण लिखी । महाभारत, वेद शास्त्र पुराणों के रचयेता महऋषि वेदव्यास हुए । इत्यादि, इस प्रकार समय के गुजरते-गुजरते प्रजा की बढ़ोतरी के साथ अनेक राज्यों की स्थापना होती गई । निम्न वर्णों के लोग उच्च पद प्राप्त करते देख और निम्न वर्ण की स्त्रियों से हुई सन्तानों का उच्च वर्णीय लोगों की सम्पत्ति पर अधिकार होता देख उच्च वर्णीय धर्मावलम्बी ठेकेदारों में यह भावना उत्पन्न होने लगी कि निम्न वर्णीय स्त्रियों की संतान का उच्च वरृण के लोगों की सम्पत्ति पर अधिकार क्यों हो ? एवं निम्न वर्ण के लोगों को उच्च पद क्यों दिया जाय ? तब उन उच्च वर्णीय ध्वजाधारी धर्मावलम्बी ठेकेदारों द्वारा मनुस्मृति आदि अनेक धार्मिक ग्रंथों के अनेक लेख एवं व्याख्याओं को गलत ढ़ंग से प्रस्तुत कर दिया गया । जैसे शुद्रों को पढ़ने, लिखने, किसी प्रकार की सम्पत्ति रखने का अधिकार न हो । उच्च वर्ण की कन्या निम्न वर्ण को न ब्याही जाए । निम्न वर्ण की स्त्री से सम्पर्क हो सकता है, परन्तु इन्हें दासी तक ही सीमित रखा जाए । यहां तक ही नहीं एक वर्ण के दूसरे वर्ण से पुरुप तथा दूसरे वर्ण की स्त्री से होने वाली सन्तान को वर्ण शंकर कहा जाएगा और उन की अलग जाति घोषित की जाने लगी जैसे, पिता क्षत्रि, माता ब्रह्मणी इन की जाति सूत हुई जिन्हें रथ हांकने का कार्य दिया जाता ।

वैश्य पिता एवं माता ब्रह्मणी इन को विदेह कहा गया इन्हें रक्षा करने का कार्य दिया गया । क्षत्रि पिता और वैश्य माता इन की मगध जाति हुई । वैश्य स्त्री और शुद्र पुरुष की संतान को अयोग्य बढ़ई कहा गया तथा शुद्र पिता एवं क्षत्रि स्त्री से निषाद् ।

शुद्र पिता एवं ब्रह्मण स्त्री की सन्तान को अतिनिपेद चंडाल जल्लाद, कजंर आदि कहा गया इस प्रकार आर्यो धार्मिक कठोरता के कारण वे मनुस्मृति आदि, ग्रंथ सर्वहितकारी होने के बजाए महा पक्षपाती, अत्याचार वर्धक प्रतीत होने लगे एवं तब वर्ण व्यवस्था की जगह अनेक उचित, अनुचित कार्य रुपि जातियों ने ले ली, और सब में अन्तर्जातिय ऊँच, नीच संघर्ष

भावना के फल स्वरुप एक-एक जाति की अनेक जातियां होती गई। जिन की संख्या का अनुमान लगाना भी कठिन है।

इन्होंने ऐसा विकट रुप धारण कर लिया कि अनेक संत महात्मा अन्दोलनकारी भी काबू नहीं कर सके जैसे महात्मा बुद्ध, गुरू नानक देव, महाऋषि दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ, संत नामदेव दर्जी, कबीर जुलाहा, संत रविदास, जिन की शिष्या मीरा बाई थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भी सफलता नहीं मिली। स्वामी विवेकानन्द जी ने "वर्तमान भारत" नामक पुस्तक में सत्य कहा है कि निम्न वर्ग का कोई व्यक्ति ऊपर आया भी तो इन धर्मावलम्बी ठेकेदारों ने उसे पद् प्रलोभन आदि देकर अपना लिया ताकि उस के समाज को उसका लाभ प्राप्त न हो सके। अपितु अपने निकम्मे विमुख लोगों को इनमें धकेलने का प्रयत्न किया जाता रहा है। यह तो खुद मियां फ़ाज़िल औरों को नसीहत वाली बात है। इसलिए आप और हम क्या आशा कर सकते हैं, कि यह जातिवाद सहज समाप्त हो जाएगा। इसलिए कहा जाता है कि वर्णव्यवस्था ही जातिवाद और सभी समस्याओं की जन्म दाता है।

भारतीय कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय समीक्षा

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी ।
क्यों हुआ, कैसे हुआ, मिल बैठ के सोचें सभी ।।

अखिल भारतीय कश्यप राजपूत समुदाय एक ऐसा विशाल समुदाय है, जिसमें किसी एक जाति या प्रांत के लोग ही नहीं अपितु भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न स्थानीय जातियों के नाम से पुकारे जाने वाले वे लोग सम्मिलित हैं जिन के गुण कर्म स्वभाव वर्ग तथा व्यवसाय मिलते जुलते हैं । जिन की संख्या भारत में लगभग १५ करोड़ है । अनेक जातिय ज्ञाताओं ने इन्हें प्रारम्भिक, प्राचीन एवं मध्यकालीन मिश्रित राजवंशी बताया है । यह लोग बार-बार राजनैतिक बर्बरतावादी टकराव व धार्मिक कठोरता के कारण पिछड़ते-पिछड़ते अधिकार विहीन, हैयहीन अवस्था में जहाँ-तहाँ जैसा तैसा वर्ग, व्यवसाय स्थान आदि मिलता गया, अपनाने के लिए बाध्य होते गए एवं उनकी वही कार्य अनुसार भ्रंश, उपभ्रंश, जातियां बनती चली गई । ज्यों-ज्यों समाज सुधारकों एवं अन्दोलनकारियों ने जातिवाद और धार्मिक कट्टरता का विरोध किया त्यों-त्यों निम्न वर्गियों में सामाजिक उत्थान का आभास होता गया और अनेक सामाजिक जातिय समुदाय संगठित होने लगे । बढ़ई, खाती से जांगड़ा ब्रह्मण, हेडी जाति से नायक, लुहार जाति से पांचाल ब्रह्मण, नाई जाति से कुलिन ब्राह्मण दर्जी छीपी जाति से रोहेला राजपूत, सुनार जाति से मेढ राजपूत, माली से सैनी आदि जातियों की देखा-देखी झीमर, धीमर, कछप, कछवाहा, कहार, महार, महरा, मल्हा, खेवट, निषाद् आदि अनेक जातियों ने मिलकर अपने इस समुदाय का नाम कश्यप राजपूत समुदाय रखा था । ताकि ये लोग भी अपने अनेक खिन्न-भिन्न हुए भ्रंश-उपभ्रंश नामांकन जातियों के स्थान पर एक ही समुदाय के नाम पर सामूहिक रुप से एकत्रित होकर अपना सर्वांगीन (सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक) विकास कर सकें ।

भारतीय कश्यप राजपूत समुदाय के प्रान्तीय प्रचलित नाम।

१. हरियाणा :

धीमर, झीमर, महार, बुड़ना आदि।

२. पंजाब :

धीमर, झीमर, झवर, जुहुर, महरा, केवट, धुरिया इत्यादि।

३. हिमाचल :

धीवर, झंवर, मेदा इत्यादि।

४. देहली प्रांत :

धीमर, धीवंर, झीमर, कहार, महार, बुड़ना, मल्हा, निषाद, तुराहे इत्यादि।

५. उत्तर प्रदेश :

धीवर, झीमर, कहार, महार, बुड़ना, मल्हा, खेवट, काँछी, कछवाहा इत्यादि।

६. राजस्थान :

धीमर, धुरिया, कहार, महार, बुड़ना, खेवट इत्यादि।

७. महाराष्ट्र :

धीमरा, धीमहार, कहार, मांछी, मछवाहा, कछप, कछवाहा, भोई, बसतर, हार, कंतरा, मांगर, कुवालीगर, स्ड़ील, सोंगर इत्यादि।

८. मध्य प्रदेश :

धीमर, खेवट, कहार, तुराहा, मांछी, मछवाहा, भोई इत्यादि।

९. गुजरात :

भोई, ब्याघर इत्यादि।

१०. बिहार :

धीमर, मल्हा, कुराटा इत्यादि।

११. असम :

धीमर, मल्हा, मांझी, वथवा, बाथम, केवट, निशाद, खलवात, महेसी, दारु, विन्द, गोरिया, बनकार, कुराटा इत्यादि ।

१२. पश्चिम बंगाल :

धीवरा, कहार, खेवट, निषाद, वथवाहा, बनाफर, मल्हा, माछ्रु, खरैवार, तुराहा, झावा, महरा, मांझी इत्यादि ।

१३. आंध्र प्रदेश :

कश्यप, कापु, बानी, विद्यमान, विदूजन, रेडी, पाल, कुराचा, जालारी, विस्था आदि ।

१४. कर्नाटक :

कहार, मेदा, गोला, गंगा आदि ।

१५. उड़ीसा :

कोट, खातिया, मछवाये, महेशी, गिरी, गरया, पाली इत्यादि ।

१६. केरला :

विदूकांत, कोदन्वी, अलवार, चावल, कारना, विलान, बलोथवान इत्यादि ।

१७. तामिल नाडू :

अग्नी कोल, क्षत्रिया, पाली, वर्था, सुर इत्यादि ।

१८. त्रिपुरा :

कहार, विन्द, बावरी इत्यादि ।

१९. मणिपुर :

गंगा, कोल, कहार, प्रीवार आदि ।

धींवर एवं झीमर जातिगत नामांकण अन्तर तथा इनका मूल स्थान

बुजुर्गों के कथनानुसार जब परम् पूज्य बाबा कालू जी महाराज ने नारद को गुरु ज्ञान दिया था और उसे लख चौरासी योनियां भोग ब्रम्ह पद प्राप्त करने की विधि बताई थी। तब नारद की यह करतूत देख सभी देवता चकित रह गये और नारद को अपनाना पड़ा, अन्यथा उसे कोई निकट बैठने नहीं देता था। नारद द्वारा जब उनके गुरु का नाम सुना तब देवताओं ने उनकी सूझ-बूझ और अकलमन्दी के आधार पर कालू जी की धींवर(अत्यन्त बुद्धिमान) कहके सराहना की और उनको कालू की जगह कण्व नामांकण ऋषि पद दिया था। इस प्रकार धींवर नाम प्रचलित हुआ बताते है। परन्तु आधुनिक विचारधारा के अध्ययन कर्त्ताओं का यह अनुमान सत्य प्रतीत होता है कि प्राचीन चन्द्र वंशीय महाराजा के नाम से बिगड़ते-बिगड़ते झीमर जातिगत उपनाम प्रचलित हुआ।

हस्थनापुर व अजयमीढ़ का ज़िक्र प्राचीन राजा, महाराजाओं के वृतान्त में हो चुका। अजय मीढ़ का जन्म स्थान हस्थनापुर था तथा जितनी लम्बी वंश बैल अजय मीढ़ की चली इतनी किसी अन्य क्षत्री वंश की नहीं चल पाई, कहते हैं कभी सारा उत्तर भारत इनकी छत्र-छाया में रहा है। प्राचीन काल से लेकर महाभारत के बाद भी राजपूतों तक किसी न किसी राजवंश के नाम से उभर कर सामने आते रहे हैं। जिनके शाखा-कुल गौत्रों आदि का कोई अनुमान नहीं इसलिये कह सकते हैं कि हस्थनापुर के मूल अधिकारी झींवर थे। लगता है इस कारण देश के अन्य भागों से उत्तर प्रदेश, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और दिल्ली के आस-पास अब भी इनकी आबादी अधिक है। इनके गुड़-खांडसारी, फल-फ्रूट, सब्जी उत्पादन, नाव संचालन, टोकरे आदि बनाने के कार्यों को देख इन्हीं जैसे पिछड़े हुए अन्य देशी, विदेशी, क्षत्री, वैश्य, ब्राम्हण आदि भी इनमें मिलते रहे। तथा यह लोग भी दूसरी कार्यरूपी जातियों में जाते रहे। इसीलिये एक-एक जाति के गौत्र कई कई जातियों में पाये जाते है। सनैः-सनैः सभी जातियों में ऊंच-नीच अलगाव वादी भावनाओं के फलस्वरूप उप जातियां बनने लगी, जैसे हम अपने समुदाय में कहार, महार, बाथम, बथवाहा, बुड़ना, मल्लाह, निषाद आदि उपजातियां देखते हैं।

समय-समय पर महापुरुषों, महान आत्माओं ने इस अलगाववादी जातिवाद को खत्म करके पुनः वर्ण व्यवस्था की भांति सार्वजनिक संगठन एवं संघ बनाने का प्रयत्न किया था। जैसे महा ऋषि कण्व, महावीर भगवान, महात्मा बुद्ध इत्यादि-इत्यादि का नाम लिया जाता है।

आज के दौर में जिस प्रकार झींवर, धींवर आदि समुदाय संगठित करने का प्रयत्न जारी है इसी प्रकार पहले भी महापुरुषों द्वारा कश्यप नाम से इन्हें संगठित करने का प्रयत्न किया प्रतीत होता है। इस विषय में कहते हैं कि किसी समय महाऋषि कण्व मिश्र देश गये थे जहां बहुत से प्राचीन क्षत्री, वैश्य क्रिया विहीन हुए शूद्रों से भी निम्न मलेच्छ आदि हुए बैठे थे। वहां उन्होंने भारतीय प्राचीन धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जिसके फलस्वरूप उनके साथ दस सहस्त्र शिष्य भारतीय शिक्षा प्राप्त करने भारत आये थे और वह धींवर, झींवर आदि भारतीय जातियों में मिलके कश्यप वंशी काश्यपूत कहलाये थे। जिसका कुछ वृतान्त भविष्य पुराण (भाग एक) में मिलता है, इस विषय का किसी महानुभाव द्वारा भेजा गया श्लोक :

कश्यप, कण्व विप्र ऋषि मिश्र देश : गतो पुरा।
कठं कुरुवन्तु कारुका झींवर बाढ़ी तक्षका।।
दशः साहन्स्र आन दित्या च भारतीय भाषा शिक्षयेन।
धींवरे मेल दित्या च तस्मात कश्यप स्मृतयान।।

कश्यप समुदाय के महापूज्य प्रवर्तक एवं महान् आत्माऐं

प्राचीन सांस्कृतिक धर्म ग्रंथों के अनुसार सृष्टि के आदि प्रवर्तक का नाम ब्रह्मा कहा जाता है, जिनके द्वारा उत्पन्न हुए मरिचि दक्ष अत्रि, अंगिरा भृगु वशिष्ठ पुल्ह, पुलसत्य इत्यादि प्रजापतियों द्वारा इस संसार का प्रारम्भिक विस्तार जब होने लगा तब दक्ष प्रजापति ने अपनी सभी कन्याएं अन्य प्रजापतियों को दे दी थी। इन सब में सब से अधिक तेरह कन्या मरिचि के पुत्र कश्यप को ब्याही थी। जिन से चर, अचर जी: जन्तु देवी, देवता, दैत्य, दानव, मनु आदि की उत्पत्ति के साथ-साथ यह सृष्टि भरपुर हुई। इसलिए प्राचीन सत्यपथ ब्राह्मणा में लिखा है कि "तस्मात् कश्यप श्मां प्रजा" महऋषि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारवें समुलाश में लिखा है कि

"कश्यप कस्मात् पष्यको भवतिति"

अर्थात सृष्टि का कर्ता परमेश्वर है जिसका नाम कश्यप है। जो सब जीव, जन्तु, चर, अचर पशु, पक्षी संसार को यथावत् देखता है। वही पष्यक् एवं कश्यप कहा जाता है। इसीलिए आप और हम ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शुद्र कुछ भी कहते रहें। अपितु हम सब कश्यप गोत्रिय पौत्र, पौत्री, भाई बहिन हैं। जिसकी सत्यता का प्रमाण हमारे सभी प्रचीन धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। यहाँ तक ही नहीं किसी महापुरुष ने कहा है कि यदि किसी कारणवश अपना गोत्र याद नहीं रहता तो उसका कश्यप गोत्र कहा जा सकता है।

कच्छप अवतार :

अर्थात् जल जन्तु तथा पानी में काम करने वाले को कच्छप (कश्यप) अवतार कहा गया है। जिसका वृतान्त पुराणों आदि में समुद्र मंथन प्रकरण में हुआ है।

कश्यप राज्य :

कश्यप जी स्वयं बुद्धिमान ऋषि तो थे ही परन्तु राजशिरोमणि सम्राट क्षेत्रपति (क्षत्रिय) अर्थात् क्षत्रिय नाम के निर्माता भी कहे जाते हैं, जिनकी अधिकार सीमा में भारत ही नहीं बल्कि सृष्टि के अधिकांश द्वीप तथा कश्यप सागर का नाम विख्यात हुआ है। जिसे आजकल कैस्पियन सी कहा जाता है। यहीं पर समुद्र मंथन देवासुर संग्राम हुआ प्रतीत होता है। यहाँ

लक्ष्मी इत्यादि चौदह रत्न प्राप्त हुए थे। कल्हणा कृत राजतिरगंनी अनुसार सप्तम् मनुवांतर के समय सतीसर ताल में जलवैभव असुर का वध करके कश्मीर की स्थापना कश्यपों ने की थी। कश्मीर को उन्नत व्यवस्था में लाने का श्रेय कश्यपों को ही मिलता है। कश्मीर में कश्यपागार (गुफा) आज भी कश्यपों की कीर्ति कथा कह रही है।

कश्यप पुत्र सूर्य के मनु महाराज द्वारा वर्ण व्यवस्था (ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र) प्रचलित हुई थी। इसलिए कहा जाता है कि क्षत्रिय (राजपूत) वर्ण के मूल प्रवर्तक महऋषि कश्यप थे। भारत की हर सभ्यता संस्कृति के दौर में कश्यपों का नाम अवश्य ही आता रहा है।

दैत्यराज हरिण्य कश्यप :

हरिण्य कश्यप के पुत्र प्रहलाद भगत हुए। हरिण्य कश्यप की बहन का नाम होलिका था। होली का त्यौहार उसी के नाम पर मनाया जाता है। इसी कुल में दानवीर महाराज बली हुए जिन्होंने इन्द्र देवता को पराजित करके बन्दी बनाया था।

महावीर हनुमान कश्यप :

महाराजा रामचन्द्र जी के समय पवन पुत्र महावीर हनुमान हुए जिन की जाति का नाम कपी (कश्यपी) था। कपी का अर्थ वानर (बन्दर) समझ के हनुमान को बन्दर (वानर) बताया है। दक्षिण में आज भी एक जाति का नाम कपी है, जिसे कपु कहते हैं। रेडी भी इसी की शाखा है।

महात्मा बुद्ध एवं कश्यप :

महात्मा बुद्ध के गुरु कश्यप पुत्र अलार तथा बुद्ध के प्रधान शिष्य महाकश्यप थे जिन्होंने दीर्घकालीन हिन्दू धर्म के कट्टर पंथियों द्वारा लगाए गए धार्मिक कठोर बंधनों में जकड़ी हुई भारतीय जनता को स्वतन्त् कराने का कार्यक्रम किया था। जिससे दलित दास दरिद्र घोषित की हुई जातियों को भी अपने-अपने स्वतन्त्र क्षेत्रीय राज्य स्थापित करने तथा घोर दरिद्र दासता से मुक्त होने का रास्ता मिला और अनेक छोटी-बड़ी जातिय नामांकन राज्यों की स्थापना होने लगी, जैसे चन्द्र गुप्त मौर्य, अशोक, नन्द, हर्ष, विक्रमादित्य इत्यादि तदोपरान्त अनेक राज्यों रजवाड़ों के संगठन से राजस्थान तथा क्षत्रियों की जगह राजपूत राजपुत्र समुदाय का नाम प्रचलित हुआ। जिसका उल्लेख "हिस्टरी ऑफ इंडिया" के राजपूत उदय प्रकरण में हुआ है। इस प्रकार कहा जाता है कि कश्यप सर्वव्यापी चतुवर्णीय, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य तथा आदि छोटी-बड़ी जातियों का कर्णधार है।

महर्षि कण्व

इनका जन्म चन्द्रवंशीय क्षत्रिय कुल में हुआ और जन्म स्थान प्रयागराज। जिनके पिता का नाम अप्रतीर्थ जिन्होंने क्षत्रिय कुल से ब्राह्म ऋषि पद पाया। पुरुवां कुलीन महाराज दुष्यंत कण्व का भतीजा था। इन्हीं के आश्रम पर दुष्यंत शकुन्तला का विवाह सम्पन्न हुआ था। कण्व का पुत्र मेधतिथि जिसके वंशधर कण्वायण ब्राह्मण हुए।

निषादराज

इनके बारे में रामायण में लिखा है कि जब महाराज रामचन्द्र जी को चौदह वर्ष का वनवास मिला और वे लक्ष्मण सीता जी सहित वनवास को जा रहे थे तब उनका निषादों से सम्पर्क हुआ था। जहाँ निषादों के राजा निषादराज ने इन्हें दरिया पार कराया था। तब राम ने उनकी सेवा का बदला चुकाने के लिए अगूँठी पेश की थी। उसे निषादराज ने लौटाते हुए कहा था कि हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम,मुझे कुछ नहीं चाहिए। जहाँ तक हम आपको पार करा सकते थे करा दिया। जब आपका समय अनुकूल हो तब आप मुझे नहीं मेरे समाज को पार करा देना, यही मेरे लिए काफी है।

भाई हिम्मत सिंह

जिस समय सिक्खों के दसवें गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज हिन्दू धर्म की आन-बान और मर्यादा के लिए मुसलमान मुगल आक्रमणकारियों से लड़ रहे थे तब सन् १७५६ ई. की बैसाखी के दिन आनन्दपुर साहब में पाँच प्यारों का बलिदान मांगा था तब इस अमर शहीद भाई हिम्मत सिंह ने अपना शीश भेंट किया था और ये पाँच प्यारों में सुशोभित हुए थे। इन्होंने हिन्दू धर्म के लिए लड़ते-लड़ते चकमोर साहब की रणभूमि में मुगल फौज के जरनैल सदीकखान को मार कर स्वयं शहीद हुए थे।

मोती मेहरा

जिस समय गुरु गोबिन्द सिंह के पुत्रों को दीवार में चिनवाने के लिए बन्दी बनाया था उन बच्चों को जेल में चोरी-चोरी दूध आदि पिलाने के आरोप में कश्यप समुदाय के मोती मेहरा नामक व्यक्ति को तत्कालीन शासकों ने कठोरत्तम दण्ड दिया था। सारांश यह है कि कश्यप समुदाय का नाम राजवंशी तो है ही तथा प्रत्येक युग में देश, धर्म, सांस्कृतिक कार्यों में भी इनका पूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान युगी स्वतंत्रता संग्राम में समाज के जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया जिनमें अत्यधिक गुजर चुके तथा जीवित हैं। हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं।

सिद्ध श्री बाबा कालू जी महाराज



प्रिय पाठको, बाबा कालू का मौखिक वृतांत अस्मरणीय काल से कश्यप समुदाय में ही नहीं बल्कि दूसरे लोगों में भी प्रचलित है। कहते हैं कि बाबा कालू नारद के गुरु थे। वे जंगल में रहते तथा प्रतिदिन किसी सरोवर में मछली, फल-फूल आदि तोड़ कर लाया करते। कहते हैं जब ब्रह्मा आदि देवताओं ने नारद को बेगुरा अस्वच्छ कहकर अपने यहां से निकल जाने को कहा तब लज्जित हुए नारद ने रोते-राते देवताओं से पूछा कि हे प्रम पूज्य महान आत्माओं, मुझे ये बताइए कि मैं अब कहां जाऊं और किसे गुरु बनाऊं ताकि मैं आपके निकट रह सकूं। तब उन्होंने बताया कि अब तेरा जंगल में जाने के सिवाय कोई ठिकाना नहीं है। वहां प्रातःकाल सर्वप्रथम जो व्यक्ति मिले उसी को गुरु बना लेना, उसी से तेरा कल्याण होगा। उसी के बताए रास्ते से हमारे निकट आ सकते हो अन्यथा नहीं। इतना सुन नारद वहां से चल पड़ा। भटकते-भटकते कई दिन के पश्चात् प्रातः कालू का मिलन हुआ। तब नारद ने चरण स्पर्श कर कालू जी से वंदना की कि हे महाराज मैं आपको गुरु बनाना चाहता हूं। आप मुझे शिषय कह आशीर्वाद देने की कृपा करें। इतनी बात सुन कालू ने नारद को पुचकारते हुए कहा कि पुत्र घाबराने की आवश्यकता नहीं। शांतिपूर्वक अपना परिचय दो। आपका इस उम्र में इस तरह जंगल में भटकने का क्या कारण है? तब नारद ने रोते हुए बताया कि मैं ब्रह्मा आदि देवताओं की दासी का पुत्र हूं। जब तक मेरी मां जीवित रही तब तक मुझे किसी ने बेगुरा अस्वच्छ नहीं कहा परन्तु अब मेरी मां का निधन होने के पश्चात उन देवताओं ने मुझे अपने यहां से निकाल दिया। इसलिए मुझे यहां आने और गुरु बनाने की आवश्यकता पड़ी। यह सुन कालू ने कहा कि यदि मुझे गुरु मानने से तेरा कल्याण होता है तो जा कह दे कि मुझे मेरा गुरु मिल गया है। जब नारद लौट कर गया तो देवताओं ने पूछा कि तुझे गुरु मिला? तब नारद ने जवाब दिया कि मिला तो परन्तु ना के बराबर। ये सुनकर देवता बोले कि जा निकल जा यहाँ से। तूने गुरु का अपमान किया है। अब तू लख चौरासी योनियाँ भोग और पुनः जन्म ले तब गुरु के बताए रास्ते से हमारे निकट आ सकता है अन्यथा नहीं। इतना सुन नारद वहीं लौट गया और कालू जी से क्षमा मांगते हुए सब हाल बताया। कालू जी ने फिर उसे नादान समझ कर क्षमा किया और लख चौरासी योनियाँ भोगने के लिए योगाभ्यास, ध्यान और धारणा के साथ समाधि में शरीर का त्याग तथ पुनः जीवित होने की शिक्षा दी और कहा कि जा अब तू लख चौरासी बार नहीं कई लख चौरासी योनियों में जाके पुनः जीवित हो सकता है। और उनसे पूछते जाना, वह जिस योनि में कहें जाकर लौटते रहना। तब नारद ने ऐसा ही किया। इस प्रकार कालू द्वारा नारद को बताई विधि का देवताओं पर महाप्रभाव पड़ा और कहने लगे, हे नारद आपका गुरु कोई जन साधारण प्रतीत नहीं होता। किसी दैविक शक्ति का प्रतीक है। लोग कहते हैं कि उनमें

पांच पीरों अर्थात् देवताओं की करामात थी। वह गंगा, जमुना, सरस्वती, शिव और परमपिता भगवान कश्यप की आराधना करते थे। इसके अतिरिक्त कहते हैं कि एक दिन जब सरोवर से वह फल-फूल तोड़ रहे थे तब क्षमात् किसी राजा की सवारी उधर आ निकली और घोड़ों की घुड़दौड़ सुन कालू जी घबरा गए। ऐसा न हो कि ये मुझे यहां से फलफूल तोड़ने का दोषी समझ दण्ड देने आए हों। इस प्रकार भयभीत हुए कालू जी भीगे तन भभूत रमा साधुओं की भांति दमघोट समाधि लगाकर बैठ गए। जब राजा निकट आए तब उन्होंने देखा कि ये तो कोई संत महात्मा समाधि लगाए बैठा है। तब राजा ने घोड़े से उतर कालू जी को चरणस्पर्श नमस्कार किया परन्तु भयभीत कालू जी ने आँख तक न झपकी। इसी प्रकार राजा के सिपहसालार साथी भी चरण छूते चले गए। तत्पश्चात कालू जी को आत्मज्ञान हुआ कि भक्ति में ही अटल शक्ति है। और कहा,

"बाणा बड़ा दयाल का तिलक छाप और माल।
यम डर पै कालू कहै भय मानै भोपाल।।"

इस प्रकार उन्होंने अटूट भक्ति की और जगत विखयात् संत हुए. कहते हैं कि गुड़ खांडसारी और समुद्रपार विदेशों में जाने के लिए सर्वप्रथम नांव का प्रचलन उन्होंने किया, इस प्रकार कालू जी भगत ही नहीं वैज्ञानिक भी थे। इनके अनेक शिष्य और कई जगह पूजा स्थल एवं मुख्य स्थान होने की संभावना व्यक्त करते हैं जैसे प्रयागराज, ऋषिकेस, हरिद्वार, कुल्लु, कश्मीर इत्यादि।

इस प्रकार इस वृतांत को सुन आज हमारे ही कुछ लोग हमसे पूछते हैं कि इतना कुछ होते हुए भी ऐसे महापुरुष का जिक्र पौराणिक व आधुनिक ग्रन्थों में क्यों नहीं?

इसका उत्तर यह है कि बहुत पुरानी बात होने से हमारे लोगों में शिक्षा का अभाव व दरिद्रता के कारण इनका वास्तविक नाम भूल उपभ्रंश नाम कालू कहने लगे हों या इनका घरेलू नाम कालू हो और संन्यास लेने के बाद कुछ और नाम रखा गया हो। जैसा कि पुरानी प्रथा प्रचलित है कि जब कोई व्यक्ति घरबार छोड़ सन्यास लेता है तब उसके गुरुजन उसका नाम बदलते हैं। इस प्रकार के उदाहरण बहुत हैं। इसलिए हम भी यथासंभव अध्ययन तथा पूछताछ के बाद जो निष्कर्ष निकाल सके वो ये हैं कि सम्भवत् लोग कण्व को ही कालू कहते हैं। जिनका वृतांत इनसे कुछ ना कुछ मिलता है तथा इनका पैतृक सम्बन्ध और वंशावली भी इस समुदाय के लोगों से मिलती है। इसलिए कण्व वृतात भी इसी पुस्तक में आगे दिया है। निम्न प्रकार किसी ने सत्य कहा है –

जिन ढूंढा उन पाइया गहरे पानी पैठ।
मैं बवुरा बुढ़न डरा रहा किनारे बैठ।।

संगठन सभाऐं व समितियां

साथियो, कश्यप समुदाय में सर्वप्रथम सामूहिक जागृति की लहर पंजाब से चली थी। क्योंकि आर्य समाज का मुख्य केंद्र पंजाब रहा है। सारे उत्तर भारत में आर्य समाज और कांग्रेस की बढ़ोतरी का श्रेय पंजाब से लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे नेताओं को जाता है। आर्य समाज ने ही ऊंच-नीच, जात-पात, छुआ-छूत, रुढ़ीवाद का विरोध तथा सार्वजनिक शिक्षा का अभियान चलाया था। इन्होंने ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए लोगों को प्रेरित किया था।

जब सन् १९१९ के अप्रैल में बैशाखी के दिन अमृतसर के जलियां वाला बाग में मेले पर आए निहत्थे लोगों पर अंग्रेजी हुकमरां जनर्ल डायर द्वारा गोली चलवाए जाने पर अनगिनत स्त्री, पुरुष, बच्चे व वृद्धों को गोली का शिकार होना पड़ा, जिसमें मेला देखने आए अनेक धमार्थ (प्याऊ) पानी पिलाने वाले अनेक कश्यप समुदाय के लोग भी मारे गए थे। जिसका रोष प्रकट करने के लिए जगह-जगह अंग्रेजों के विरुद्ध जलसे जलूस इत्यादि निकाले गए। अनेक क्रांतिकारी नेताओं के साथ कश्यप समुदाय के बाबू निहाल सिंह अमृतसरी, बाबू रत्न सिंह एड्वोकेट, विशम्बर नाथ चालोकिया लाहौरी, सत्यपाल मेहरा जैसे नेता भी गिरफ्तार हुए थे, जोकि लाला लाजपतराय, डा. कचलु जैसे नेताओं के समर्थक गर्म दल कांग्रेस के मैंबर भी थे। कई लोगों की अंग्रेजी अफसरों से मुठभेड भी हुई थी। गिरफ्तारी के भय से कुछ लोग उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि प्रान्तों में जा छिपे। इधर उधर घूमते फिरते सामाजिक एवं रचनात्मक कार्य करते उत्तर प्रदेश में जिला बिजनौर निवासी श्री दुर्गादत्त कुशन एवं श्रीमती मिसरी देवी दोनों पति, पत्नी शिक्षित एवं सामाजिक कार्य कर्ता उभर कर सामने आए। जिन्होंने एक प्राइवेट शिक्षा संस्थान (पाठशाला) का संचालन किया था। जिसमें कश्यप समुदाय के ही नहीं अपितु सभी शुद्र, दलित बाल बालिकाओं को पढ़ाने का (प्रावधान) प्रबन्ध था। जिनकी बड़े-बड़े सुधारक नेताओं ने प्रशंसा के साथ-साथ सहयोग भी दिया। अछूतों के बच्चे पढ़ाने की नाराज़गी से रुढ़ीवादी कट्टरपंथी लोग तो नाराज़ होने ही थे, परन्तु स्वजातिय बंधु भी नाराज़ हो गए। फिर भी वह अपने इरादे पर अडिग रहे। सनै-सनै इनका स्वजातिय सम्पर्क उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तक होता गया। उस समय के सभी कौमी रहनुमाओं की यही धारणा थी कि किसी तरह यह समाज संगठित, शिक्षित हो ताकि इस शुद्रता की जलालत से बचा जा सके।

उन्ही दिनों पंजाब में क्रिमनल ट्राईब एक्ट १८९२ के अन्तर्गत धीमर एवं झीमर आदि नांमाकन जातियों को जरायम पेशा शिरकीबन्द, खानाबदोश घोषित करने की चर्चा जोरों पर

थी। सभी लोग चिंतित अवस्था में यही महसूस करते दिखाई दिये कि हम प्राचीन-राज वंश धर होते हुए भी शूद्र और अब शूद्रों से भी निम्न खानाबदोश होंगे इसका समाधान कौन करे। लोग यूं घबराते थे कि उन दिनों घुमतरु कबीलों को थाने तहसीलों में हाज़री तथा अन्य निम्न जातियों को बेगार देना अनिवार्य था। जिसमें महिलाओं की भी छूट नहीं थी।

अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा

जब पंजाब के जलियांवाला बाग में हुए गोलीकांड के विरुद्ध जनता ने रोष प्रकट करने के लिए जलसे जुलूस एवं हड़तालों का सिलसिला जारी किया तब कश्यपों (झीमरों आदि) ने भी सभी सरकारी कार्यालयों, थाने, तहसीलों में पानी की हड़ताल की थी । इस रंजिश में इन लोगों को परेशान करने के लिए इनके विरुद्ध तरह-तरह के मुकद्दमे, गिरफ्तारियां, मारपीट के अलावा सम्पूर्ण जाति को शिरकी बन्द घोषित करने की संभावना बढ़ी । अंग्रेजों को इस प्रकार की घटिया सलाह देने में कई एक प्रांतीय सरकार समर्थक सर सलाहकारों का हाथ था । उधर महिलाओं से बद्सलूकी, बेगार तथा हर घर गली मोहल्ले में फेरी के कामों से सामाजिक तौहीन भी एक जातीय समस्या थी । इन सब जातीय समस्याओं का समाधान कैसे हो, इस बात को लेकर चन्द जातिय बुद्धिजीवि लोगों की एक विचार गोष्ठी अर्थात मीटिंग दिनांक २१ अक्तूबर सन् १९२३ को कसबा नहटोर जिला बिजनौर (उ० प्र०) में हुई । क्योंकि उन दिनों पंजाब में धारा १४४ के तहत पांच आदमी भी एकत्रित होना कानूनी जुर्म था ।

इस विचार गोष्ठी में एक जातीय संगठन (सभा) बनाने का निर्णय लिया गया । जिसके द्वारा सभी जातीय समस्याओं के समाधान हेतु संघर्ष किया जा सके । फैसला हुआ कि इस जातीय संगठन (सभा) एवं समुदाय के नाम का फैसला एक महासम्मेलन से लिया जाए। ताकि सभी लोग अपने विचार प्रकट कर सकें। जिसके लिए निश्चित हुआ कि यह महासम्मेलन दिनांक १३,१४,१५ नवम्बर सन् १९२३ को नज़ीबाबाद(उप्र) में होगा । यह सम्मेलन निश्चित तिथि एवं समयानुसार धूम-धाम से हुआ । इस महासम्मेलन में अन्य जातीय समस्याओं के साथ-सा सभा के नाम की चर्चा अधिक रही । कुछ लोगों का सुझाव था कि सभा का नाम राजपूत सभा रखा जाए और हमें अपने नाम के साथ अन्य राजपूतों की भांति ठाकुर शब्द लगाना चाहिए । इस प्रकार राजपूत नाम के विषय में बोलते हुए कुछ वक्ताओं नें अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि अकेला राजपूत नाम रखने या कहने से हमारा सामाजिक उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा । इसलिए राजपूत नाम के साथ किसी प्राचीन प्रवर्तक का नाम जोडा जाए ताकि हमारा प्राचीन राजवंशीय होना प्रतीत होता रहे । इसके बाद पंजाब (जो कि उन दिनों उत्तर प्रदेश से हिमाचल प्रदेश, वतर्मान पाकिस्तान, हरियाणा सहित दिल्ली तक महाप्रदेश था ।) के लोगों ने सुझाव रखा कि क्यों न इस सभा का नाम मेहरा या महार

रखा जाए, जो कि क्षत्रि राजपुत्र परिचायक नाम है। परन्तु इस पर भी महारों के सिवाय बुड़ना इत्यादि अन्य शाखाओं के लोग सहमत नहीं हुए। तब यह प्रस्ताव अगली सभा (मीटिंग), सम्मेलन में प्रस्तुत करने के लिए छोड़ दिया, ताकि तब तक कोई नया नाम प्रमाण सहित प्राप्त हो सके। यह अगला सम्मेलन दिनांक २९,३०,३१ दिसम्बर १९२३ को सांवल दास धर्मशाला बिजनौर में हुआ था। जिसमें वही सभा के नाम की चर्चा होत-होते एक नया सुझाव प्राचीन क्षत्रि राजपूतों के मूल प्रवर्तक कश्यप जी का नाम जो लिया गया, तब चारों ओर से हर्ष उल्लास, जय-जयकार होने लगी और कश्यप राजपूत नाम का प्रस्ताव पास हुआ, तथा सभाका नाम अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा रखा गया। जिसका मुख्य कार्यालय पंजाब की राजधानी लाहौर स्थापित किया गया। इस सम्मेलन में भाग लेने आए पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के लोग तो सक्रिय थे ही तथा जम्मू, कश्मीर, राजस्थान, देहली के साथ-साथ दक्षिण भारत के अनेक लोग भी उपस्थित थे। जैसे दुर्गादत्त कुशन, श्रीमती मिश्री देवी, मलखान सिंह, लखनपाल, उत्तर प्रदेश, श्री नरबहादुर, झांवर सिंह खेवट, श्री छज्जन सिंह बुड़ना सोनीपत, श्री लज्जेराम टंडन करनाल, श्रीमान रईस अमरनाथ चौहान कोहमरी तथा बाबू मूलचंद जंजवा अमृतसरी बाबू रत्न सिंह एड्वोकेट, भगत् किशन सिंह राठौर, श्री विशम्बर नाथ चालोकिया लाहौरी एवं महाशय गैंदाराम व सरदार बन्तासिंह देहलवीं आदि नेताओं ने बढ़-चढ़ कर काम किया। इन जातीय समाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा अनेक जातीय राजवंश प्रमाण प्रस्तुत करने तथा सरकार से पूर्ण ज़द्दोज़हद के बाद दिनांक १ अगस्त सन् १९२७ को शिमला में भारत सरकार से अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा (संगठन) का पंजीकरण हुआ था। क्योंकि उन दिनों भारत सरकार के सभी बड़े-बड़े कार्यलय गरमी की वजह से शिमला में कार्य किया करते थे। तद्पश्चात सभा का प्रचार प्रसार सम्पूर्ण भारत में होता गया। अनेक लुके छिपे सर्व सम्पन्न सामाजिक बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता उभर कर सामने आने लगे। अनेक प्रान्तों में इसकी शाखाओं का संचालन हु तथा अनेक पत्र-पत्रिकाएं निकलने लगीं जैसे :

अखलाकी गजट, महरा राजपूत	अमृतसर
राजपूत प्रकाश	लाहौर
अमर पत्र	कानपुर
महरा सुधार	लाहौर
कश्यप पत्र	मेरठ
कश्यप राजपूत	गुजरांवाला
सेवक समाचार	लखनऊ
कश्यप संदेश	बम्बई

वीर बंधु	देहली
नया संदेश	नई दिल्ली
कर्ण धार	भोपाल
कश्यप निर्माण	इलाहाबाद
कश्यप दूत	इलाहाबाद

इत्यादि सम्पादित हुए, जिनमें से कुछ बन्द तथा कुछ चालू हैं। इस संगठन से समाजिक उत्थान तो हुआ ही एवं समाज में राजनैतिकं चेतना भी आई।

सन् १९४७ तक सभा का कार्यालय लाहौर रहा उसके बाद देहली स्थापित हुआ। क्योंकि पाकिस्तान के लिए पंजाब का बंटवारा होने से वहां के लोग बिखर गए कोई कहीं गया व कोई कही पलायन कर गया। तब लाहौर से बाबू विशम्बर नाथ चालोकिया, श्री रत्नसिंह एड्वोकेट आदि महानुभाव देहली आ गए। तब उन्होंने यहां के कार्यकर्ताओं की मीटिंग में बताया कि अब सभा का कार्यालय देहली रहेगा। इस बात की जानकारी जनता को देने के लिए एक सम्मेलन बुलाया जाए, और इस सभा का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए आप लोग आगे आने का कष्ट करें। यह सम्मेलन दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने फव्वारे की ओर कम्पनी बाग में हुआ था, जिसमें बाबू रत्न सिंह व श्री विशम्बर नाथ जी संरक्षक तथा श्री गेंदाराम, श्री पूर्ण सिंह मांडल, सरदार बन्तासिंह, धनीराम कटारिया आदि संचालक पदाधिकारी नियुक्त किए गए और कार्यालय का कार्यभार श्री लज्जेराम टंडन को सौंपा गया। इस सभा ने पंजीकृत होने के बाद जो सामाजिक उत्थान हेतु कार्य किए उनमें बहुनामांकन जातीय एकता, समाज के लोगों का शिक्षा में रूझान, महिलाओं से घर-घर फेरी के काम कराए जाने की रोक थाम तथा राजनैतिक चेतना भी सभा का मुख्य कार्य था। राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप सन् १९५२ में जब भारतीय संविधान के तहत सर्वप्रथम देशव्यापी चुनाव हुए तब इस सभा ने भी पंजाब से जिला रोहतक के गोहाना विधान सभा क्षेत्र से मुझ नाचीज़ व्यक्ति के नाम से चुनाव लड़ा था। सभा एवं समाज की ओर से मैं उम्मीदवार तो रहा किन्तु चुनाव का सब काम समाज के लोगों ने किया। चुनाव बारे आमदनी खर्च लेन देन के लिए बकायदा कमेटी नियुक्त थी। इस कमेटी के सर्व श्री राम स्वरूप मकड़ोली, डा. नेकी राम व हरिकिशन रोहतकवासी तथा चौ. सिबाराम व श्री नन्दूराम गोहाना वाले कर्मठ कार्यकारी सदस्य थे, जिनमें खज़ानची का काम चौ. सिबाराम के जिम्मे था। इस चुनाव में समाज के लोगों ने तन मन धन से पूर्ण सहयोग दिया। इस प्रकार समाज का संगठन और इनकी चुनावी कार्य शैली को देख वह लोग भी चकित रह गए जो इस समाज को चुनाव के काबिल नहीं कहते थे।

इसी महासभा के प्रचार प्रभाव से देश में अनेक सभा एवं समितियां तथा गणमान्य व्यक्ति उभर कर सामने आए जिनसे समाज का अत्यधिक उत्थान हुआ। जैसे श्री जयपाल सिंह कश्यप एम.पी. जिसने कश्यप समुदाय का नाम विदेशों तक विख्यात किया। श्री मनोहर लाल एम.पी. श्री सीताराम विधायक(उ.प्र.), श्री दीनानाथ एड्वोकेट हरियाणा चंडीगढ़ जो कि सन् १९७८ में पंजीकृत हुई। हरियाणा कशयप राजपूत सभा के लगभग १२ वर्ष प्रधान रहे। जिन्होंने इस सभा एवं समाज का भविष्य उज्जवल करने के लिए बढ़-चढ़ कर काम किया। कुरुक्षेत्र कश्यप राजपूत धर्मशाला की स्थापना तथा निर्माण कार्य का सर्वाधिक श्रेय इन्ही को जाता है। इन्हीं के कार्यकाल में चौ. पीरुराम कश्यप हरियाणा विधान सभा के लिए विधायक तथा जिसने अपनी स्वच्छ राजनैतिक छवि के कारण विधान सभा का संसदीय सचिव उच्च पद प्राप्त किया। उधर समाज के लोगों की ओर से सभा का प्रधान पद भी इन्हीं को दिया गया। परन्तु इनके पास समय का अभाव होने के कारण वे सभा के कार्यों में इतना अधिक समय नहीं दे पाए जितना लोग आशा करते थे। मास्टर रणसिंह जी कश्यप भैंसवाल कलां (सोनीपत) महामंत्री हरियाणा कश्यप राजपूत सभा जोकि इस सभा के गठन से पूर्व ही समाज सुधार के कार्यों में भाग लेने लगे थे। सभा एवं समाज के कार्यों में जितना समय और काम इन्होंने दिया शायद ही किसी अन्य कार्यकर्त्ता ने दिया होगा। इनकी भाग-दौड़, जोड़-तोड़, जन सम्पर्क का प्रमाण गोहाने में बाबा कालू का मंदिर, धर्मशाला का निर्माण है। इन्हीं के समकालीन चौ. श्री चन्द गोहाना वाले भी समाज के नाम से सामाजिक एवं राजनैतिक जद्दो-जहद् करते-करते स्वर्ग सिधार गए। इसी प्रकार चौ. रत्न सिंह मतोरिया रोहतक वाले का नाम भी सर्वसम्पन्न समाज सेवी महानुभावों में आता है। जिन्होंने समाज के सामूहिक शिक्षा संस्थान मंदिर धर्मशालाओं में दिल खोल कर आर्थिक सहायता की और करते जा रहे हैं।

इसी प्रकार अन्य प्रान्तों में भी अनेक सभा एवं समितियां, गणमान्य व्यक्ति अपने-अपने स्थानीय हालात अनुसार बढ़-चढ़ कर कार्य कर रहे हैं। यह सब अखिल भारतीय कश्यप राजपूत महासभा की देन है। जिसके वर्तमान प्रधान श्री धनीराम कटारिया दिल्ली-६ हैं। एवं महामंत्री पद पर महामान्य मास्टर करतार सिंह चौहान नया बांस दिल्ली निवासी कार्यरत हैं। जो कि समाज के सामूहिक तथा व्यक्तिगत कार्यों में पूर्ण सहयोग देते हैं। इनकी निःस्वार्थ समाजिक सेवाओं के फलस्वरूप इनका तथा इस सभा का नाम उज्जवल है।

प्राचीन क्षत्रि राजे महाराजाओं द्वारा बसाए गए नगर एवं प्रचलित वंश

भारतीय क्षत्रि सूर्य एवं चन्द्र आदि राज वंशों से प्राचीन कोई अन्य क्षत्रि राजवंश होने का प्रमाण संसार के किसी इतिहास में नहीं पाया जाता। भारत के अतिरिक्त चीन, सीरिया, मिश्र आदि देशों में जो राज वंशों का होना पाया जाता है, वह सब भारतीय क्षत्रि वंशों की पुष्टि के बहुत काल बाद प्रतिष्ठावान हुए हैं। इसलिए यह दो क्षत्री वंश संसार के सब प्राचीन वंशों से पुरातन हैं।

भगवान सूर्य के पुत्र मनु से सूर्य तथा चन्द्रमा के पुत्र बुध द्वारा चन्द्र वंश की प्रतिष्ठा हुई थी। सूर्य तथा चन्द्र वंश का बीज एक ही काल में बोया गया था। परन्तु इन दोनों की पुष्टि एक साथ नहीं हुई। क० जैम्स टाड़ साहेब अनुसार सूर्य वंश की अपेक्षा चन्द्र वंश धीरे-धीरे पुष्ठ एवं प्रतिषठावान हुआ, था, और इसका अधिक और अनेक भूखंड व शाखाओं मे विभाजित होने के अनेक प्रमाण प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मिलते हैं। उपरोक्त दोनों वंशों मे राजनैतिक टकराव, उतार चढाव व वैवाहिक सम्बन्ध भी होते रहे।

सर्व प्रथम सूर्य पुत्र मनु के नौ पुत्र तथा एक पुत्री थी, जिनमें सारा संसार विभाजित हुआ था। बड़े पुत्र इक्ष्वाकु ने अयोध्या की स्थापना की थी। इक्ष्वाकु के पुत्र निमि तथा निमि के पुत्र मिथि द्वारा बसाई गई नगरी का नाम मिथिला था जहां के राजा विदेह हुए जिनके वंशज जनक नाम से पुकारे जाते हैं। सीलध्वज तथा सीता जी इसी कुल में हुई थीं।

मनु की पुत्री इला द्वारा बुध के संयोग से पुरूर्वा नामक पुत्र हुआ जिन्हें इलाहाबाद प्रयाग राज मिला था। इनकी राजधानी का नाम महेशमती था। जो नर्मदा के तट पर स्थित है। भगवान् बुध का लगाया हुआ चन्द्र वंश वृक्ष बड़े विस्तार वाला हुआ और इसकी अनेक शाखाओं से बड़े-बड़े पराक्रमी राजा उत्पन्न हुए थे। इला का पुत्र पुरुर्वा तथा पुरुर्वा का प्रपोत्र नहुष और नहुष का पुत्र ययाती एक महान् विजेता हुआ जिसने अपने राज्य का विस्तार किया था। इसका विवाह शुक्राचार्य ब्रह्मण की कन्या देवयानी तथा क्षत्रि वंशीय वृषपूर्वा की कन्या शर्मिष्ठा से हुआ था। इनके पांच पुत्र दुर्हव्यू, अनु, पुरू, तुर्वसु व यदू हुए थे। बड़े होकर प्रत्येक ने एक-एक लम्बे वंश की स्थापना की थी जिनमें यदू और पुरू द्वारा चन्द्र वंश की विशेष प्रतिष्ठा हुई।

महाराजा ययाती ने अपना राज अपने पुत्रों में बांट दिया जिनमें सब से छोटे पुत्र पुरु को पैतृक प्रयाग राज्य मिला था। एवं यदू को चंबल, केतवा, कैन आदि नदियों के प्रदेश मिले थे।

उधर सूर्य वंशी इक्ष्वाकु के भतीजे अनर्त द्वारा अलग राज्य तथा कुशथली नामक राजधानी की स्थापना हो गई। इसी प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी राज्य से राज्य तथा वंश से वंश वृद्धि होकर पूर्वोक्त वंशों का विस्तार होते होते आगे चल कर चन्द्र वंशीय यदू वंशज दो शाखाओं में बंट गए जिनके नाम यादव तथा हैहय प्रचलित हुए। यादवों ने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करके अपने राज्य का विस्तार कर लिया तथा सूर्य वंशी राजाओं द्वारा बसाये हुए कुशथली नगर को भी अपनी राजधानी बनाया था। यहीं तक ही नहीं पुरुर्वा वंशी राजाओं का अधिकांश क्षेत्र भी दबा लिया।

दूसरी ओर सूर्य वंशी इक्ष्वाकु से लेकर मानधाता तक अनेक राजाओं के समय में अयोध्या के राज्य की इतनी वृद्धि नहीं हो पाई जितनी मानधाता के समय में हुई। इसने पुरुव एवं दुर्हय चन्द्रवंशी राज्यों को कुचल कर अपने राज्य का विस्तार किया एवं महा शक्तिशाली सम्राट कहलाया था। कान्यकुंज (कनौज) के दुर्हयू नरेश तो काबुल की ओर जा निकले जहां उन्होंने गंधार नगर एवं राज्य की स्थापना की थी। जिनके राजा का नाम गाधी तथा गाधी का पुत्र विश्वामित्र हुआ। विश्वामित्र ने अपने पैतृक राज्य को प्राप्त करने का प्रयत्न किया तब वशिष्ठ आदि ने सूर्य वंशी राजाओं का साथ दिया उस संघर्ष में विश्वामित्र की हार हुई एवं वह शर्म का मारा वापिस नहीं गया व जंगल में त्रिशंखु के पास रहा तथा भक्ति की। त्रिशंकु को किसी ब्राह्मण आदि द्वारा राज्य से बहिष्कृत कर रखा था। इसको राज्य से पदच्युत करके हरिचन्द्र को राजा बनाया था। विश्वामित्र के तपोबल से त्रिशंकु शापमुक्त होकर स्वर्ग गया था। इसके अतिरिक्त हरिचन्द्र ने वशिष्ठ द्वारा पुत्र प्राप्ती हेतु नर बलि देकर यज्ञ में एक कौशिक वंशी देवरात नामक बालक की बलि देते-देते विश्वामित्र ने उसे बचाया था। इस प्रकार विश्वामित्र की वशिष्ठ तथा सूर्य वंशीयों से नहीं बनती थी।

दूसरी ओर चन्द्र वंशीय हैहय लोगों की शक्ति को जब प्रधानता मिली तब अयोध्या की प्रभुत्ता कम होती गई। हैहय वंशी कीर्तवियार्जुन जिसको सहंसर वाहु भी कहते हैं ने हैहय शाखा को दीर्घ काल में उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया नर्मदा से लेकर हिमालय तक विजय प्राप्त की। नर्मदा के निचले भाग में रहने वाले भृगु वंशीय ब्राह्मणों के साथ इसका संघर्ष हुआ। जमदगनी के पुत्र परशुराम के हाथों वह मारा गया। अपने पिता का बदला लेने हेतु इसके पुत्रों ने जमदगनी को मार दिया। तब परशुराम ने समस्त क्षत्रि वंश को समाप्त करने का निश्चय किया जिसमें हैहय वंशी अर्जन ही नहीं अपितु अनेक-अनेक समर्थकों का बध भी हुआ।

हैहय लोगों को इसका धक्का तो लगा परन्तु कुछ समय बाद पुनः शक्तिशाली हो गए। इन्होंने अनेक राज्य जीत लिए यहां तक कि अयोध्या नरेश तो जंगलों में भाग गया और वहीं मर गया। इनके वंश में केवल सगर (सघड़) बचा था। सूर्य वंशी मानधाता से सगर तक जिन आपत्तिपूर्ण हालात से पुरुर्वा वंशीयो को गुजरना पड़ा उतना शायद दूसरों को नहीं।

सघड़ की मृत्यु के पश्चात् पुरुर्वा वंशी दुष्यंत ने अपने राज्य की पुनः स्थापना की थी। पुरुर्वा वंशी राजा अप्रतीर्थ के दो पुत्र राजा रंभ और कण्व हुए। रंभ का पुत्र दुष्यंत और कण्व का पुत्र मेधातिथि हुआ। इस प्रकार दुष्यंत कण्व का भतीजा था। जिनका जन्मस्थान प्रयाग राज्य (महेशमती) था।

आचार्य चतुरसैन आदि ऐतिहासिक विश्लेषण कर्त्ताओं अनुसार जब पुरुर्वा वंशी महाराज रंभ के राज्य पर सूर्यवंशी महाराजा मानधाता आदि राजाओं ने चढ़ाई की थी उसमें महाराज रंभ मारे गए एवं इनके राज्य पर सूर्यवंशीयों का अधिपत्य होता देख कण्व ने दुष्यंत आदि बच्चों सहित जंगल में भाग के जान बचाई थी। तथा जंगल में आश्रम बना कर तपस्या की थी। यहीं से महाराज मरुत ने दुष्यंत को गोद लिया था। यहीं दुष्यंत शंकुन्तला का विवाह एवं यहीं पराक्रमी महाराजा भरत हुए। शकुन्तला कहते हैं विश्वामित्र की पुत्री थी।

महाराजा मरुत के यहां भरत की दूसरी भार्या से दुष्यंत द्वारा उत्पन्न कालेंजर, कैरल, पांडेय तथा चोल आदि पुत्रों ने अपने-अपने नामों से अलग-अलग राज्यों की स्थापना की थी। इस प्रकार भरत द्वारा तुर्वशु वंशीय मरुत राज्य का विस्तार हुआ तथा अपना पैतृक राज्य भी पुनः प्राप्त करके वहां का पूर्ण राज्य शकुन्तला पुत्र भरत को दिया। जो महापराक्रमी चक्रवर्ती राजा कहलाए।

कण्व पुत्र मेधातिथि ब्राह्मण हो गए इसके वंशज कण्वायण ब्राह्मण कहलाए। कण्व को तपस्या के फलस्वरुप ऋषि पद प्राप्त हुआ।

उधर अयोध्या में सघड़ के बाद उनके प्रपोत्र भागीरथ हुए। जिनके समय में गंगा जी का आगमन हुआ था। भागीरथ से कलमासपाद तक अयोध्या की पूर्ण प्रतिष्ठा बनी रही। परन्तु कलमासपाद ने जब गुरु वशिष्ठ के पुत्रों को मार दिया तब राज्य में अशान्ति फैल गई। और सूर्यवंशीयों में आपसी पारिवारिक विरोध उत्पन्न हो गया, क्योंकि उन दिनों ब्रह्मण हत्या तो बहुत बड़ी बात मानी जाती थी अपितु किसी निम्न कार्य करने वाले ब्राह्मण को भी अपशब्द बोलने की जन साधारण तो क्या राजे महाराजाओं को भी अनुमति नहीं थी। इसलिए राज्य में अशान्ति तथा परिवारिक विरोध होना अनिवार्य था। जो काफी समय तक बना रहा। अंत में महाराजा दलीप ने पुनः राज्य की स्थापना की।

चन्द्र वंशीय दुष्यंत के वशंज महाराज भरत की पांचवी पीढ़ी में वृहत क्षत्रय सुहोत्र के पुत्र महाराजा हस्ति हुए जिन्होंने हस्तिनापुर की स्थापना की थी। इनका राज्य गंगा, जमुना,

सिंध आदि नदियों से ऊपर तक बड़े विस्तार वाला बताते हैं। इनका बसाया हुआ हस्तिनापुर नगर किसी समय संसार के महानगरों में विख्यात नगर था। आज कल वह भारत के मानचित्रों से दूर तथा गंगा जी की तीव्र तरंगों के प्रभाव से महाराजा हस्ति की यह कृति संसार से लुप्त होती जा रही है। हरिद्वार से बीस कोस दूर दक्षिण दिशा में महाराजा हस्तियान की हस्तिनापुर के दीन हीन चिन्ह दिखाई दे रहे हैं। गंगा के तीव्र प्रवाह एवं प्रकोप से इनके भी बचने की संभावना नहीं।

हस्तियान के अजयमीढ़, दुईमीढ़ तथा पुरुमीढ़ आदि पुत्रों की शाखाओं से जितने वंशों का विस्तार हुआ इतना किसी अन्य क्षत्रिय वंश से नहीं हुआ।

सूर्य वंशी महाराजा दलीप के बाद इस वंश में रघु अज दशरथ तथा दशरथ के पुत्र राम तक अयोध्या का राज्य उन्नत शिखर पर रहा। लंकापति रावण का वध श्रीराम चन्द्र जी के हाथों हुआ था। लंका की लड़ाई में जटायू वानर आदि ने राम का साथ दिया महावीर हनुमान वानर थे जिन्हें कपी भी कहा जाता है। महाराजा रामचन्द्र के बाद सूर्य वंशी राजाओं का सूर्य ढ़लता एवं चन्द्र वंशीयों का चढ़ता गया।

दुई मीढ़

दुई मीढ़ चन्द्र वंशीय भरत कुलीन महाराज हस्तियान के पुत्र हुए। जिनके वंश में अनेक शक्तिशाली महापुरुष राजे महाराजे हुए हैं जैसे महाराजा यवनीर, कृति, नीप, उग्रायुद्ध, शेम, सुबीर, निपुंज्य, वृहदर्थ आदि राजाओं के नाम सोम वंश वर्णन श्रीमद् भगवत् नूतन सुख सागर अध्याय नौ (९) स्कंध बीस (२०) में तथा विष्णु पुराण आदि में भी मिलते हैं। शान्तनु की मृत्यु के पश्चात उग्रायुद्ध ने सत्यवती को लेने हेतू हस्तिनापुर पर चढ़ाई की थी तब भीष्म के हाथों उग्रायुद्ध मारा गया था।

अजय मीढ़

महाराज हस्तियान के पुत्र अजयमीढ़ की नीलनी नामक स्त्री से नील तथा नील का शान्ति-शान्ति का सुशान्ति-सुशान्ति का पुरंज्य, पुरंज्य का अक, अक का हर्यक्ष हुआ जिसने अपने पुत्र मुद्गल, यवनीर, बृहदशु, काम्पील, संजय आदि पांचों पुत्रों को अलग-अलग पंचनद (पांचाल) पंजाब का राज्य दिया था। आगे चलकर इनके वंशज अलग-अलग होते गए तथा अपने अलग राज्य तथा राजधानियाँ स्थापित करते गए। इनमें मुद्गल के वंशज कुछ ब्राह्मण हुए और काम्पील ने अपने नाम पर काम्पील नगर तथा राजधानी की स्थापना की। बृहदशु के नाम पर वृहदशु वंश प्रचलित हुआ। मुद्गल के पुत्र देवदास तथा देवदास के वंशज प्रीष्यंत हुए जिनके पुत्र द्रोपद् तथा द्रोपद् का धृष्टदमन एवं पुत्री द्रोपदी का जन्म हुआ। जो पांण्डवों

को ब्याही थी। यह पांचाल देश के राजा हुए। अजयमीढ़ की दूसरी पत्नी से इनके पुत्र कौरव हुए जो अपने पिता के साथ हस्तिनापुर में विराजमान रहे जिसने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुरुक्षेत्र जंगल का क्षेत्र भी अपने राज्य में मिला लिया। इसीलिए इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा था। महाराज कौरुव के तीन पुत्र परिक्षत, जन्हु तथा संघनु हुए। संघनु के वंश में जोरासंध कंश तथा जन्हु के वंशज महाराज शान्तनु हुए, जिनकी पहली स्त्री से महान् दृढ़नेमी पुत्र भीष्म हुए थे। महाराज शान्तनु का दूसरा विवाह दास राज की पुत्री सत्यवती से हुआ था। जबकि सत्यवती की कोख से एक पुत्र पहले पारासुर द्वारा हो चुका था। यह पुत्र महऋषि वेद व्यास के नाम से सुविख्यात हुआ। जिसने वेदों का विभाजन महाभारत, पुराण आदि ग्रंथों की रचना की थी। कुछ लोग इसे धींवरी का पुत्र भी कहते हैं। पारासुर को धींवर या बलातकारी असुर क्यों नहीं कहते। यह सामाजिक अन्याय नहीं तो क्या है ? पारासुर ने सत्यवती से सम्पर्क एवं विवाह करके उसका परित्याग किया था। तब यह पुनः भीष्म आदि के प्रयत्लोपरान्त शान्तनु से ब्याही थी। सत्यवती से शान्तनु के दो पुत्र विचित्रवीर्य एवं चित्रागंद हुए थे। इनका विवाह कांशी नरेश की पुत्रियों अम्ब तथा अंबिका से हुआ था। शान्तनु की मृत्यु के बाद यह दोनों पुत्र निसंतान क्षय आदि घातक रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गए। वंश समाप्त होते देख सत्यवती ने भीष्म से वंश चलाने का आग्रह किया। जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने से इन्कार कर दिया तब भीष्म जी की सहमति से सत्यवती ने अपने पूर्व पुत्र वेद व्यास को बुलाया तथा उसके तपोबल व वियोग सम्पर्क से दोनों रानी व दासी गर्भवती हुई थी। जिनसे धृतराष्ट्र, पांडू तथा दासी से विदूर उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र के दुर्योधन, दुशासन आदि पुत्र उत्पन्न हुए तथा पांडू से पांच पुत्र युद्धिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल एवं सहदेव हुए।

उधर यदू वंश में सुरसैन के पुत्र महाराज कृष्ण जी हुए। जिन्होंने जोरासंध के भाई कंस को मारा था। इस शत्रुता के कारण कृष्ण का जोरासंघ से कई बार संग्राम हुआ। पांडवों ने कृष्ण का साथ दिया था। जोरासंघ के बार-बार शत्रुता पूर्ण आक्रमणों के कारण कृष्ण ने मथुरा से हट कर द्वारका पुरी बसाई थी। भीम के हाथों जोरासंघ का वध हुआ। जोरासंघ मगध के राजा तथा राजधानी का नाम राजगृह था। यह कौरव के कुल में सुधनवा के वंशधर थे। हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र और पांडू दोनों भ्राताओं में से पांडू का स्वर्गवास हो गया था। भीष्म की देख रेख में धृतराष्ट्र को गद्दी पर बैठाया गया एवं विदूर महामंत्री नियुक्त हुए थे। धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन आदि को पांचों पाण्डव फूटी आंख नहीं भाते थे। इनको मिटाने हेतु अनेक षड्यन्त्र रचे गए। जैसे लाक्षागृह में जलाना, द्रोपदी चीर हरण, बारह वर्ष का वनवास व अज्ञातवास। यह सब कुछ देखते, सुनते भी धृतराष्ट्र अपने पुत्र मोह वंश अमूक बने बैठे रहे भीष्म, विदूर, कृष्ण सरीखें भी जब समझाते-समझाते वाध्य हो गए। अंततः कुरुक्षेत्र की समर

भूमि पर महायुद्ध हुआ जिसे महाभारत युद्ध की संज्ञा दी जाती है। इस महाभारत के युद्ध में कौरवों का ही नहीं अपितु संसार के अनेक क्षत्रि राज वंशों का पतन हो गया, कईयों का समूल विनाश हो गया। इस महाभारत के युद्ध में मरुत चेदी, कारुष, कांशी दक्षण पांचाल, मगध, गुजरात तथा यदु वंशी कृष्ण ने पाण्डवों का साथ दिया था। एवं कौरवों की ओर से उत्तर भारत के सभी राज्यों ने भाग लिया था। पांडवों की विजय के बाद युद्धिष्ठिर को हस्तिनापुर का राजतिलक हुआ परन्तु कुछ दिन बाद अपने प्रपोत्र को राजसिंहासन देकर पांचों भाईयों सहित हिमालय चले गए और कभी वापिस नहीं आए। परीक्षत के बाद इसके वंशज जनमेज्य की चौथी पीढ़ी में चचक्षु के समय गंगा की बाढ़ से हस्तिनापुर कटने लगी तब राजधानी कुशथली ले जाई गई, कुरुक्षेत्र भी इनकी राजधानी रही।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् भारत में एक नए युग (काला युग) अर्थात कलियुग का आरम्भ हुआ। प्राचीन विख्यात सूर्य एवं चन्द्रवंशीय क्षत्रि राज वंश कुछ तो समाप्त हो गए कुछ दीन-हीन दिशा में अपना जीवन निर्वाह करने हेतु अनेक कार्यरुपी जातियों में मिल गए तथा उन्हीं वर्गों और जातियों के कहे जाने लगे। कुछ बचे-खुचे राज्य रहे थे जैसे कांशी, विदेह, पांचाल, हैहय, कलिंग सुरसैन आदि उल्लेखनीय हैं यह छोटे मोटे राज्य तथा जातियों के लोग जैन, बौद्ध इत्यादि मतों में जा मिले अनेक ब्राह्मण भी ब्राह्मण वाद को छोड़ बौद्ध धर्म अनुयायी हो गए। विदेशी जातियाँ भारत में आने लगी व भारतीय छोटी बड़ी जातियों में प्रवेश करती गई इस प्रकार भारतीय निम्न व दबी कुचली जातियां उच्च वर्गों की बराबरी करने लगी। जैसे हुण, प्रतिहार, कुशान, शक, पार्थव, गुरजर आदि जातियों ने वैसे या आक्रमणों द्वारा अपने राज्य स्थापित किए। भारतीयों में विलय हो गए। अन्तर्देशीय नए-नए राज्यों का उत्थान हुआ जैसे क्षत्रय, महाक्षत्रय, नहपान, पुलुमाई, योद्धा, आभीर, शुंग, नाग, धाकाटक, भारशिव, मालव, कलिंग, आंध्र, खैरवाल, सातबाहन, चेर, पोंड्र, कलवार, नन्द मौरिया (मेहरे) महार, कच्छवाहा, मतस्य, आदि तथा अनेक अंतरजातियों की स्थापना हुई।

मौरिया वंशीय राज्य का निर्माता चन्द्रगुप्त मौरिय था। इसको निम्न वर्गीय मौरिय, मेहर, महरा जाति से उत्पन्न हुआ बताते हैं। जिसने नन्दों के आखरी राजा धनानन्द से उनका राज्य छीना था। इसी वंश में महाराजा अशोक हुए जिसने चक्रवर्ती राज किया।

हर्ष वर्धन

गुप्तों के बाद भारत में हर्षवर्धन शासक हुआ। भारतीय इतिहास में हर्ष का नाम उल्लेखनीय है, जिसे हिन्दू काल का अंतिम सम्राट कहा जाता है। जिसका राज थानेश्वर तथा कन्नौज में हुआ है। इनका सारा जीवन संघर्ष में बीता। यह बुध धर्म अनुयायी ही नहीं अपितु

हिन्दू धर्म में भी पूर्ण आस्था रखते थे। कहते हैं कि हर्ष बौद्ध भिक्षुओं तथा ब्राह्मणों को दान देते समय पूर्ण खजाना (कोष) खाली करा देते थे।

अंततः इस संक्षिप्त वर्तांत के यहां लिखने का अभिप्राय यह था कि हमारे समुदाय के लोगों को यह जानकारी हो सके कि हमारे पूर्वज कैसे थे और आज हम क्या हैं ? जो यह भी नहीं जानते कि हम झीमर एवम् धीमर प्राचीन महाराजा अजयमीढ़ और दूईमीढ़ के वंशधर है। जिनके पूर्व पूर्वज दादा बाबा महऋषि कण्व हुए। बहुत लोग इन्हीं को बाबा कालू के नाम से जानते हैं। चाहे इनका यह उपनाम हो या अनपढ़ लोगों द्वारा बिगाड़ा हुआ नाम विख्यात हुआ हो। इस प्रकार हुई फेर बदल और सामाजिक दरिद्रता का मुख्य कारण हिन्दू धर्म की धार्मिक कठोरता एवं शिक्षा का अभाव हो सकता है। किसी ने सत्य कहा है कि अशिक्षित व्यक्ति हो, या समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता।

राजपूतों का उदय और उनकी शाखा कुल जातियाँ

इतिहासकारों के अनुसार राजपूत युग ६५० ई. से आरम्भ होकर १२वीं शताब्दी तक रहा है। किसी एक जाति विशेष वर्ग या वंश का नाम राजपूत नहीं है अर्थात् अनेक राजवंश तथा जातियों का समुह सूचक नाम राजपूत है। राजा का पुत्र राजपूत कहा जाता है। कर्नल जेम्स टाड द्वारा लिखित राजस्थान इतिहास में राजपूतों की छत्तीस जातियाँ कहीं हैं। जोइस प्रकार हैं– गहलोत,राठौर,यादव,कश्यप,कछवाहा,पुवार,प्रभार,प्रतिहार,परिहार,कतिये,बल, चालोक्य, चौहान, शोर, तक्षक, जित, जेतवा, झाला, सेंगर, हुण, गोहिल, दाबी, गर, गौर, दाहिर, दर, टोदा, सिलार, वाइस, बेस, घरोवाल, सिकरवाल, देहिया, जोहेया, माहिर, राजपाली, अग्निकुल आदि नामांकन जातियाँ तथा इनकी अनेक शाखाओं के लोग राजपूतों की गणना में आते हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्न है–

गहलोत, ग्रहलोट, गहलावत

ये लोग अपने को सूर्यवंशी बताते हैं। अपनी पुरानी राजधानी अयोध्या तथा दूसरी विराट बताई है, जहाँ पांडवों ने अज्ञातवास किया था। राजपूतों में इनकी शाखा बालक राय के नाम से प्रचलित हुई जिसने अपनी राजधानी अनहिवाड़ा बनाई। इन्हीं की शाखाएं सिसोधिया, संधाया, संधानिया, सोंधिया, सींधिया, अनहल, अहलावत, गहलान, गहलावत आदि विख्यात हैं।

राठौर

राजपूत भाठों के अनुसार यह लोग कश्यप के वंशज बताएँ हैं। ५०० ई. में ये लोग कन्नौज में बसते थे। इसी कुल में राजा जयचन्द हुए हैं। इन्हीं की शाखाएँ धाडुल, भदेल, चाकित, राघुकुश, रामदेव, मालवत, दुहरिया, गंगदेव, गाधे, धगे, जयसिंध, श्राधिया, जोरा, संधु, कुटेजा इत्यादि हुई हैं।

कश्यप, कछप, कछवाहा

ये लोग अपने को कश्यपबंशी तथा कछ्ग अवतार को अपना प्रवर्तक मानते हैं। इस वंश में शिवाजी मराठा हुए। इनकी प्रतिष्ठा महाराष्ट्र, गुजरात तथा कच्छ में हुई। इन्होंने मीनों को उनके राज्य से निकालकर आमेर नगर बसाया था। मुसलमान बादशाह अकबर के समय

जब अधिकतर राजपूत कर्महीन हो गए थे तब कछवाहे सिरमोर रहे थे। इनके शाखाकुल महारा, मराठा, माहिर, कुरमी, कुशवाहा आदि पुकारे जाते हैं।

यादव, यदु

ये महाराज श्रीकृष्ण का विख्यात वंश है। इसकी जरजर, अहिर, हैहय, हरिकुल, जोहिया, माहिल, भट्टी, बिश्नोई आदि विशेष शाखाएँ हैं। इस कुल की एक शाखा ने पंजाब में सालिवानपुर, सालवांन नगर बसाया था। सिकंदर के समय यदुकुल राजा शम्भु की राजधानी अमीनगढ़ थी। यह नगर किसी समय मीनों ने बसाया था। अनुमान है कि यह नगर कुरुक्षेत्र के निकट अमीन नाम से विख्यात है।

तंवर, तोंवर, तुवार

कुछ लोग इनको यदुवंशी समझते हैं। परन्तु राजस्थान के कवि चन्द्रभट्ट ने इन्हें पांडवों के वंशज बताया है। इस वंश के लोग महाराज विक्रमादित्य से आठ शताब्दी बाद तक इन्द्रप्रस्थ में राज करते रहे। इन्होंने ही इन्द्रप्रस्थ की बजाय राजधानी का नाम दिल्ली प्रचलित किया था। इनका आखिरी राजा अनंगपाल था जिसने अपने दोहते पृथ्वीराज चौहान को गोद लेकर राजा बनाया था।

अग्निकुल

अग्निकुल राजपूतों में सर्वप्रथम प्रभार, पुवार, चालोक्य, चौहान, प्रीहार, प्रतिहार आदि चारों का नाम सूचिबद्ध हुआ था। आगे चलकर ये वंश अनेक शाखाओं में बटते चले गए। इनके विषय में कुछ लोग कहते हैं कि ये लोग अग्नि से उत्पन्न हुए हैं परन्तु बुद्धिजीवी लोग ऐसा नहीं मानते। ब्राह्मण आदि लोगों ने अपनी तथा देश धर्म की रक्षा हेतु राजस्थान के आबू पर्वत पर शंकर वर्णीय देशी विदेशी वीर बहादुर लोगों को यज्ञ हवन द्वारा शुद्धिकरण एवं शपथ ग्रहण कराके अग्निकुल राजपूत घोषित किया था।

प्रभार, पुवार

ये लोग अपना प्राचीन चन्द्रवंशी पुरुव कुलीन महाराजा अजयमीढ़ को प्रवर्तक कहते हैं। पुवार वंश अग्निकुल प्रमार वंश से प्रतिष्ठावान हुआ है। इस वंश के राजा रायपुवार भारत का चक्रवृत्ति राजा हुआ था। इनके आधीन बहुत से राजपूत राजा सामंत रहे थे। महाराजा भोज भी इसी कुल का पराक्रमी राजा हुआ है। जिस की सभा में विक्रमादित्य की तरह नौ रत्न थे। महाराजा रायपुवार ने गद्दी पर बैठते ही सभी सामंत राजपूत राजाओं को स्वतंत्रता पूर्वक रहने हेतु भूमि वितरित की थी। और उनके सामंत स्वतंत्र राज्य घोषित किए थे जैसे तोमरों को

पट्टन, तंवरों को दिल्ली, चौहानों को आमेर, कामध्वजों को कन्नौज, प्रीहारों को मरु प्रदेश मारवाड़ यदु वंशियों को सूरत, ज्वालों, झालों को दक्षिण, कछप कुशवाहों को कच्छ, कहारों को काठियावाड़, रायपुवारों को सिंध का देश देकर करदाता सामंत बनाया था। पुवारों के शासन काल में कई विख्यात नगर थे जैसे मेहश्वर (महेशमति) धारा, माण्डू, उज्जैन, चन्द्रावती, महवा, मदान, पुवारवती, अमरकोट, लोहदोई तथा पट्टन आदि नगरों में से किसी को इन्होंने बसाया था तथा किसी को जीतकर अपना लिया था। चन्द्रगुप्त मौर्य इसी कुल की एक शाखा से हुआ तथा एक शाखा का नाम सौदा था। इस गौत्र के अमर-समर नामक दो राजा हुए। इन दोनों ने अमरकोट, अमरसर नामक नगर बसाए। इस कुल की ३५ शाखाएँ बताई जाती हैं।

चौहान

चौहानों को अग्निकुल राजपूत कहते हैं जिन्होंने राजपूतों में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त की। ये लोग अपने को चन्द्रवंशिय राजा अजयमीढ़ के प्राचीन वंशधर बताते हैं। इस कुल की अनेक शाखाओं में माहिर, महार, खींचीं, देवरे, धीमरे, शनिगुरु, अनहिल, अन्तल, अष्टम आदि विख्यात हैं। महाराजा अनहिल से लेकर पृथ्वीराज तक इस वंश के उनतीस राजा हुए। इस कुल के अजयपाल राजा ने अजमेर नगर बसाया था।

चालोक्य, सोलंकी

ये राजपूत कुल भी चौहानों के साथ उदय हुआ था। यह लोग प्राचीन काल में मालावार कल्याण नगर में बसा करते थे। इनकी राजधानी पट्टन थी। इस कुल का पूर्ण समय मुसलमानों के विध्वंशों में व्यतीत हुआ। इस कुल को शोरकुल भी कहते हैं। महाराजा सिद्धराय के पुत्र भाग्यराय के नाम पर भागिला, वधेला, शाखाओं की उत्पत्ति हुई। जिस समय राठौरों ने कन्नौज को लिया था तब सोलंकी प्रतिष्ठान हुए थे। इस कुल से भागिला, वघेल, शोर, चौल, चाहिलान, चालंग, कालम कल्याण आदि शाखा प्रतिष्ठित हुई।

प्रीहार, प्रतिहार

यह वंश अग्नि कुल राजपूतो में सब से नीचे आसन पर आता है। प्रीहार कुल के लोग सदा दिल्ली के तोमरों अथवा अजमेर के चौहानों के आधीन रहे। इनकी राजधानी मंडवार (मंदाद्री) थी। इस कुल के विख्यात राजा नाहर राव अपनी प्रतिष्ठा में अपना नाम छोड़ गए। जब राठौर कन्नौज से भगाए गए तब उन्होंने मंडवार में शरण ली थी। राठौरों ने अपने आश्रय दाता प्रतिहारों के साथ विश्वाघात करके विनाश करवाया था। उस व्यक्ति का नाम चंद था। पहले प्रीहार लोग राणा नाम से विख्यात थे। इनकी ये उपाधि गहलोतों ने छीन ली। आजकल प्रीहार वंश भारत के चारों ओर फैल रहा है। सिंध तथा चम्बल नदी के संगम भी इनके अधिकार

में रहे हैं। इस कुल की बारह शाखाएँ बताई हैं। जिनमें इन्द्रों, इन्द्रखेव, सांधल, पुरिया, गुर्जर आदि विख्यात हुई।

शोर

शोर जाति भी भारत में विख्यात हुई है। ये जाति सौराष्ट्र में थी। इन्हीं के नाम पर सौराष्ट्र नाम विख्यात हुआ है। विदेशियों ने इन्हें चोल, चोर नाम से पुकारा है। सौराष्ट्र की सीमा पर एक छोटा सा टापू था। वहाँ पर विदेशी व्यापारी मालभरे जहाज लाया करते और यह उस माल को लूट लिया करते थे। इसलिए अरब आदि देशों के लोगों ने इन्हें चोर बताया। जब विदेशियों ने इन्हें हमला करके सौराष्ट्र से निकाला था तो इन्होंने मेवाड़ के राजाओं की शरण ली थी। इस कुल के विख्यात राजा बाण हुए हैं। बलभी इनकी राजधानी थी। १४४ वर्ष बाण के वंशजों ने अनलह वाड़ा पट्टन में राज किया। आठ पीढ़ी राज करके यह वंश एक दम लुप्त हो गया।

तक्षक (धवचक) , शक

अति प्राचीन काल में जो वीर गण दूर देश शक द्वीप से भारत में आए थे। उनमें तक्षक ही प्रधान थे। इस वंश वृक्ष की विभिन्न नामों से शाखाएँ निकलकर चहुं ओर फैल गई। कहते हैं कि नागवंशी तक्षक ने छिपकर महाराजा परिक्षित की हत्या की थी। जनमेज्ये ने अपने पिता का बदला लेने के लिए नागवंशियों को भस्म किया था। पुराणों में इनको सर्प कहा है। परन्तु आधुनिक लेखाकारों के अनुसार तक्षक नाग (सर्प) नहीं था। वास्तव में ये तक्षक कुलीन नागों की शाखा का प्रधान पुरुप था। जिस समय सिकन्दर ने भारत पर चढ़ाई की थी तब पर्वतों के निकट शक, तक्षक जाति रहती थी। जिन्होंने भारतीय राजा पोरस का साथ छोड़कर सिकन्दर का साथ दिया था। इनका निवास स्थान सिंध क्षेत्र था। शालीवाहन नगर इनके अधीन था जो भट्टियों ने इनसे छीन लिया। पृथ्वीराज के कविचन्द्र भट्ट ने एक तक्षक वंशिय (चित तक्षक) को पृथ्वीराज का ध्वजारोहक बताया है। जिसके नाम पर उनके वंशज काम ध्वजक (धाँचक) कहलाये। भविष्य पुराण के अनुसार इस वंश से जित जादुव कुल शाखा की उत्पत्ति हुई है। इस जित (जाट) वंश के अनेक महावीरों के वीर दरप से सारे भूमण्डल को एक बार कंपा दिया था।

जित, जेतव, जाटव

राजपूतों में जितों का नाम भी आया है। परन्तु कहीं भी राजपूत लोग इनको राजपूत नहीं मानते। न ही राजपूतों के साथ इनका विवाह सम्बन्ध हुआ है। ये लोग स्वयं को यदु वंशिय कहते हैं। कर्नल टाड के अनुसार इनका यदुवंशिय होना प्रमाणित नहीं होता। महाराजा

हर्षवर्धन इसी कुल में हुए थे जिनकी राजधानी थानेश्वर तथा कन्नौज थी। ये हिन्दू काल का अन्तिम सम्राट माना जाता है। इसके वंशज वर्धना, बुड़ना आदि हुए। जिन्होंने अपना प्राचीन प्रवर्तक महर्षि कश्यप को बताया है।

हुण

जिन वीर वंशों ने राजस्थान की ३६ जातियों में आसन पाया है, उनमें एक जाति हुण भी है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार विश्वामित्र और वशिष्ठ के युद्ध में हुणों ने वशिष्ठ की सहायता की थी। महाराजा रघु ने दिगविजय के समय हुणों को पराजित किया था। हर्षवर्धन ने भी एक बार हुणों को बुरी तरह पराजित करके भारत से निकाला था। फिर भी इन्होंने भारत से नजर नहीं हटाई और भारत के अनेक स्थानों पर अपना दायित्व जमा लिया तथा भारतीयों में घुल मिल गए। एक बार ये लोग एशिया योरुप आदि सभी देशों में प्रचण्ड हुए हैं। हर्षवर्धन के समय इनके नेता का नाम तोरमाणा था। इनके वंशज मेहरकुल ने पंजाब स्यालकोट तथा काश्मीर में राज किया।

कत्तिये, काथी, खती, खतरी, कायस्थ

ये लोग कभी काठियावाड़ में राज करते थे। इनके वंशज प्राचीन क्षत्रीय कहलाए परन्तु धीरे-धीरे इनके नाम उपभ्रंश होते गए- क्षत्रि से खतरी, काठी, कतिया, कायस्थ आदि जातियाँ कही जाने लगी।

बल्ल

भठ ग्रंथों में इनको ठढ अर्थात् मुलतान के राव पुकारा है। ये लोग अपने को सूर्यवंशी कहते हैं। महाराजा रामचन्द्र के वंशज लव के शाखाकुल में महाराजा बल्ल अथवा बपा को अपना पूर्वज बताते हैं। कुछ लोग स्वयं को कश्यप वंशिय हरण्य कश्यप कुलीन महाराजा बली की संतान बताते हैं।

झाला (झाले, झौंके)

इनका कोई प्राचीन विशेष वृतांत नहीं मिलता। हाँ महाराणा प्रताप को जब अकबर ने घेर लिया था उस समय इन लोगों ने अपनी जान झौंक कर हल्दी घाटी के मैदान में महाराणा प्रताप की जान बचाई थी।

कोमरी, वानर

ये लोग अपने को हनुमान के वंशज बताते हैं। सूरत देश में गुमरी नामक नगरी में इनके राजाओं ने राज किया। पोरबन्दर टापू में समुद्र पार जाने से इनका नाम वानर विख्यात हुआ। दक्षिण में इनकी जाति का नाम कपू है। गुमरी में रहने वालों को कुमरी कहते हैं।

गोहिल

ये लोग प्राचीन क्षेत्रीय वंशज राजपूत कहे जाते हैं। ये लोग सौराष्ट्र उपद्वीप गोहिल वाड़ा में प्रतिष्ठावान हुए हैं।

सिलार, सिलहार

ये सिलार जाति के लोग भी सौराष्ट्र में हुए हैं तथा बड़ी प्रतिष्ठित जाति कहलाई और राजपूतों की गणना में आती है।

दाबी, देबी

भट्ट कवियों के अनुसार इन्हें यदु वंशिय बताया जाता है। ये राजपूतों में गिने जाते हैं।

दर, दोदा

इनका महाराज पृथ्वीराज से संघर्ष हुआ था। पृथ्वीराज ने इन्हें जीत कर स्वयं को धन्य माना था।

घरवाल, घरोवाल, गढ़वाल

वैसे तो ये लोग वीर बहादुर थे परन्तु राजपूतों में इनके विवाह सम्बन्ध नहीं मिलते। ये लोग काशी में रहते थे। इनकी एक शाखा बुन्देल राय नाम से पुकारी जाती थी। बुन्देल खण्ड में इन्होंने निवास किया था।

सेंगर

इस राजपूत जाति का कोई विशेष वृतान्त नहीं मिलता।

सिकरवाल

चम्बल नदी के किनारे यदुमति के समीप इन्होंने सिकरपुर नगर बसाया था।

वाइस, बेस

ये कुल भी राजपूतों की गणना में तो आता है परन्तु कोई विशेष वृतान्त नहीं मिलता।

देहिया, देहिवर (धीमर)

ये कुल प्राचीन क्षत्रीय कुल है। जैसलमेर के भट्ट ग्रंथों में इनका वर्णन मिलता है। ये लोग स्वंय को चन्द्रवंशिय राजा द्वीमीढ़ को अपना प्रवर्तक बताते हैं।

जोहिया, जोहर, जुहूर, झीमर

ये लोग भी हैहयों के साथ-साथ लिखे गए हैं। इनको जांगल देशपति कहा गया है। ये क्षेत्र प्राचीन काल में कुरु नाम से महाभारत आदि पुराणों में लिखित हैं।

माहिल, माहिर, महार

ये लोग कभी बीकानेर के शासक रहे।

राजपाली

ये राजपाली, राजपालिक, शुद्ध पाल पुकारे गए हैं।

दाहिर

ये लोग देवल के राजा दाहिर के कुल से बताए जाते हैं। कभी सिंध देश इनके अधिकार में रहा है।

दाहिया

इस कुल के तीन भाई पृथ्वीराज के यहाँ मंत्री रहे हैं व सेनापति के पद पर भी रहे हैं।

गोत्र प्रणाली समीक्षा

गोत्र क्या है ? इसका ब्याह शादियों में उच्चारण क्यों होता है ? इसको समझने के लिए अध्ययन व अनुसंधान करने की अति आवश्यकता है। अनेक प्राचीन ग्रंथ एवं पुराण आदि वंशावलियों के अध्ययन से प्रतीत हुआ है कि भारत में वंशों का नाम ऋषि मुनि राजा महाराजाओं द्वारा प्रचलित हुआ तथा उनके संचालकों के नामांकन गोत्र कहे जाने लगे। तत्पशचात् शनैः-शनैः वंशों से अनेक शाखाकुल वंश तथा उनके संचालक प्रवर्तकों के नामांकन अनेक गोत्र वंश के किसी विशेष व्यक्ति एवं विशेष स्थान के नाम और किसी के द्वारा अनुचित कार्यक्रमानुसार गोत्रों के नाम प्रचलित हुए हैं। एक ही गोत्र के मनुष्यों का रक्त अर्थात खून का लगाव समझा जाता है। इसलिए एक ही गोत्र के पुत्र व पुत्री का विवाह सम्बन्ध होना वर्जित है। कई एक जाति विषेयक वंशावलियों से सूचिबद्ध गोत्रों के मिलान से प्रतीत हुआ कि एक-एक जाति में अनेक गोत्र तथा एक-एक गोत्र के लोग कई-कई जातियों में मिलते हैं अतः जातियों व गोत्रों में भिन्नता है।

जाति की जगह किसी समय कार्यों के आधार चार वर्ण बने थे परन्तु जनसंख्या की बढ़ोत्तरी के साथ-साथ मानव जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की बढ़त के कारण एक-एक कार्य के कई भाग तथा अनेक कार्यरूपी वर्ग होते चले गए। जैसे खाने को अन्न, कृषि के कार्य, हाली-पाली, रहने को घर ईटों के कार्यकर्त्ता, चिनाई वाले लकड़ी के लिए बढ़ई, वस्त्र, कपड़े के कार्यकर्त्ता, रुई धुनाई वाले, लुढ़ाई वाले, लोठे कताई वाले, बुनाई वाले बुनकर जुलाहे, सिलाई वाले दर्जी इत्यादि सभी कामों के विभिन्न भाग अर्थात वर्ग होते गए। हर कार्यरूपी वर्ग में हर वंश तथा गोत्रों के लोग मिल जुलकर कार्य करते थे। किसी प्रकार का ऊंच-नीच, भेद-भाव नहीं था। सनै-सनै धार्मिक कठोरता वंश या उच्च वर्गीय लोगों के दबाव में अपना कार्य रूपी वर्ग नहीं बदल सके और अपने-अपने कार्यों में संलिप्त रहते रहे। तब सबकी जन्मजात पेशेवर जातियां पक्की हो गई। इसलिए हर जाति में अनेक गोत्रों के लोग पाये जाते हैं। अब हम कश्यप राजपूत क्षत्रिय समुदाय के भाईयों के गोत्रों के नाम की जितने हमें प्राप्त हो सके सूचि प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि पाठकगण रहे सहे नामों की पूर्ति एवं वंशों का ब्यौरा समाज तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध हो सके।

कश्यप राजपूत क्षत्रि समुदाय के पर्याप्त गोत्र एवं शाखाकुल नाम

हस्तियान	देरन	महादेशी	ब्रोबी	सिसोधिया
हाड़े	दारन	मच्छन्दर	बोट	सिंधिया
हिरण	देव	माहिल	विन्द	राठौर
हातड़	चोई	पुवार	कादर	रोहल
धौंचक	चालिंग	प्रमार	कोहली	रिठाण
धानाणा	चौहान	प्रतिहार	खण्डीर	रतड़ा
धड़ंगे	चालौक्य	पतवाहक	बनाफर	रायपुवार
धारागड़ी	लामसर	अन्तल	भठी	कवार
धोरिया	लुहले	अनतर	भारद्वाज	रामजनीय
धनिक	मालड़े	अमिद	भुज	रोहेला
धनोनिया	मतोरिया	प्रवारिया	भोज्ञान	रोहजे
धूलिया	मलहोत्रा	पावेद	भैरवत	ठोहरे
धालुर	मोरा	पपराया	सिलान	डेरू
दारुक	मोरिया	पारी	सलखलान	अस्टाम
धुत	मलिया	फुलमाली	सरोहे	आशियान
बवानिया	सोगरा	वराहिये	सलोत्रे	कल्याण
बोर	संधानिया	बासान	सोच	किराड़े
बोरिया	संतरी	बीड़राम	सुखजग	मुरकन
महरा	मुण्डीफोर	बीहड़े	सांझल पुरिया	कनोड़िया
मांझी	मालवीया	बालान	सिकरवाल	कटारिया
कछवाहा	मालवा	बजलोतरे	संधाया	कांगर
माछी	मम्बर	बमोई	सोंधिया	कश्यप
काशान	गेडे	टकेरड़ा	कपूर	मनियारिया
केले	गेण्डे	नोहरा	बड़गुज्जर	
कड़ात	गग्गा	निवाड़ी	रघुवंशिय	
कलवार	गरवाल	नरुद	ककालिया	

केशरिया
काली
कुवात
कारक
खँरवार
खेवोड़
तनवर
तूर
तोमर
तुराहे
तितरिया
तिड़ानिया
तँहलान
तेली
थावक
छौंकर
छाजान
गहलावत
गहलान
गादड़े

गाधी
गौंड़
गराया
कोरिया
गुजराती
जागलान
जैंसवाल
जालू
झकदा
झिकट
झाले
झावा
जजेटा
योग
जलिया
झौंकि
टणडन
टुण्डवान
टांक
टोर

निठरिया
नेक
नियक
नागनपुरिया
निवाड़
अड़ियान
इन्द्र वे
इन्दोरिया
क्षत्रिया
हुई
हुईयर
खेनान
खींची
भोड़
धानियान
पंत
भरत
कौशिक
नीले
रांघड़

डोगरे
मेंगरवाल
चतुरवुज
गुड़िया
हरदिया
ढीताया
बेनीवाल
खोखर
आदि-आदि

चन्द्र वंशीय महाराजा ययाति के पुत्र पुरूव के वंशधर महर्षि कण्व

- पुरुव
  - ऋचेपु
    - मतिनार
      - सुमति तंसु
        - रंभ
          - दुष्यंत
            - भरत
              - वृहतक्षत्रयप सुहोत्र
                - हस्तियान (हस्तिनापुर संस्थापक)
                  - अजय मीढ़
                    - कुरू महाभारत कालीन कौरव पांवड विशाल वंश
                  - दुईमीढ़
                    - उग्रायुद्ध का भीष्म द्वारा वध हुआ
                  - पुरुमीढ़ (पुरोहित हुआ)
      - अप्रतिरथ
        - कण्व
          - मेघातिथि
            - कण्वायण ब्राह्मण वंश प्रचलित हुआ
      - ध्रुव
      - गौरी पुत्री (सूर्यवंशी यवनासव को ब्याही थी)
        - गौरी से सूर्यवंशी मानधाता

महाभारत (आदि पर्व ८९-१३८) में कण्व को क्षत्रोयत ब्राह्मण कहा है। महाभारत, विष्णुपुराण (४.४.३७) सोमवंश वंश वंशालियों अनुसार दुष्यंत कणव का भतीजा था।

महर्षि कण्व

चन्द्रवंशियों की प्राचीन राजधानी प्रतिष्ठानपुर प्रयाग राज्य में महाराज पुरु के पौत्र मतिनार हुए जिन्होंने सरस्वती के तट पर बारह वर्ष दीर्घ सत्र तप किया। मतिनार के तीन पुत्र तंसुसुमती, अप्रतिरथ, ध्रुव तथा एक गौरी नामक पुत्री हुई। गौरी का विवाह सूर्यवंशी यवन आसव से हुआ जिसका पुत्र मानधाता हुआ उधर पुरु वंशिय तंसु (सुमती) का पुत्र रंभ तथा अप्रतिरथ का कण्व हुआ। अपने समय का महाराजा रंभ प्रजा प्रिय सर्व हितैषी धैर्यवान राजा था। महाराजा रंभ और कण्व दोनों भाई प्रेमपूर्वक शान्तिमय जीवन व्यतीत करते रहे। इस प्रकार रंभ से दुष्यंत तथा कण्व से मेधातिथि पुत्र हुए। जिनकी खुशी मनाने हेतु संपूर्ण राज्य में अनेक यज्ञ, हवन, पुण्य दान समारोह आयोजित किए गए। कण्व की महाराजा रंभ अपने पिता समान इज्जत करता था। कहते हैं समय बड़ा बलवान है, समय के बदलते देर नहीं लगती। किसी समय महाराजा रंभ के समकालीन अयोध्या नरेश सूर्य वंशी मानधाता ने अपने राज्य की बढ़ोतरी तथा चक्रवर्ती पद प्राप्त करने के लिए पड़ौसी राज्यों पर चढ़ाई की थी। समय के परिवर्तन क्रम चक्कर से प्रयाग राज्य भी नहीं बच सका। महाराजा रंभ से सूर्यवंशियों का महाघोर संग्राम हुआ। इस महाघोर युद्ध में महाराजा रंभ तथा इनके अनुयाई परिवारजन सभी मारे गए तथा प्रजा ने अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार कुटुम्ब का सर्वनाश होता देख कण्व ने दुष्यंत और मेधातिथि बच्चों सहित सरस्वती की ओर जंगल में भागकर जान बचाई थी।

महाभारत आदि (६४/१८-२५) में मंदाकिनी नदी चैत्तरथ बन लिखा है। सम्भव है कि चित्रकूट का नाम कभी चैत्तरथ बन हो। उन्हें वहां दुश्मनों के अतिरिक्त खूंखार जंगली जानवरों से सुरक्षा तथा खानपान की अति कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। इस प्रकार रहते सहते कुछ कालान्तर पश्चात एक दिन जब वह किसी सरोवर से खाद्यान पदार्थ एकत्रित करने गया हुआ था तो अकस्मात् किसी राजा का अपने अंग रक्षकों तथा घुड़सवारों सहित उधर आगमन हुआ। उनकी भागदौड़ गड़गड़ाहट सुनकर कण्व का भयभीत हृदय कांपने लगा। तथा उसे भागकर जाने तथा छिपने का कोई स्थान नजर नहीं आया। ऐसी चिंताजनक हालत में बचने का कोई उपाय न देख अपने को अदल पहचान करने हेतु सरोवर की गीली गारा मिट्टी अपने तन बदन पर लगाकर महात्माओं की भांति समाधि सी लगा मूक होकर बैठ गए और मन ही मन मां सरस्वती की अराधना करने लगे। कहते हैं उसे ऐसा दिखाई दिया जैसे सरस्वती माता उसे कहती है कि पुत्र भयभीत न हो। इस मेरे परिसंर में तेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता लेकिन

भगवान कश्यप की भक्ति अवश्य किया करो। वही तेरा तथा तेरे वंशजों का कल्याण करेगा। साधना करो सिद्ध बनोगे।

उधर राजा तथा उसके अंग रक्षक घुड़सवार सभी कर्मचारी जब कण्व के निकट आए तो राजा ने देखा कि कोई महात्मा समाधि लगाए बैठा है। तुरन्त नतमस्तक हो महात्मा के चरणस्पर्श किए। परन्तु कण्व ज्यों का त्यों मौन रहा। कोई उत्तर न मिलता देख राजा को ऐसा लगा कि महात्मा इस समय समाधि अवस्था में है अत: ऐसी स्थिति में इनसे बोलना उचित न होगा, क्यों न किसी दिन इनके पास आकर इनका आर्शीवाद लूं। ऐसा सोच राजा वहां से चल पड़ा तथा राजा की देखादेखी सभी अंग रक्षक कर्मचारीगण कण्व के चरणस्पर्श करते चले गए। उनके वहां से जाने के बाद कण्व की जान में जान आई और उन्हें वहीं से बोधाभ्यास हुआ कि योग तपस्या तथा भक्ति में ही ऐसी शक्ति है जिसके आगे राजा को भी नतमस्तक होना पड़ता है। राजा को यहां से घर लौट जाने पर भी इस बात की भूल नहीं पड़ी। सोचते-सोचते राजा एक दिन उसी महात्मा के दर्शन हेतु फिर उसी स्थान पर जा पहुंचा। जहां पहले मिले थे। तब तक कण्व ने भी वास्तविक महात्माओं जैसी वेश भूषा एवं भावना बना ली थी। मिलते ही राजा ने फिर चरण स्पर्श व नमस्कार किया। दोनों ओर से कुशल मंगल पूछताछ के बाद कण्व राजा को अपने नियुक्त स्थान आश्रम पर ले गया जहां दोनों बच्चों ने आश्रम पर आए राजा को नमस्कार किया तथा खेलते रहे। कण्व ने राजा को बैठाया और स्वयं भी उनके पास बैठ गए। वार्तालाप प्रारम्भ हुआ।

राजा ने कहा हे मुनिवर मुझे तो एक बार फिर आपके दर्शन पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। परन्तु उस दिन आप सरोवर पर समाधि लगाए बैठे थे। इसलिए उस दिन मेरी आपसे कोई बात नहीं हुई। आज फिर आया हूं ताकि आपसे मैं कुछ आधयात्मिक ज्ञान रूपी उपदेश तथा आर्शिवाद प्राप्त कर सकूं। तत् पश्चात् कण्व बोले, हे अतिथि गण, मुझे कुछ नहीं पता। कृपा आप मुझे बताएं कि आपने कहां से और क्यों मेरे पास आने का कष्ट किया। आप अपना नाम, ग्राम बताने की कृपा करें। इससे पहले मैं आपको अपना परिचय देता हूं। मैं कोई संत महात्मा, संयासी नहीं हूं जो तुम्हें अपने प्रवचन व आशीर्वाद दे सन्तुष्ट कर सकूं। मैं तो एक आपत्ति ग्रस्त व्यक्ति इन बच्चों को शत्रुओं से बचाने हेतु इस सरस्वती माता के चरणों में आकर छिपा हुआ हूं। अब आप की कृपा से ही मुझे परम पिता परमात्मा की भक्ति का ध्यान हुआ है। आशा है मुझे अवश्य सफलता होगी। राजा ने कण्व की बात धयानपूर्वक सुनकर अपना परिचय देते हुए बताया– हे मुनीवर मेरा नाम मरुत है। प्रयाग से दक्षिण पूर्व की ओर मेरा राज्य है। मेरी राजधानी आपके आश्रम से अधिक दूर नहीं है। मैं प्राचीन चन्द्र वंशिय महाराजा ययाति के पुत्र तुर्वसु के वंश से हूं। हमारे राज्य में पूर्ण शान्ति है। प्रजा मिलजुल कर संगठित

रहती है। इसलिए किसी दुश्मन से किसी प्रकार का भय नहीं है। परन्तु एक चीज की कमी मेरे पास है कि मैं निःसन्तान हूं। मैंने आपकी बात धयानपूर्वक सुनी और आपकी कार्यकुशलता से प्रसन्न भी हुआ क्योंकि मानव अपने तथा अपने परिवार के लिए सब कुछ करता है परन्तु दूसरों के लिए कष्ट उठाना परउपकार महापुण्य है। जैसा कि आप अपने भाई के पुत्र के लिए कर रहे हैं। आपका यही महान तप है। धर्म ग्रंथों में कहा है कि मनुषय गृहस्थी होते हुए भी मानवतावादी आचार विचार गुण कर्म अनुसार कोई भी महात्मा हो सकता है। यह कहते-कहते महाराज मरूत की निगाह बच्चों पर गई। मन ही मन सोचने लगा कि मैं इन सब के लिए क्या कुछ कर सकता हूं। अन्त में राजा ने कहा, हे मुनीवर आप मेरी एक बात स्वीकार करें कि आप बच्चों सहित मेरे साथ चलिए। वहीं रहिए। मैं आपकी पूरी-पूरी सेवा व सुरक्षा करुंगा। किसी प्रकार का भय एवं कष्ट वहां नहीं होगा। इतनी बात सुन महाराज कण्व ने कहा, "हे राजन, आपने जो हमारे प्रति सहानुभूति प्रकट की है। इसके लिए बार-बार धन्यवाद। अब रही बात आपके साथ चलने की तो अब यहां हमें सरस्वती माता एवं परम पिता भगवान की दया दृषटि से किसी प्रकार का भय संकट नहीं रहा है। और न ही आगे होगा।" यह सुन राजा ने फिर कहा, "हे मुनिवर मैं आपके इस भक्ति भावनात्मक कार्य में बाधक नहीं बनना चाहता। परन्तु एक बात और कहूंगा, आशा है अवश्य स्वीकार होगी। इसमें आपका, मेरा व बच्चों का, सभी का भला होगा। आपको मैंने बताया था, मैं निःसंतान हूं और इस वृद्ध अवस्था में होने की भी संभावना नहीं है। इसलिए मेरी इच्छा है कि आप मुझे ये दोनों पुत्र सौंपने की कृपा करें। मैं इन्हें अपने पुत्रों की भांति रखूंगा। आशा है आप अवश्य स्वीकार करेंगे। यदि इन्हें गोद पुत्र बनादें तो मैं आपका आजीवन आभारी रहूंगा।" यह बात सुन कण्व जी बच्चों के भविष्य तथा राजा की नम्रता पूर्वक प्रार्थना को देखते हुए सोच विचार करने लगे और बोले, हे राजन आपकी बात को स्वीकार करता हूं। आप दोनों बच्चों को ले जाएं। इनमें से आप दुष्यंत को गोद पुत्र बना सकते हैं। मेघातिथि को वैसे ही रखो ताकि मेरा भी कोई नाम लेवा रह सके। एक बात का ध्यान रहे कि मेरा व बच्चों का मिलना बना रहे। स्वीकृति के बाद महाराज मरुत प्रसन्नचित बच्चों को अपने यहां ले गया। घर जाकर राजा ने उनकी देख-रेख व शिक्षा-दिक्षा का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया। उधर बच्चों के जाने के बाद कण्व आश्रम पर नित्य हवन, भजन किरतन करता रहा। सनै-सनै अनेक साधु, सन्त, धर्म अनुयाई, स्त्री-पुरुष आते-जाते ठहरने लगे। प्रवचन, कथा, वार्ता, सत्संग होने लगा। कण्व आश्रम विख्यात होता गया।

जब महाराजा मरुत के यहां दोनों बच्चे हर प्रकार निपुण हो गए तो दोनों की शादी करवा कर दुष्यंत को राजपाट तथा मेघातिथि को पुरोहित महामंत्री पद भार संभाल मरूत जी संयासी हो गए।

भगवान कश्यप की भक्ति अवश्य किया करो । वही तेरा तथा तेरे वंशजों का कल्याण करेगा। साधना करो सिद्ध बनोगे ।

उधर राजा तथा उसके अंग रक्षक घुड़सवार सभी कर्मचारी जब कण्व के निकट आए तो राजा ने देखा कि कोई महात्मा समाधि लगाए बैठा है । तुरन्त नतमस्तक हो महात्मा के चरणस्पर्श किए । परन्तु कण्व ज्यों का त्यों मौन रहा । कोई उत्तर न मिलता देख राजा को ऐसा लगा कि महात्मा इस समय समाधि अवस्था में है अत: ऐसी स्थिति में इनसे बोलना उचित न होगा,क्यों न किसी दिन इनके पास आकर इनका आर्शीवाद लूं । ऐसा सोच राजा वहां से चल पड़ा तथा राजा की देखादेखी सभी अंग रक्षक कर्मचारीगण कण्व के चरणस्पर्श करते चले गए । उनके वहां से जाने के बाद कण्व की जान में जान आई और उन्हें वहीं से बोधाभ्यास हुआ कि योग तपस्या तथा भक्ति में ही ऐसी शक्ति है जिसके आगे राजा को भी नतमस्तक होना पड़ता है । राजा को यहां से घर लौट जाने पर भी इस बात की भूल नहीं पड़ी। सोचते-सोचते राजा एक दिन उसी महात्मा के दर्शन हेतु फिर उसी स्थान पर जा पहुंचा । जहां पहले मिले थे । तब तक कण्व ने भी वास्तविक महात्माओं जैसी वेश भूषा एवं भावना बना ली थी । मिलते ही राजा ने फिर चरण स्पर्श व नमस्कार किया । दोनों ओर से कुशल मंगल पूछताछ के बाद कण्व राजा को अपने नियुक्त स्थान आश्रम पर ले गया जहां दोनों बच्चों ने आश्रम पर आए राजा को नमस्कार किया तथा खेलते रहे । कण्व ने राजा को बैठाया और स्वयं भी उनके पास बैठ गए । वार्तालाप प्रारम्भ हुआ ।

राजा ने कहा हे मुनिवर मुझे तो एक बार फिर आपके दर्शन पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । परन्तु उस दिन आप सरोवर पर समाधि लगाए बैठे थे । इसलिए उस दिन मेरी आपसे कोई बात नहीं हुई । आज फिर आया हूं ताकि आपसे मैं कुछ आधयात्मिक ज्ञान रूपी उपदेश तथा आर्शिवाद प्राप्त कर सकूं । तत् पश्चात् कण्व बोले,हे अतिथि गण,मुझे कुछ नहीं पता। कृपा आप मुझे बताएं कि आपने कहां से और क्यों मेरे पास आने का कष्ट किया । आप अपना नाम,ग्राम बताने की कृपा करें । इससे पहले मैं आपको अपना परिचय देता हूं । मैं कोई संत महात्मा,संयासी नहीं हूं जो तुम्हें अपने प्रवचन व आर्शीवाद दे सन्तुष्ट कर सकूं । मैं तो एक आपत्ति ग्रस्त व्यक्ति इन बच्चों को शत्रुओं से बचाने हेतु इस सरस्वती माता के चरणों में आकर छिपा हुआ हूं । अब आप की कृपा से ही मुझे परम पिता परमात्मा की भक्ति का ध्यान हुआ है । आशा है मुझे अवश्य सफलता होगी । राजा ने कण्व की बात धयानपूर्वक सुनकर अपना परिचय देते हुए बताया- हे मुनीवर मेरा नाम मरुत है । प्रयाग से दक्षिण पूर्व की ओर मेरा राज्य है । मेरी राजधानी आपके आश्रम से अधिक दूर नहीं है । मैं प्राचीन चन्द्र वंशिय महाराजा ययाति के पुत्र तुर्वसु के वंश से हूं । हमारे राज्य में पूर्ण शान्ति है । प्रजा मिलजुल कर संगठित

रहती है। इसलिए किसी दुश्मन से किसी प्रकार का भय नहीं है। परन्तु एक चीज की कमी मेरे पास है कि मैं निःसन्तान हूं। मैंने आपकी बात धयानपूर्वक सुनी और आपकी कार्यकुशलता से प्रसन्न भी हुआ क्योंकि मानव अपने तथा अपने परिवार के लिए सब कुछ करता है परन्तु दूसरों के लिए कष्ट उठाना परउपकार महापुण्य है। जैसा कि आप अपने भाई के पुत्र के लिए कर रहे हैं। आपका यही महान तप है। धर्म ग्रंथों में कहा है कि मनुषय गृहस्थी होते हुए भी मानवतावादी आचार विचार गुण कर्म अनुसार कोई भी महात्मा हो सकता है। यह कहते-कहते महाराज मरूत की निगाह बच्चों पर गई। मन ही मन सोचने लगा कि मैं इन सब के लिए क्या कुछ कर सकता हूं। अन्त में राजा ने कहा, हे मुनीवर आप मेरी एक बात स्वीकार करें कि आप बच्चों सहित मेरे साथ चलिए। वहीं रहिए। मैं आपकी पूरी-पूरी सेवा व सुरक्षा करुंगा। किसी प्रकार का भय एवं कष्ट वहां नहीं होगा। इतनी बात सुन महाराज कण्व ने कहा, "हे राजन, आपने जो हमारे प्रति सहानुभूति प्रकट की है। इसके लिए बार-बार धन्यवाद। अब रही बात आपके साथ चलने की तो अब यहां हमें सरस्वती माता एवं परम पिता भगवान की दया दृषटि से किसी प्रकार का भय संकट नहीं रहा है। और न ही आगे होगा।" यह सुन राजा ने फिर कहा, "हे मुनिवर मैं आपके इस भक्ति भावनात्मक कार्य में बाधक नहीं बनना चाहता। परन्तु एक बात और कहूंगा, आशा है अवश्य स्वीकार होगी। इसमें आपका, मेरा व बच्चों का, सभी का भला होगा। आपको मैंने बताया था, मैं निःसंतान हूं और इस वृद्ध अवस्था में होने की भी संभावना नहीं है। इसलिए मेरी इच्छा है कि आप मुझे ये दोनों पुत्र सौंपने की कृपा करें। मैं इन्हें अपने पुत्रों की भांति रखूंगा। आशा है आप अवश्य स्वीकार करेंगे। यदि इन्हें गोद पुत्र बनादें तो मैं आपका आजीवन आभारी रहूंगा।" यह बात सुन कण्व जी बच्चों के भविष्य तथा राजा की नम्रता पूर्वक प्रार्थना को देखते हुए सोच विचार करने लगे और बोले, हे राजन आपकी बात को स्वीकार करता हूं। आप दोनों बच्चों को ले जाएं। इनमें से आप दुष्यंत को गोद पुत्र बना सकते हैं। मेघातिथि को वैसे ही रखो ताकि मेरा भी कोई नाम लेवा रह सके। एक बात का ध्यान रहे कि मेरा व बच्चों का मिलना बना रहे। स्वीकृति के बाद महाराज मरुत प्रसन्नचित बच्चों को अपने यहां ले गया। घर जाकर राजा ने उनकी देख-रेख व शिक्षा-दिक्षा का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया। उधर बच्चों के जाने के बाद कण्व आश्रम पर नित्य हवन, भजन किरतन करता रहा। सनै-सनै अनेक साधु, सन्त, धर्म अनुयाई, स्त्री–पुरुष आते–जाते ठहरने लगे। प्रवचन, कथा, वार्ता, सत्संग होने लगा। कण्व आश्रम विख्यात होता गया।

जब महाराजा मरुत के यहां दोनों बच्चे हर प्रकार निपुण हो गए तो दोनों की शादी करवा कर दुष्यंत को राजपाट तथा मेघातिथि को पुरोहित महामंत्री पद भार संभाल मरूत जी संयासी हो गए।

मरुत जी द्वारा दुष्यंत को ब्याही गई पत्नि का नाम कृष्णा था। इनके द्वारा हुए मरुत वंश घर पुत्रों ने अपने अलग-अलग नामों से अलग-अलग राज्यों की स्थापना की। जैसे पुंड्र-चौल, कैरल आदि। मेधातिथि के पुत्र पर पौत्र कण्वायण ब्रह्मण हुए।

उधर कण्व के आश्रम पर कण्व के अनेक अनुयायी शिष्य ठहरने लगे। जिनमें विश्वामित्र की कन्या शकुन्तला भी इनके साथ आश्रम पर रही थी। यहीं दुष्यंत शकुन्तला का सम्पर्क विवाह हुआ था। जिनके अंश से पुरुवा वंशधार महापराक्रमी पुत्र भरत हुआ। दुष्यंत ने शकुन्तला को अपने साथ नहीं रखा। कुछ कथाकार कहते हैं कि दुष्यंत विवाह के बाद शकुन्तला को भूल गया था। कुछ का अनुमान है कि दुष्यंत, शकुन्तला और भरत को भूला नहीं बल्कि जानबूझकर नहीं ले गया था। क्योंकि दुष्यंत स्वयं तुर्वसु वंशधर महाराजा मरुत का गोदपुत्र होने के कारण भरत को पुरु वंशी मानकर नहीं ले गया। उसने समझा कि इनका वहां ले जाना उचित न होगा। अच्छा हो इन्हें इनका पैतृक राज मिले।

कण्व के आश्रम पर शकुन्तला और भरत बहुत दिन रहते रहे। कण्व भरत का कोटम्बिक नाते से दादा लगता था। बचपन से भरत कण्व को बाबा कहा करता क्योंकि उधर अब भी दादा को बाबा कहते हैं। भरत कण्व से अस्त्र शस्त्र विद्या अधययन करते-कराते जब निपुण हो गया तब कण्व जी के दिशा निदेर्श पर तथा दुष्यंत कृत मरुत वंशिय राज्यों की सहायता से भरत ने अपना पैतृक राज्य ही नहीं बल्कि अनेक राज्यों को पराजित कर महान चक्रवृत्ति राज्य स्थापित किया और भरत के नाम पर आर्यवर्त की जगह इस देश का नाम भारत वर्ष प्रचलित हुआ।

कहते हैं कि कण्व जी महाराज ने दीर्घ कालीन तपस्या की ओर हमेशा सरस्वती मां तथा परमपिता भगवान कश्यप की आराधना करते रहे। इसीलिए इन्हें अनेक धार्मिक ग्रंथों में कण्व कश्यप भी कहा जाता है।

सामाजिक उत्थान में बाधक समस्याएं

अब हम सामाजिक उत्थान में बाधक कुछ समस्याओं का जिक्र करना चाहते हैं, जिनके रहते किसी भी समुदाय का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उत्थान नहीं हुआ। केवल कहने से ही काम नहीं चलता इसके लिये कुछ करना पड़ता है। सर्वप्रथम अपनी वह त्रुटियां दूर करनी होंगी जिनकी वजह से आज इस आधुनिक युग में भी हम सबसे पीछे दिखाई दे रहे हैं। जबकि कई अन्य जातियों के लोग हमारे साथ हमसे भी अधिक परेशान और पिछड़े दिखाई देते थे वह हमसे बहुत आगे जा चुकेहैं। यदि हमारी यही कार्य-क्षमता, कार्यशैली और यही रफ्तार रही तो कौन कह सकता है कि उनका हमारा कभी साथ हो भी पायेगा, कहते हैं कि एक क्षण का पिछडा सैंकड़ों मील पीछे रह जाता है। और परिणाम-स्वरूप हमारी क्या गति होगी ? परन्तु हम तो इस एटमी द्रुत गति युग में भी प्रत्येक कदम पीछे पड़ते जा रहे हैं और हमें इसका अनुमान नहीं है। इसलिये हमारी बुद्धिमानी इसी में है कि हम अपने भले-बुले, हानिलाभ को ध्यान में रखते हुए शीघ्र समस्याओं का समाधान करें जैसे-

शिक्षा का अभाव- किसी भी समाज में हो या व्यक्ति में शिक्षा का अभाव बड़ी भारी त्रुटि है, शिक्षा क्या है ? शिक्षा का अर्थ है सीखना, जिसके बिना संसार का कोई भी कार्य सुचारू रूप से नहीं चलता, व्यक्तिगत हो या सामूहिक-सामाजिक हो या आर्थिक-धार्मिक हो या राजनैतिक, सबमें शिक्षा का महत्व है। सर्वांगीण विकास के लिये व्यक्तिगत तौर पर जीवन में काम आनेवाली बातों को सही समझने, रोजी रोटी की समस्याओं का हल निकालने, व्यक्तिगत एवं सामूहिक हित साधन के लिये शिक्षित होना अति आवश्यक है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सुशिक्षित व्यक्ति ही अपने भले बुरे को समझने के साथ-साथ देश के, जाति के, समुदाय और मानव-मानव के भले बुरे को समझ कर सब की वास्तविक प्रगति एवं उन्नति में सहायक हो सकता है। वास्तविक शिक्षा ही प्रगति एवं विकास के लिये चहुं ओर बढ़ने के अनेक रास्ते खोलती है। तात्पर्य यह है कि कोई भी वस्तु, कोई बात कोई रीति, कोई नीति ऐसी नहीं है जिसके सभी पक्षों को समझने या उजागर करने के लिये किताबी और व्यवहारिक शिक्षा की आवश्यकता न हो। शिक्षित होने का वास्तविक अर्थ वह सब कुछ सिखाना है जो किसी भी रूप में, किसी भी दृष्टि से मानव जीवन और समाज के लिए उपयोगी हो। इसमें अनेक विषयों के साथ-साथ नैतिक, राजनीतिक शिक्षा भी आ जाती है।

कई बार देखने में आया है कि कुछ पढ़े लिखे, डिग्री प्राप्त व्यक्ति नैतिकवादी, व्यवहारिक शिक्षा के अभाव से वह नहीं समझते कि मेरा देश, धर्म और समाज के प्रति क्या कर्तव्य है ?

तथा मानवता के नाते किससे क्या सम्बन्ध है ? और मैं किससे कैसा व्यवहार करूं ? बुजुर्गों ने इसीलिये कहा है कि पढने के साथ कढ़ना अर्थात नैतिकवादी आचार, व्यवहारिक ज्ञान होना अति आवश्यक है ।

यह व्यवहारिक ज्ञान कहां से मिलता है ? सर्व प्रथम माता-पिता से मिलना प्रारम्भ होता है । इसके अतिरिक्त जीवन में बड़े बुजुर्ग और महापुरूषों का सम्पर्क भी यही सबक सीखाता है । परन्तु इन सबमें मां की शिक्षा सबसे अधिक महत्व-पूर्ण है क्योंकि मां बच्चे को जन्म से खिलाती, पिलाती है, हिलाती है, सिखाती है । इसलिए बच्चा जो बचपन में सीखता है, देखता है वह अन्त तक नहीं भूलता चाहे वह बुरी हो या भली, व्यवहारिक हो या अव्यवहारिक उसके लिये तो वह सब व्यवहारिक है । जिन माताओं को ही व्यवहारिक ज्ञान नहीं वह बच्चों को सिखायेंगी. भी क्या ? वही तो सिखायेंगी, बतायेंगी जो उन्होंने सीखा है । जैसे कटु वचन, गंदी गालियां, अड़ौसी-पड़ौसी परिवार-व्यक्तियों से नित नया झगड़ा, अन्धविश्वासी, देवी देवता-भूत प्रेतों के नाम से बच्चों को डराना, ताकि वह अन्त तक डरपोक भीरू बने रहें । परिवार में मिलके रहना तोहीन समझें यदि कोई समझदार लड़का अपने असहाय माता-पिता की सेवा के लिये अलग होना नहीं चाहता उसे भी अपने मुग्ध-मंत्रों से अलग होने के लिये विवश कर देती हैं । जिन्हें यह पता नहीं कि यह अवस्था सबमें आती है । इस प्रकार की अव्यवहारिक बात महिला हो या पुरुष किसी को भी शोभा नहीं देती । इसलिये शिक्षा पुरुषों को ही नहीं महिलाओं को भी अति आवश्यक है ताकि वे बच्चों का तथा समाज का भविष्य उज्ज्वल बनाने में सहायक सिद्ध हो सकें ।

विवाह विच्छेद: विवाह विच्छेद अर्थात विवाह शादी के बाद रिस्ता टूटना । ब्याह शादी के बाद बेकसूर लड़की को छोड़ना या लड़की को न भेजना सामाजिक बुराई है । जिससे दोनों परिवारों की बेइज्जती के साथ-साथ दोनों तरफ से झुठी सच्ची बातें उभर कर सामने आती हैं । लड़की बदचलन, कामचोर, सास-ससुर से परिवार में मिलकर नहीं रहना चाहती, दूसरी ओर लड़का निकम्मा, नाकारा कसाई की भांति मार-पीट के काम ले, सास-ससुर की गालियां तथा दहेज कम क्यूं लाई ,जिसके बिना मुकदमा अधूरा है, इत्यादि । इस प्रकार की बातें सुन किसी भी पक्ष को एकदम भड़कना या कोई जटिल निर्णय लेना अच्छा नहीं । शान्ति और सद्भावना से आपसी बात-चीत द्वारा या दो चार समझदार व्यक्तियों की सहायता से समझ बुझा कर और सोच समझ कर इन बुराईयों को समाप्त कराना ही बेहतर है । न कि कोर्ट, कचहरी, अदालतों में वकीलों के घर भरना । इस प्रकार के झगड़ों में कई बार देखने में आया है कि लोग चर्चा करते हैं कि सुनते थे कुछ और पाया कुछ । असल में प्रतिष्ठा और स्वाधीनता के लिये लड़ाई थी, इनके लिये तो स्वाधीनता का अर्थ घर का विभाजन, ताकि अलग होने के

बाद मुझे किसी का कुछ करने या मुझसे किसी को कुछ कहने का अधिकार ना रहे। इसी प्रकार कुछ लड़के भी अपनी हठधर्मी और गलत शिक्षा के कारण छोटी-मोटी बात की भी बड़ी बात बना लेते हैं। इसलिये जहां तक सम्भव हो किसी खास कारण या मजबूरी के बिना विवाह विच्छेद नही होना चाहिए।

ब्याह-शादी और खर्च : ब्याह शादी में खर्च की कोई सीमा नहीं यह तो अपने हालात और क्षमता पर निर्भर करता है परन्तु आजकल कुछ लोग दूसरों की देखा-देखी दिखावे के लिए अपनी क्षमता और आवश्यकता से अधिक खर्च करते, कराते हैं। जायज और नाजायज कोई नहीं देखता, जिनमें कुछ खर्च तो ऐसे हैं जिनका न लड़कोंवालों को लाभ और न लड़की वालों को कोई फायदा। जैसे बारातों में सौ, दो सौ, अढाई सौ बाराती, बाजे वालों की प्लाटून, सौ, दो सौ मित्रों को जिमाणा, शामियाना, सजावट, क्राकरी का बिल, बेहताशा बिजली मेज कुर्सियां, स्टेंडिंग का खाना, कम रह जाये तो बेइज्जती, बच जाये तो फैंकना पड़े। शराबियों को छूट खाओ-पिओ, कुछ भी बको। उधर घुड़चढ़ी बारोटी पर नाचना, नोटों की बरसात इत्यादि क्या यह खर्च जायज है? यदि नहीं तो समाज के समझदार लोगों को मिलकर इस ओर ध्यान देना चाहिए ताकि गरीब और कमजोर व्यक्तियों पर इसका नाजायज बोझ ना पड़े।

परिवार नियोजन : आजकल कम सन्तानों की उत्पत्ति और पुत्र के समान ही पुत्री के महत्व को माना जाने लगा है। विशेष तौर पर शिक्षित परिवारों में यह देखने में आया है कि सरकार द्वारा चलाया गया परिवार नियोजन अभियान सफल रहा है। भारतीय जनता के सभी वर्गों में यह विचार घर करता जा रहा है कि सुखीजीवन के लिये छोटा परिवार होना चाहिए। कई शिक्षित माता-पिता विशेषकर मध्यम वर्ग के लोग यह अनुभव करते हैं कि बच्चे को पढ़ाने-लिखाने में, पालन-पोषण पर आजकल लडके लड़कियों दोनों पर ही लगभाग समान व्यय करना पड़ता है कोई विशेष अन्तर नहीं है। इस कारण अब पुत्र के लिये बहुत अधिक लालायित होने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। परन्तु हमारे समाज में अभी इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता। इस ओर विशेष रुचि की आवश्यकता है।

दहेज प्रथा : दहेज प्रथा भी एक सामाजिक बुराई है इस कारण कई दहेज के लिये पैसे के अभाव में, दहेज के लालच में बेमेल हुई शादियां देखने में आई हैं। जिससे जीवन भर लड़के लड़की का ताल-मेल नहीं बैठ सका, किसी को मार दिया, किसी ने आत्महत्या करली, इस प्रकार की नित्य प्रति खबर सुनने में आती है। कहते हैं कि दहेज का लेना और देना कानूनी अपराध है। इसलिए हम ऐसा काम क्यूं करें जिससे किसी को कानून का दरवाजा खट-खटाना पड़े, जहां लोग हंसाई के साथ-साथ लुटाई भी हो।

आपसी फूट : आपसी फूट एक भयंकर बीमारी है जिसने बड़े-बड़े घर गांव, देश व विदेशों के लोगों को बरबाद किया। कईयों के तो नाम व निशां संसार से उठ गये, इस प्रकार

के उदाहरणों से इतिहास के इतिहास भरे पड़े हैं। कहते हैं कि आपस की फूट से लंका टूट गई, यदि विभीषण रावण से अलग नहीं होता तो शायद राम लंका को फतेह नही कर पाता। इसी प्रकार कुरुक्षेत्र की भूमि में हुआ महाभारत भी आपसीफूट के कारण था। जिसमें देश के ही नहीं विदेशों तक के राजा, महाराजा, यौद्धाओं का खात्मा हुआ। इसी के फलस्वरूप हजारों हर्ष विदेशी मुगलों तथा दो सौ वर्ष भारत में अंग्रेजों की हुकुमत रही, जिनके द्वारा हमारी तुम्हारी व देश की कैसे, क्या दुर्दशा हुई ? यह दंतकथा नहीं ऐतिहासिक सत्य बात है। इस संकट-ग्रस्त देश का पुनुर्त्थान कैसे हुआ हम आपको अगले लेख में बतायेंगे। कहते हैं कि बिगड़े हुए हालात में जिस व्यक्ति या देश ने तरक्की की। सर्व प्रथम शिक्षा और संगठन का सहारा लेना पड़ा। तब कहीं अटूट संघर्ष और कठिनाईयों के बाद सफलता का मुंह दिखाई दिया। परन्तु हमारे समाज के लोग अब तक नहीं समझ सके कि आपसी रंजिश और बैरभाव ने हमें क्या से क्या बना दिया और क्या बनना असभी बाकी है समय ही बतायेगा। इसलिये सामाजिक उत्थान के लिए संगठन अति आवश्यक है।

राजनीतिक सूझ-बूझ : आपको पता ही है कि हमारे देश में प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था है जिसमें प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि (एम.पी / एम.एल.ए.) सरकार बनाकर चलाते हैं। देश के हर बालिग व्यक्ति को वोट देने, चुनाव द्वारा सरकार में भागीदारी के लिए एम.पी., एम.एल.ए. बनने, बनाने का राजनैतिक अधिकार प्राप्त है। कहते थे कि राजा मां के पेट से पैदा होता था परन्तु अब मतपेटियों से राजा (राजनैतिक) बनता है। स्वयं सरकार में राजनैतिक भागीदार बनना या किसी को बनाना वोट रूपी राजनैतिक चाबी प्राप्त करना है जिससे हर प्रकार के ताले खुलते हैं। परंतु हम वोट किसको दें और किसको बनाएं यह हमारी सूझ-बूझ और समझदारी का काम है वोट तो आप और हम डालते हैं। परन्तु कुछ किसी के दबाव में, कुछ लालच में तो कुछ डंके की चोट कहके वोट डालते हैं। जिनसे कोई बनता है तो कोई हारता है। जो लोग किसी के दबाव में या कुछ ले के चोरी छिपे अलग-अलग वोट डालते हैं, उनकी गिनती ना हारने वाला करता है कि मैं इनके वोटों की कमी से हारा और ना ही जीतने वाला करता है कि मैं इनके वोटो के कारण जीता हूं।

इसलिए सामूहिक समझदारी से किसी उम्मीदवार का खुलकर समर्थन नहीं करते तब तक हम राजनीति में अपनी पहचान नहीं बना पायेंगे, कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक समाज से सामाजिक बुराईयां, अनियमितताएं दूर नही होंगी तथा हम अपने गुरूजन, महापुरुषों की मान्यता और बुजुर्गों का मान सम्मान नहीं करेंगे तब तक समाज का व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामूहिक उत्थान होना कठिन है।

मानो न मानो खुशी आपकी,
हम मुसाफिर हैं कहके डिगर जायेंगे।

देश का पुनर्उत्थान कैसे हुआ

कौन थे वे लोग ? जिनकी प्रेरणा और कुर्बानियों से देश,धर्म और दबे कुचले लोगों का पुनः उत्थान हुआ ।

भारत के लिए १९वीं शताब्दी उल्लेखनीय शुभ शताब्दी बताते हैं ।जिसमें बड़े-बड़े बुद्धिमान चेतनाकार उभर कर सामने आए। जिन्होंने हजारों वर्ष पुरानी सामाजिक एवं राजनैतिक गुलामी की दलदल में फंसी भारतीय जनता को निकालने का भरसक प्रयत्न किया। देश में आई गुलामी और दुर्दशा का कारण बताते हुए कहा जाता है कि भारत कभी धन-धान्य से भरपूर सर्व सम्पन्न देश था । दुनिया इसे सोने की चिडिया कहती थी । यहां के वीर बहादुर क्षत्रिय राजा महाराजाओं की दुनिया में धाक थी तथा वीरांगना महिलाओं का रिकार्ड तो आज तक कोई देश नहीं तोड़ सका । यहां के लोग सत्यवादी, धर्म में पूरी आस्था रखते थे । परन्तु जब यहां लोभी, पाखण्डी ब्राह्मण होने लगे और हमेशा के लिए अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए तरह-तरह के पाखण्ड, तरह-तरह की मान्यता, जात-पात, ऊंच-नीच, अलगाववाद को बढ़ावा देना शुरु किया जिसने जन साधारण तो क्या राजा महाराजाओं को भी अछूता नहीं, रहने दिया । इस दुर्भाग्य पूर्ण समय और षड्यंत्रों का जितना शिकार शुद्र दलित और महिलाओं को होना पड़ा,इतना किसी अन्य को नहीं । जिनसे शिक्षा,सुरक्षा सम्पत्ति का अधिकार भी छीन लिया ताकि ये भुखमरी और डंडे के भय में हमेशा के लिए दास और दासियां बनें निम्न से निम्न कार्य करते रहें । इस प्रकार बढ़ती अनियमितताओं और फूट के कारण विदेशी शक्तियां देश पर हावी होती गई । जिनके द्वारा लूट-पाट,मार-काट तथा कत्ले-आम भी हुए । इस प्रकार देश का धन वैभव तो गया सो गया,प्राचीन सांस्कृतिक स्मृतियां भी लोप होती गई । यहां के प्राचीन वंश रहे न वर्ग, दुर्गों के अवशेष भी कहीं-कहीं ढूंढे से मिलने लगे । आक्रमणकारी हुण,शक,यवन मुसलमानों के बाद अंग्रेजों का समय आया,उन्होंने भी अपनी करनी में कसर नहीं छोड़ी । कहीं शक्ति से कहीं युक्ति से लौभ-लाभ दे सब को अपने फंदे में फांसते रहे । बड़े-बड़े राजा रइशों के यहां तो विदेशी महिलाएं तक भी ला छोड़ीं ताकि वह ऐशो असरत, भोग विलास में अंधे आपाहिज हुए सब कुछ स्वयं समर्पण करते रहे । इस प्रकार सम्पूर्ण देश इन की लपेट में आया । तरह-तरह के कर थोपे गए । आमदनी कम खर्चे अधिक,९० % लोगों से कर लगान भी नहीं चुका तो अपने घर जमीन जायदाद ही छोड़ गए । इसके अतिरिक्त शुद्र दलित कमजोर वर्ग के जिम्मे अवैतनिक कार बेगार लगाई गई । जो करदाताओं से भी कठिन कार्य था । स्त्री हो या पुरुष,दिन हो या रात बेगार में जाना अनिवार्य था । सरकारी, गैरसरकारी कर्मचारियों के अलावा बड़े-बड़े लोगों के घरेलू काम-काज भी बेगार में करने पड़ते थे ।

देशव्यापी धर्मान्धता, सामाजिक बुराइयां तथा अंग्रेजों की चाल कुछ लोगों को खटकने लगी। इस प्रकार अंग्रेजों के विरुद्ध सर्वप्रथम काम रोको हड़ताल कहारों ने की थी। ये लोग कलकत्ता हुगली बंदरगाह पर नावों, पालकी आदि पर माल, असबाब सवारी आदि लाने-ढोने का काम करते थे। इनमें से जो अंग्रेजों को फंसता उसी को सारा-सारा दिन बेगार में घसीटते रहते थे। एक-एक आदमी कई-कई दिन लगा रहता सः परिवार भूखा रहना पड़ता। इसलिए वहां के कहारों ने संगठित होकर हड़ताल की। ये कई दिन चली। जिनको घरों से घसीट-घसीट सरे आम पेड़ों से बांध-बांध पीटा गया था। इस प्रकार इनकी बेगार तो समाप्त नहीं हुई परन्तु ये फैसला हुआ कि सब के सब बारी बारी एक के बाद एक बेगारी में काम देते रहेंगे। एक आदमी एक दिन से जयादा बेगार नहीं देगा। ये १९ वीं शताब्दी का प्रारम्भिक दौर था। तत्पश्चात देश की सामाजिक तथा आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याओं का समाधान चाहने वाले चेतनाकार व्यक्ति दिखाई देने लगे।

सन् १८१५ में बंगाल से श्री राजाराम मोहनराय ने समाजसुधार नामक ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। इनका प्रचार चाहे किसी विशेष वर्ग या क्षेत्र तक ही रहा हो परन्तु सुधारक विचारधारा की शुरुआत तो हुई। इनका मुख्य उद्देश्य शिक्षा था चाहे वह अंग्रेजी ही क्यों न हो। इसी प्रकार सन १८३० में जस्टिस गोविन्द राणा डे ने प्रार्थना समाज की स्थापना की जो सर्व धर्म हिन्दु, मुसलमान, इसाईयों को संगठित होने की प्रेरणा देते तथा बाल-विवाह, सती प्रथा का विरोध करते थे। इन महापुरुषों का विचार था कि देश की सभी समस्याओं का समाधान सूझ-बूझ, शिक्षा एवं संगठन के बिना नहीं हो सकता और वे समझते थे कि इस समय अंग्रेजी शिक्षा तथा अंग्रेजों से तालमेल रखकर ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है। इन्होंने प्रार्थना समाज की बंगाल, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रांतों तक बढोतरी की। इनसे अंग्रेज भी खुश रहे तथा कुछ लोगों पर प्रभाव भी पड़ा क्योंकि यह ईशा समर्थक थे।

सन् १८५७ में देश व्यापी भुखमरी और अंग्रेजों की मनमानी लूटमार के विरोध में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहो या गदर हुआ, कहा जाता है जिससे अंग्रेजों को धक्का अवश्य लगा पर वह संभल गए। भारत में आंतरिक फूट के कारण देश भक्तों का यह प्रयास विफल रहा। अंग्रेजों की ओर से जुलमों की वह आंधी आई कि भारत का बच्चा-बच्चा कराह उठा। अंग्रेजों ने क्रान्ति की आग बुझा अवश्य दी परन्तु फिर भी वह कभी न कभी, कहीं-कहीं मंद या तेज सुलगती रही।

महर्षि दयानन्द भारत में एक ऐसा कर्मयोगी महापुरुष पैदा हुआ जिसने दबे, कुचले, भूले-भटके लोगों को जहालत से निकलने का रास्ता दिखाया था जिन्होंने प्राचीन वैदिक धर्मानुसार एक स्वच्छ समाज का निर्माण करने के लिए सन् १८७५ ई० में आर्य समाज की स्थापना की। जिसके द्वारा शुद्र दलित स्त्री जाति का उत्थान तथा देशव्यापी सामाजिक बुराईयों

को मिटाने हेतु इनके निर्माता धर्म के ठेकेदार लोभी पाखंडियों का भाण्डा फोड़ प्रचार करने के साथ-साथ लोगों में राजनैतिक चेतना लाने का भरसक प्रयत्न भी किया। इनकी प्रेरणा से एक नया समीकरण, नए-नए विचार, नई-नई भावी आशाओं का सर्जन होने लगा। महर्षि का यह प्रचार व प्रसार पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में ही नहीं सर्वत्र भारत में बढ़ता गया। इस प्रकार आई सामाजिक परिवर्तन लहर से रुढीवादी पाखंडियों ने अपनी रोटी-रोजी, मान-सम्मान में घाटा होता देख इस महापुरुष को सन १८९३ में किसी निर्दयी के हाथों जहर देकर मरवा दिया, फिर भी ये लहर दबने की बजाय अधिक तेजी पकड़ती गई। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश में आर्य समाज की बढ़ोत्तरी का श्रेय लाला लाजपत राय तथा स्वामी श्रद्धानन्द इत्यादि महापुरुषों को जाता है। लाला लाजपत राय केवल समाज सुधारक ही नहीं सरगर्म क्रान्तिकारी नेता भी थे जिन्होंने अपने संगी साथी समर्थकों सहित समाज सुधार कार्यक्रमों के इलावा अनेक राजनैतिक क्रांतिकारी आन्दोलनों में भी बढ़-चढ कर भाग लिया। लाला लाजपतराय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष रहे जिसके अंतर्गत जगह-जगह जलसे जुलूसों द्वारा विधवा विवाह प्रचलन, अछूत उद्धार, पुनः धर्म स्वीकार, शुद्धिकरण, अंधविश्वास, देवी देवता, पाखंडियों का भांडा फोड प्रचार प्रसार के साथ-साथ छात्र-छात्राओं के लिए अत्यधिक गुरुकुल कॉलेज पाठशालाओं की स्थापना हुई। जैसे कि डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर कन्या महाविद्यालय जालन्धर कन्या महाविद्यालय, देहरादून गुरुकुल कांगड़ी, इत्यादि तथा आर्य समाज के विपरीत सभा एवं संस्थाएं भी गठित हुई। जिनमें सनातन धर्म, हिन्दू सभा, मुसलमानों की जमायतें इस्लामियां, सिक्खों की सिंह सभा, आदि सामाजिक परिवर्तन विरोधी संस्थाओं द्वारा जो प्रचार हुआ वह उन्हीं जैसे रुढ़ीवादी लोगों तक ही सीमित रहा।

महर्षिदयानन्द की भांति सन् १८८६ में स्वामी विवेकानन्द उभर कर सामने आए। जिन्होंने कलकत्ता से अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के नाम से एक मिशन की स्थापना की जबकि सन १८१५ में यहीं से राजा राम मोहनराय द्वारा ब्रह्म समाज की स्थापना हुई थी। जो बंगाल तथा इसके आसपास एवं विशेष वर्ग तक ही सीमित रही क्योंकि राजाराम मोहन राय का विचार था कि अंग्रेजी शिक्षा और अंग्रेजों से ताल मेल बिना भारत का उत्थान नहीं हो सकता। यही मत जस्टिस राणाडे का रहा, जिन्होंने प्रार्थना समाज संगठन बनाया था। ये दोनों महापुरुष ईशा समर्थक थे परन्तु स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय प्राचीन वैदिक धर्म की प्रशंसनीय पताका भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों तक फहराई थी। इस प्रकार भारतीय जनता में सामाजिक चेतना के साथ-साथ राजनैतिक चेतना भी घर करती जा रही थी।

दूसरी ओर देश में बढ़ती राजनैतिक चेतना को देखते हुए ह्यूम नामक अंग्रेज ने ब्रिटिश सरकार को सलाह दी थी कि भारत में एक संस्था बनाई जाए जिसमें सभी धर्म के लोग शामिल हों। जिसके माध्यम से भारतीयों की छोटी बड़ी मांग सरकार को प्रस्तुत होती रहे जिससे

भारतीयों की अंग्रेजों के प्रति भावना का पता चलता रहे जिनका समाधान सरकार अपने हित को धयान में रख कर करे। तब २८.१२.१८८५ को 'अखिल भारतीय कांग्रेस' की स्थापना हुई। उस समय इसके गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, दादा भाई नौरोजी जैसे नेताओं सहित केवल ७२ सदस्य थे। कांग्रेस का यह कार्यक्रम धीमी गति से काफी दिन चलता रहा। उधर अंग्रेज अपनी फूट डालो राज करो नीति के तहत हिन्दुओं को मुसलमानों से तथा मुसलमानों को हिन्दुओं से लड़ाते व भड़काते रहे। कई जगह इलाकाई संगठन गठित करने के लिए रद्दो बदल किया जैसे दिल्ली के चहु और निकटवर्ती जिलों को दिल्ली से निकालकर पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में मिला दिया। कहते हैं सोनीपत, बहादुरगढ़, रिवाड़ी, पलवल आदि कभी दिल्ली में सम्मलित थे। सन् १९०५ में बंगाल के विभाजन के बाद भारतीयों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध रोष की हवा फिर सरसराने लगी। उधर कांग्रेस में भी अंग्रेजों से तालमेल की जगह खिलाफत की बातें चलने लगी। तब महात्मा गांधी एक ऐसा चमत्कारी व्यक्ति कांग्रेस में आया जिसने जाति-वर्धक, छुआ-छूत विरोधी अभियान के साथ-साथ अंग्रेजों को चेतावनी दी कि या तो हमें हमारा राजनैतिक अधिकार (स्वराज) दें अन्यथा भारत अब अधिक चुप नहीं रह सकता। महात्मा गांधी सत्य, अहिंसा के प्रतीक तथा जाति मुक्त समाज समर्थक व्यक्ति थे जिनके नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी गई। स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ-साथ अछूत उद्धार, महिलाओं के कल्याण हेतु मानवतावादी विचारों से भरपूर सामाजिक परिवर्तन लाना इनका मुख्य उदेश्य था। इनका कहना था कि राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद देश में ऐसा राज्य स्थापित हो जिसमें सबको रोजी रोटी शिक्षा, सुरक्षा सामाजिक एवं आर्थिक समानता प्राप्त हो जिस के लिए निष्पक्ष, निस्वार्थ नेकी से कार्य करना आवशयक है। इनकी प्रेरणा से प्रभावित हुए हर वर्ग, हर समुदाय के नरम-गरम लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हर प्रकार की अत्यधिक कुर्बानियों के बाद १५ अगस्त सन् १९४७ की रात अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा, तब देश को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का योगदान भी किसी से कम नहीं रहा जिन्होंने विदेशों में जाकर आई.एन.ए. की स्थापना की थी और अपनी सेनाओं को अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए दिल्ली चलो और जय हिन्द का नारा दिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी नेता जी स्वदेश नहीं पहुंचे जिनकी मृत्यु या जीवित रहने की पुष्टि आज तक नहीं हो सकी। उधर ३० जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी अमानवता वादी देश द्रोही लोगों की गोली का शिकार बने। जाते-जाते अंग्रेज ऐसे हालात पैदा करके गए थे कि भारतीय अपने राज पाट का काम स्वयं सम्भाल न सके। जैसे पाकिस्तान का बंटवारा, हिन्दू-मुसलमान मारकाट, रियासतों का अलगाववाद जैसी कठिन समस्याओं पर भारतीय कर्मठ कार्यकारी बुद्धिजीवी नेताओं ने काबू

पा लिया। क्योंकि उस समय डा. राजेनद्र प्रसाद, पं. जवाहर लाल नेहरु, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री तथा डा. भीमराव अम्बेडकर, राम मनोहर लोहिया जैसे अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक कर्मठ कार्यकारी नेता मौजूद थे।

डा. भीमराव अम्बेडकर निम्न वर्ग शुद्र दलित समाज से एक ऐसा साहसी बुद्धिमान व्यक्ति उभर कर सामने आया जिसने जीवन भर शूद्र दलित अछूतों को सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। हांलाकि गांधी जी भी हरिजन अछूत उद्धार कार्यकारी नेता थे। परन्तु इनमें कार्यरूपी मतभेद अवश्य रहा करता क्योंकि गांधी जी यह काम सनै-सनै लोगों की अंतरात्मक भावना से होना बेंहतर समझते थे तथा डा. भीमराव सरकारी कानून और कानूनी दबाव और सहायता से इस काम में शीघ्र सफलता प्राप्त करना चाहते थे। जब गांधी जी ने शूद्र दलित समुदाय से कुछ जातियों की सामाजिक प्रतिष्ठा बढाने के बहाने खुश रखने के लिये हरीजन नाम दिया तब अन्य शुद्र समुदाय के लोगों को भी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और अधिकार का ध्यान आने लगा। तब इन्होंने भी अपनी-अपनी जातिगत प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अलग-अलग जाति बदल सामाजिक संगठन बनाने शुरु किए जैसे नाई, कुलीन, लौहार, पांचाल, खातियों से जांगड़ा ब्राह्मण, मालियों से सैनी तथा झीमर, धीमर कश्यप राजपूत आदि नामक सभा संस्थाएं आदि स्थापित होने लगी। इस प्रकार शूद्र शूद्र भी एक नहीं रहे क्यों इन्हें कोई सलाहकार नहीं मिला बल्कि कुछ स्वार्थी कट्टर पंथी लोग इनमें अलगाववादी ऊंच नीच की हवा भरते रहे। इस प्रकार सर्व विख्यात बहुसंख्यक शुद्र दलित समाज में गांधी द्वारा केवल अछूतों का हरिजन नाम और राजनैतिक नेताओं में इन्हीं की चर्चा तथा अन्य दबे कुचले शूद्रों को अलग-अलग पीछे छोड़ना डा. भीमराव को पसंद नहीं था।

इसीलिए इनका संघर्ष जारी रहा। तब कुछ राजनैतिक नेता भी डा. भीमराव की भांति हरिजनों के साथ अन्य पिछड़े लोगों की बात कहने लगे थे। जिनमें प्राथमिकता के आधार पर डा. राम मनोहर लोहिया का नाम आता है। जो कि समाजवादी विचार धारा का व्यक्ति था उसने ६०% पिछड़ों को न्यायोचित अधिकार देने की बात की। हरिजनों की भांति पिछड़ों को पिछड़ा वर्ग (बैकवर्ड) नाम से संगठित होने, संघर्ष करने, अधिकार लेने की प्रेरणा दी। सन १९३१-३२ में जब लंदन स्थित गोल मेज कान्फ्रेंस में गांधी, जिन्हा, डा. भीमराव आदि नेताओं का मतभेद तथा गांधी जी का अनशन समाप्त कराने के लिए सभी नेताओं ने पूर्ण प्रयत्न किया। जिसमें जीन्हा को छोड़ गांधी जी एवं डा. भीमराव आदि सभी नेताओं का समझौता हो गया। इस प्रकार हर वर्ग एवं जातीय समुदाय के लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। देश की स्वतंत्रता का ऐलान होने के बाद देश में प्रजातंत्र राज्य की स्थापना

और भारतीय संविधान की रचना का काम सभी भारतीय नेताओं की सहमति से डा. भीमराव अम्बेडकर को सौंपा गया जिसमें उन्होंने देश की सभी समस्याओं का कानूनी समाधान लिखने में कोई कसर नहीं छोड़ी। संविधान सभी के लिए बराबर है जिसमें हर भारतीय नागरिक को वोटों का अधिकार, वोटों से सत्ता तथा सत्ता में अनुशासन का प्रावधान, महिलाओं के लिए हर जगह समानता, शूद्र दलित कमजोर वर्ग से हरिजनों को २२% विशेष आरक्षण तथा अन्य पिछड़े वर्ग को कमीशन की जांच के आधार पर विशेष आरक्षण आदि सुविधाएं मिलने का प्रावधान और सबको अपनी बात कहने की स्वतंत्रता आदि मुख्य धाराओं के साथ यह संविधान २६ जनवरी सन् १९५० में लागू हुआ और कांग्रेस सत्ता में आई औरदेश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद तथा प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू हुए जिन्हें अंग्रेजों द्वारा पैदा की हुई समस्याओं पर काबू पाने के लिए अत्यधिक कठिनाइयां का सामना करना पड़ा।

जैसे देश में खाद्यान की कमी, राजा महाराजाओं से टकराव, पाकिस्तान का बंटवारा और उधर से आए शरणार्थियों को बसाना एक नई समस्या थी। क्योंकि यहां पहले ही कमजोर वर्ग, बेसहारा गरीबों की संखया अधिक थी फिर भी इन का मनोबल नहीं गिरा हालांकि पिछड़ों के लिए काका कालेलकर कमीशन नियुक्त किया गया और उस की रिपोर्ट यह कह कर दबाई गई कि वर्तमान आपातकालीन समस्याओं से निपटने के बाद इस पर अमल होगा। फिर भी पिछडे लोगों ने पूर्ण सब्र शान्ति से नेताओं का साथ दिया। इस प्रकार अन्य समस्याओं से तो देर सवेर आसानी से, परेशानी से नेतागण निपटते रहे। परन्तु दुर्भाग्य वश उनके रहते-रहते पिछड़ों के लिए कुछ कर पाने का समय नहीं आ सका क्योंकि मानवतावादी :स्वार्थ भाव से देश हित में काम करने वाले वे लोग भगवान को प्यारे होते गए। त्यों-त्यों कुर्सी और कुर्सी के भूखे लोग सत्ता में प्रवेश करते गए। इसीलिए जवाहर लाल ,लाल बहादुर शास्त्री के बाद ईन्द्रा गांधी शासनकाल में नेताओंकी खींचातानी से पूर्व कांग्रेस कंडम हुई। तथा इन्द्रा समर्थकों द्वारा आई कांग्रेस, मुरारजी की जनता पार्टी और चरण सिंह का लोकदल आदि पार्टियां गठित हुई। सन १९७७ के आम चुनाव में विपक्षी पार्टियों का तालमेल पिछड़े वर्ग की बेरुखी तथा ईन्द्रागांधी सहित कांग्रेस को बुरी तरह पराजय का मुंह देखना पड़ा। प्रधान मंत्री पद के लालच में हरिजन नेता जगजीवन राम भी विपक्ष में जा मिले। तब जनता पार्टी की ओर से २४.५. १९७७ को मोरारजी देसाई प्रधान मंत्री बने। उन्होंने काका कालेलकर की भांति पिछड़ों के लिए बी.पी. मंडल आयोग द्वारा पुनः जांच कराई थी परन्तु वह रिपोर्ट लागू नहीं हो पाई क्योंकि इनकी मिली जुली जनता दल सरकार में खींचतान के कारण पूर्ण अवधि तो क्या ढाई वर्ष भी पूरे नहीं हो पाये और चौ. चरण सिह कुर्सी नसीन हो बैठे। वे भी लगभग चार महीने कुर्सी सम्भालने के अलावाकुछ नहीं कर पाये। हाँ इस राजनैतिक हलचल में जातपात सम्प्रदायिक दंगे, अलगाव वाद को बढ़ावा अवश्य मिला।

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे आतंकवादियों के गढ़ बनते गए। आखिरकार मध्यावधि चुनाव में ईन्द्रा गांधी फिर सत्ता में आई। जिसने गरीबी और आंकवाद से निपटने के लिए कई योजना सख्ती से लागू करने का प्रयत्न किया। परन्तु हुआ ये कि मर्ज बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की। स्वयं ईन्द्रा गांधी को भी अपने अंग रक्षकों की गोली का शिकार होना पड़ा। फिर कांग्रेस पार्टी ने राजीव गांधी को उनकी जगह नियुक्त किया। जो कि अपनी मां के अनुरूप कार्य करते-करते शीघ्र नेशनल नेताओं में सुमार होता गया। राजीव गांधी के बाद श्री वी.पी. सिंह जनता दल से प्रधान मंत्री तथा देवी लाल को खुश करने के लिए उपप्रधान मंत्री बनाना पड़ा, जिनके शासन काल में शान्ति की बजाय अशान्ति बढ़ती गई क्योंकि भारतीय जनता पार्टी द्वारा राम जन्म भूमि -बाबरी मस्जिद को राजनैतिक मुद्दा बनाए जाने से हिन्दू मुस्लिम में दरार पैदा होने लगी। उधर पिछड़ों के लिए बी.पी. मंडल आयोग द्वारा कथित २७% आरक्षण देने की बात श्री वी.पी. सिंह प्रधान मंत्री के कहने पर ही पिछड़ों के विरोधी, दिखावटी हमदर्द नेता तथा उच्च वर्ग के लोग एक दम बोखला उठे। वी.पी. सिंह को हटाने तथा आरक्षण अवैध ठहराने के लिए जगह-जगह तोड़-फोड़ दशहत फैलाने की ऐसी कोशिश की गई जैसे कि इस देश में गरीबों को खाने पीने रहने का अधिकार ही नहीं। वी.पी. सिंह ने प्रधान मंत्री पद त्याग दिया परन्तु उद्देशय को नहीं छोड़ा। तब चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री हुए। इनके भी लगभग ७ महीने समस्याओं में व्यतीत हुए जिन्होंने आरक्षण विरोधी आंदोलन को दबाने के लिए बी.पी. मंडल की रिपोर्ट गलत या सही साबित करने के लिए न्यायालय को सौंपनी पड़ी। उधर धर्म के नाम पर राजनीति चमकाने वाले लोग राम जन्म भूमि- बाबरी मस्जिद की हाय तौबा मचाने लगे। सबसे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण घटना उग्रवादियों द्वारा सरे आम पब्लिक जलसे में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या इस दौर में हुई। जबकि सरकारी सुरक्षा भी उन्हें उपलब्ध थी। देश की अखण्डता और मानवता के नाते सामाजिक न्याय के प्रतीक लोगों ने इस हत्या और आतंकवाद की निन्दा करते हुए कहा था कि इन हालात में देश का क्या होगा ? यदि हमने स्वार्थ अनुशासन हीनता एक दूसरे के प्रति द्वेषात्मक भावनाओं का त्याग नहीं किया तो देश, धर्म, जाति या समुदाय कुछ भी सुरक्षित नहीं रह सकता।

ऐसा हमें विश्वास है जिन से कमजोरों के लिए तो मुसीबत है ही परन्तु भगवान न करे तगड़ों को भी बुरे दिन देखने पड़ें। इन सब समस्याओं का समाधान अपने पूर्वजों और जगत विख्यात महान आत्माओं के बताए रास्ते पर चल कर ही होना संभव है।

दो शब्द और

प्रिय पाठको, इस पुस्तक में लिखने के लिए ऐतिहासिक धार्मिक एवं सामाजिक तथ्य प्राप्त होने से पहले हमारे समाज के प्रति कई प्रकार की भ्रांतियां कई प्रकार के सवाल, कई प्रकार की बातें सुनने में आती थी। जिनके लिए हमारे पास खामोश रहने के सिवाय कोई उत्तर नहीं था। हमारे समाज एवं जाति के पूर्वज इस जातिवाद के चक्कर में फंस कर अपनी प्राचीन परम्परा, प्राचीन वंश तथा अपना प्राचीन अस्तित्व भी भुला बैठे। न इनका इतिहास रहा और न ही इतिहासकार। जब किसी देश का, समुदाय एवं जाति का इतिहास लुप्त हुए हजारों वर्ष व्यतीत हो चुके हों तो उस समाज या जाति के उन पूर्वजों की हजारों वर्ष बाद की सन्तानें कैसे कहेंगी कि हमारे पूर्वज महऋषि कश्यप, बाबा कालू, कण्व जैसे ब्रम्ह ऋषि एवं क्षत्रि राज पुत्र भी थे। जबकि वह असाक्षरतावादी शूद्रों के साथ गुलामी के माहौल में पले हों। इस कारण मुझे ऐसी पुस्तक लिखने की आवश्यकता महसूस हुई ताकि लोग अपने सवालों का उत्तर स्वयं ढूंढ सके तथा समाज में फैली भ्रांतियां एवं सामाजिक बुराइयां दूर हो सकें अन्यथा मै बहुत बड़ा लेखक तथा साहित्यकार तो नहीं हूं फिर भी मैंने अपनी बुद्धिबल एवं आर्थिक हालातानुसार अनेक ऐतिहासिक एवं सामाजिक ग्रंथों तथा मौखिक वार्तालाप व कथा कहानियों से जाति सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्य एवं जानकारियाँ प्राप्त की और मेरा कितना खर्च, कितना समय व्यतीत हुआ, इसका किसी पर कोई अहसान नहीं। इस कार्य के लिए मेरा नैतिक कर्त्तव्य और समुदाय का प्यार मुझे इधर धकेलता रहा और मैं दुःख सुख में इस काम को करता रहा। मुझे अपनी सेहत और आर्थिक हालात को देखते हुए ये आशा नहीं थी कि मैं इस कार्य को पूरू कर सकूंगा परन्तु भगवत कृपा से यह काम पूरा हो ही गया। मैं दावा नहीं करता कि मैने बहुत महत्तवशाली कार्य किया है, मैं दावा नहीं करता कि इसमें कोई कमी नहीं निकाल सकता। जो कुछ भी है वह आपके हाथ में है। इसकी कमी त्रुटियाँ निकालना या निकलवाना आपका भी तो नैतिक कर्त्तव्य है। खासकर नवयुवक इसके अधिक जिम्मेदार हैं। आप कहेंगे कि पुस्तक छोटी है इसका कारण यह है कि आजकल पाठकों के पास इतना समय क़हाँ है कि वो बड़े-बड़े ग्रंथों को पढ़ सकें। इसलिए इस पुस्तक में लिए गये तथ्य बढ़ा चढ़ाकर लिखने की बजाय संक्षिप्त रूप में लिखे हैं। ताकि आपको थोड़े समय में अधिक जानकारी हो सके। कहते हैं किसी देश, जाति या समुदाय के उत्थान एवं पतन के भावी कर्णधार उसके नवयुवक होते हैं। अतः आज का नवयुवक कल का नागरिक बनेगा जिन्होंने अपने कन्धों पर अपने देश तथा समुदाय का बोझ सम्भालना है। यदि नवयुवकों में बल, बुद्धि, विवेक तथा साहस ही नहीं होगा तो उस देश व समुदाय का पतन अनिवार्य है। इसी प्रकार किसी जाति

या देश का अस्तित्व एवं उत्थान उसके पूर्व इतिहास त... ...द गरिमा की महानता पर अविलम्बित होता है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि अपनी पूर्व परम्परा संस्कृति एवं वंश आदि को भूल जाने के पश्चात् कोई भी जाति अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं बना सकती और यह बात अस्वीकार नहीं की जा सकती कि आज की संतानों को इस साहित्यिक ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है। आजकल स्कूल और कॉलेजों से पढ़कर निकलने वाले नवयुवकों को भारत वर्ष के इतिहास का भी पूर्ण ज्ञान नहीं मिलता। आप जानते हैं कि उनका इतिहास मुसलमानों के आक्रमण से प्रारम्भ होता है। भारत की प्राचीन सभ्यता जीवन और राज्य परिपाटियों से वे पूर्ण अनभिज्ञ हैं। आज का विद्यार्थी सिकन्दरे-आजम महमूद के बारह आक्रमणों की बात बता सकता है। शाहबुद्दीन गोरी का दिल्ली और कन्नौज जीतने का वृतांत तो जानता है पर इन्हीं देश में कौरवों व पांचालों की राजधानियां कहां थीं, ये नहीं जानता। वह जानता है कि शिवाजी के काल में दिल्ली का प्रबल बादशाह कौन था, परन्तु जब महात्मा बुद्ध अपने धर्म विस्तार में लगे हुए थे उस समय मगध की गद्दी पर कौन हिन्दू सम्राट हुकूमत करता था, इसका शायद ही उनको पता हो। वह नादिरशाह के द्वारा दिल्ली के तख्ते-ताऊस लूटे जाने की बात तो जानता है। पर ये नहीं जानता कि इस घटना के पूर्व शकों ने किस प्रकार विक्रमादित्य पर आक्रमण किया था और वह किस प्रकार राजपूताने के पर्वतों में छिपकर राजपूतों के रूप में प्रकट हुए थे। वे शायद ये तो बता सकें कि दिल्ली के राजमहलों को किसने बनवाया था ? परन्तु यह बताना उनके लिए कठिन है, कि सांची के सतूप, अजन्ता की गुफाएँ, ऐलोरा, भुवनेश्वर और जगन्नाथ के मन्दिर कब और क्यों बने थे व किसने बनवाये थे। क्या यह पश्चाताप का विषय नहीं है कि ऐसे प्राचीन देश व प्राचीन सभ्यता का प्राचीन इतिहास इस तरह नष्ट हो जाए कि उस जाति के मेधावी बच्चों को भी उसका कोई ज्ञान न रहे। इस प्रकार आज के युग में जाति की चहुंमुखी उन्नति तथा गौरव गरिमा बनाए रखने के लिए प्राचीन इतिहास का ज्ञान जरूरी है। इस लिए मैं आशा करता हूं कि इस पुस्तक की चर्चा समाज साहित्य प्रेमियों की गोष्ठी में, प्रौढ, युवक-युवतियों के कर कमलों में जन-जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। मेरा यह प्रयास कहां तक सफल हो पाएगा, इसका निर्णय पाठकगण ही करेंगे। यदि मैं इस प्रथम प्रयास में सफल और स्वस्थ हो सका और पाठकों ने अपनी रुचि का परिचय दिया तो शायद शीघ्र ही इसका संशोधित परिवर्धक द्वितीय संस्करण प्रकाशित कराने का प्रयत्न करूंगा। इसलिए मैं इस पुस्तक का प्रथम संस्करण आपको समर्पित करता हूं।

जय कश्यप

— मामन सिंह

लेखक परिचय



१२ अगस्त १९१९ को गांव बुटाना जिला सोनीपत (तत्कालीन जिला रोहतक) निवासी श्री कुन्दनलाल हस्तियाना (कश्यप) के घर जन्मे श्री मामन सिहं की बचपन से ही इतिहास की जानकारी प्राप्त करने में रुचि रही। प्रारम्भिक शिक्षा के दौरान ही इन्होंने देश और समाज की समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा शुरू की। इसी सोच को परवान चढ़ाते हुए श्री मामन सिहं जी स्कूल की पढ़ाई छोड़कर गांधी जी की रहनुमाई में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन में १९३६ में पूर्ण रूप से शामिल हो गये।अंग्रेज शासकों ने अन्य आंदोलनकारियों के साथ श्री मामन सिंह को भी मई १९४१ में जेल भेज दिया और वो डेढ साल की जेल यात्रा के बाद रिहा हो पाये। श्री मामन सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष तो किया ही साथ में निजाम हैदाराबाद के विरुद्ध लड़ाई में भी पूरी तरह हिस्सा लिया। अनेक आंदोलन कारियों की कुर्बानियों के बाद १५ अगस्त १९४७ को भारत अंग्रेज दासता से मुक्त हो गया। लेकिन श्री मामन सिंह जी का संघर्ष अपने समाज में व्याप्त राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक विषमता को दूर करने के लिये जारी रहा। आजादी से पहले के और बाद के संघर्ष में इनकी धर्मपत्नी श्रीमती भरतो देवी एवं इनके पुत्रों सर्व श्री ओमप्रकाश, दिलावर सिंह, महताब सिंह तथा महेन्द्र सिहं ने पूर्ण सहयोग दिया। कश्यप समाज को एकजुट कर रहे कार्यकर्त्ताओं की हर प्रकार से सेवा करना इनके परिवार के सभी सदस्य अपना कर्तव्य समझते रहे हैं।

पिछले १५ वर्षों से लेखक के साथ मेरा निरन्तर सम्पर्क रहा है। इन दिनों में इनकी कार्यक्षमता से मेरे जैसे अनेक कार्यकर्त्ता सीख लेते रहे हैं। इस उपभोक्तावादी संस्कृति की दौड़ में जब भी कोई साथी भटकाव का शिकार हुआ इन्होंने अपने अनुभवों से सही दिशा दी है। आजादी के आंदोलन के दौरान भी व बाद में भी गरीब, शोषित लोगों को एकजुट करने की इनकी विचारधारा भिन्न-भिन्न जातियों में बंटे कमेरे वर्ग को "एकता में बल है" दिखाने की रही है। इनका मानना है कि शोषण मुक्त समाज के लिये गरीब लोगों का संगठित, शिक्षित व संघर्षशील होना अति अनिवार्य है। इनकी कुर्बानियों को भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता सैनानी का सम्मान तथा कई संस्थाओं ने डा. अम्बेडकर शताब्दी समारोह के दौरान कई सम्मान

देकर याद किया है। इसी तरह कश्यप समाज के संगठन "हरियाणा कश्यप राजपूत सभा (रजि) " के प्रतिनिधियों ने इन्हें संगठन का संरक्षक निर्वाचित किया।

श्री मामन सिंह ने आज ७५ वर्ष की उम्र में और लगातार भयंकर बीमारी से पीड़ित रहते इस पुस्तक को लिखने में गहन अध्ययन व लेखन कार्य में जितना बौद्धिक श्रम किया है यह साधारण आदमी के वश का काम नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक पर किया गया श्रम कश्यप राजपूत समाज के जड़ हो रहे कार्यकर्त्ताओं,नौजवानों,महिलाओं की भावनाओं को कितना उभार पाता है इसी में लेखक की संतुष्टि सम्माहित है।

दिनांक ८ जून १९९४

कामरेड दरियाव सिंह कश्यप,महासचिव
हरियाणा खेत मजदूर यूनियन (रजि)
राज्य कार्यालय, भगत सिंह स्मारक, पानीपत